सबनि सादर शिरनाये ॥ हाटबाट मन्दिर सुरबासा । नगर सवाँरहु चारिउ पासा ॥ हरषि चले निज निज गृह आये । पुनि परिचारक बोलिपठाये ॥ रचहुबिचित्र बितान बनाई । शिरधरि बचन चले सचुपाई ॥

रघुराज० ॥ शतानन्द एकान्तहि जाई । बैठेउ सुमिरि सीय प्रभुताई ॥ जानत सीय प्रभाव मुनीशा । बन्दन कियो नाय पद शीशा ॥ स्वामिनि उपर कृपाकरु मोरे । निमिकुल लाज हाथ अब तोरे ॥ अनुभव महँ सिय कह्यो मुनीशै । सिद्धिसुयश संपति विसबीशै ॥ आठौ सिद्धि नवौनिधिकाहीं । दिये निदेश बोलि मनमाहीं ॥ पूरणकरहु धान्य धनजाई । कौनौ बस्तु न न्यून देखाई ॥ सिधि निधि ऋधि सिय शासनपाई । परिपूरण प्रगटी प्रभुताई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना । जो बितान बिधि कुशल सुजाना ॥ बिधिहि बन्दितिन कीन्ह अरम्भा । बिरचे कनक कदली खम्भा ॥ दोहा ॥ हरित मणिनके पत्र फल पद्मराग के फूल। रचनादेखि बिचित्र अति मन बिरंचिके भूल ॥

कृपानिवास० ॥रचेउ महल मण्डप बर शोभित । बिधि शारद गणपति मन लोभित ॥ कोर विचित्र झालरी झलकै । हेम सुमन बिच मुक्तामलकै ॥

श्रीतुलसी० ॥ बेणु हरित मणिमय सब कीन्हे । सरल सपर्ण परहिं नहिं चीन्हे ॥ कनक कलित अहि बेलि बनाई । लखि नहिंपरै सपर्ण सुहाई ॥ तेहिके रचिपचि बंध बनाये । बिच बिच मुकता दाम सुहाये ॥

कृपानिवास० ॥अपर सकल मंगल तरु रचिये । पुंग रसाल वेणु सरु सचिये ॥ यथा सुमध्य तथा मणि मंडित । पत्र पुष्पफल

तथा अखंडित ॥ कृता जलाश्रय मणिमय सलिलं । हंस बलाहक जलचर कमलं ॥ नील अरुण सित पीत सुफूला । हरित नाल दल मणिमय मूला ॥

श्रीतुलसी० ॥ माणिक मरकत कुलिश पिरोजा । चीर कोरि पचि रचे सरोजा ॥ किये भृङ्ग बहुरङ्ग बिहङ्गा । गुञ्जहिं कूजहिं पवन प्रसङ्गा ॥ सुर प्रतिमा खम्भन गढ़ि काढ़ीं । मङ्गल द्रव्य लिये सब ठाढ़ीं ॥ चौकेंभांति अनेक पुराये । सिन्दुर मणिमय सहज सुहाये ॥ दोहा ॥ सौरभपल्लव सुभग सुठि किये नीलमणि कोर । हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोर ॥ चौपाई ॥ रचे रुचिर बर बन्दनवारे । मनहुँ मनोभव फन्द सँवारे ॥ मंगल कलश अनेक बनाये । ध्वज पताक पट चमर सुहाये ॥ दीप मनोहर मणिमय नाना । जाइ न बरणि बिचित्र बिताना ॥

कृपानिवास० ॥ मणिमय चहुँ दिशि रचि फुलवारी । मध्य बेदिका सुभग सँवारी ॥ सिंहासन आसन जड़िताई । मणिमय रचित बिबिध चतुराई ॥ आयुत मान बखानन होई । त्रिभुवन उपमा लहत न कोई ॥

श्रीतुलसी० ॥ जेहि मण्डप दुलहिनि वैदेही । सो वरणै असमति कवि केही ॥ दूलह रामरूप गुण सागर । सो बितान तिहुँ लोक उजागर ॥

कृपानिवास० ॥ बिधिकृत रंचक यत्र न पैये । कहूं कहा पटतर जिहिं दैये ॥

श्रीतुलसी० ॥ जनक भवन की शोभा जैसी । गृह गृह

प्रतिपुर देखिय तैसी ॥ जेहिं तिरहुति तेहि समय नि-
हारी । तेहि लघुलगे भुवन दश चारी ॥

कृपानिवास० ॥ इन्द्र कुबेर आइ यकबारा । निज धन दे भरि जनक भँडारा ॥ दशरथ संग बरात अपारा । मति धन निघटत चढ़ै विकारा ॥ दोहा ॥ पुर पैठत बर धाम लखि राज रौस दरशाइ । करि प्रवेश अद्भुतबर्नी रचना देखि सिहाइ ॥ चौपाई ॥ देखत युग अपरातर आये । पुरुष चौक चौकी पर छाये ॥ कंचन पाट महामणि मंडित । नवग्रह द्युति येको पर खंडित ॥ धन पालक सुरपालक शोची । निज सम्पति चौकी तें पोची । कहें कौनत्वं श्वपचो हं प्रभु । कुत्रागता सु चौकी ते बिभु ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जो संपदा नीच गृह सोहा । सो त्रि-
लोकि सुरनायक मोहा ॥

कृपानिवास० ॥ फिरे लजाय स्वधामसिधाये । पुर संपतिदेखन नहिं पाये ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ बसै नगर जेहि लक्षिकरि कपट नारि
बरभेष । तेहि पुरकी शोभा कहत सकुचें शारद शेष ॥

संग्रह० ॥ राम लषण बिन भूपको मनमें कछु न सुहाय । कौशल्या कहैं सखिनसों सुत सनेह सरसाय ॥

श्रीतुलसी०पदरागसोरठ ॥ मेरेबालक कैसेधों मगनिबहहिं-
गे । भूख पियास शीत श्रम सकुचनि क्यों कौशिकहि
कहहिंगे ॥ को भोरही उबटि अन्हवैहै काढ़ि कलेऊ
देहै । को भूषन पहिराइ निछावरिकरि लोचनसुखलेहै॥
नयन निमेषनि ज्यों जोगवै नितपितु परिजन महतारी ।
ते पठये ऋषिसाथ निशाचर मारन मख रखवारी ॥ सुं-
दर सुठि सुकुमार सुकोमल काकपक्षधर दोऊ । तुलसी
निरखि हरषि उरलेहों विधि ह्वै है दिन सोऊ ॥ ऋषि

नृप शीश ठगौरीसी डारी। कुलगुरु सचिव निपुन नेवनि अवरेवन समझि सुधारी॥ सिरस सुमन सुकुमार कुवँर दोउ सूर सरोष सुरारी। पठये बिनहि सहाय पयादेहि केलिबाण धनुधारी॥ अति सनेह कातरि माता कहै लखि सखि बचनदुखारी। बादि बीर जननीजीवन जग क्षत्रि जाति गतिभारी॥ जो कहिहै फिरि रामलषन घरकरि मुनि मख रखवारी। सो तुलसी प्रिय मोहिं लागिहै ज्यों सुभाय सुतचारी॥

बिश्वनाथ०पद॥ जबते मुनि सँग गे सुत दोऊ। कहैं कौशल्या तब ते तिनकी कही खबरि इत आइ न कोऊ॥ निजकर कछू करन नहिं जानत बिन किंकर किमि निबहतह्वैहैं। बिश्वनाथ कब हाय नयन ये तकि कुवँर न आनँद जल च्वैहैं॥

संग्रह०चौपाई॥ चारण चारिउ मिथिलाकेरे। सो आये कोशलपुर नेरे॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ पहुंचे दूत रामपुर पावन। हरषेनगर विलोकि सुहावन॥

रघुराज०छं०चौबोला॥ युग योजनते लखे अवधपुर महल अनेक उतंगा। श्वेत शरदजलधर समान बर मनहुं हिमाचल शृङ्गा॥ करि प्रणाम धावन घोरनको अतिशय चपल धवाई। सरयू सलिल पिआयो बाजिन पहुंचि अवध अमैराई॥ लाग बाग चहुंओर नगरके द्वादश योजनमाहीं। लिखन चित्र लायक बिचित्र अति चितऊबन कहुं नाहीं॥ कनक कोट अतिमोट शैल सम गुरज सुरयसम सोहैं। परिखा पूरण सलिल बिशद अति देवहु दुर्गम जोहैं॥ त्रयत्रय योजनपर दरवाजे राजततुंगअपारा। कनक कँगूरे भ्राजत रूरे पूरे रतन कतारा॥ चढ़ी तोप रिपुसैन लोपकर ओप भारसी कीनी। सावधान ठाढ़े रक्षक सब तक्षक

तेजहिछीनी ॥ मंदिर बिबिध बने देवनके पुर बाहेर प्रतिबागे । सड़क स्वच्छ दोउ दिशन वृक्षयुग गच्छत घाम न लागे ॥ फबैं फूल फल सकल ऋतुनके शाखा भूपरलोरैं । वन बिचित्र नंदन हुंचित्ररथ निज महिमा मदमोरैं ॥ केकी कीर कपोत कोकिलन कलरव चहुंकित छाये । सीर समीर धीर अतिसुरभित बहत सदा मनभाये ॥ पहुंचि अवध उपबन बिदेहके धावन सरयु नहाये । दै चंदन करिकै रवि बंदन पहिरे बसन सुहाये ॥ करिकै कछु भोजन मन मोजन करि बाजिन श्रमदूरी । साज साजि पुनि चढ़े तुरंगन चले मोदभरिभूरी ॥ कनक दंड बहु रतन खचितकर लघु लघु लगे पताके । नाम लिख्यो तिनमहँ बिदेह कर सूचक धावन ताके ॥ राज महलकी डगर बतावो पूछत पथिकनकाहीं । निमिकुलनाथ निशान निहारत पथिक खड़े ह्वै जाहीं ॥ कुशल पूछते बहु बिदेहकी कहैं सहित उतसाहू । सूधी राजभवन कहं लागी चले पंथ यहि जाहू ॥ यहि बिधि पूंछत जनक चार तहँ गये नगर दरवाजे । जनक नरेश निशान निहारत द्वारपाल छबिछाजे ॥ किये न चारिहु चारन वारन कुशल उचारन करिकै । जानि जनक के जान दिये तिन बड़ेजान मुद भरिकै ॥ अवधनगर कीन्हे प्रवेश ते मिथिलापति के धावन । जात त्वरात चले यद्यपिते निरखत नगर सोहावन ॥ दोहा ॥ जा दिन दूत बिदेह के कीन्हे नगर प्रवेश । दशरथ कौशल्या लखे ता दिन सगुन अशेश ॥ छंदचौभाला ॥ आकसमात प्रसन्न भयो मन उर उमँग्यो उतसाहू । जानिपरत अस कहन चहत कोउ होत रामकर ब्याहू ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी । बाम अंग फरकत निरखैं निज मिटिगै मनहिं गलानी ॥ दक्षिण भृकुटि नैन भुज फरकत दशरथ के तेहि काला । तैसहि भरत शत्रुसूदनके सूचत सुख अब हाला ॥ नीलकंठ पक्षी गृह आयो लगीं बिमल दश आशा । बासर परम सोहावन लागत कोमल भानु प्रकाशा ॥ लाग्यो बहन मंद मारुत तहँ स्रवैं सुरभि

पय धारा। नभते भई कुसुम की बरषा बाजनलगे नगारा॥ खसें फूल देवन प्रतिमाते क्षेमकरी थहरानी। बोलि उठे बिहंग बहु रंगन तति कुरंग दरशानी॥ लखि शुभ सूचन सगुन कहहिं सब जुरि जुरि जनन समाजू। कौन अनूपम आनँद आवत अवध नगर महँ आजू॥ राम विरह व्याकुल कौशल्या बोलि सुमित्रहि कह्यऊ। जबते मुनि लैगे लालनको तबते सुधि नहिं लह्यऊ॥ लषणमातु बोली प्रबोधि तेहि आजु खबरि कछु ऐहै। सगुन होत सिगरे सुखदायक यह निरफल नहिं जैहै। बाकी रह्यो याम भरि बासर तब अजनन्दन भूपा। बैठेउ आय सभा सिंहासन भूषण बसन अनूपा॥ पुरजन परिजन सज्जन सिगरे बैठे राज दरबारे। सुहृद सखा सरदार सचिव सब जगति प्रतीहि जोहारे॥

संग्रह० ॥निरखतनगरपरमसुखछाये। ताहीसमयदूततहँआये॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई। दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई॥

रघुराज० छंद चौबोला॥ द्वारपाल धाये तुरन्त तहँ कहैं आय तिनपाहीं। भूप शिरोमणि तुमहिं बोलायो चलिय सभा सुख माहीं॥ ते बिदेह के धावन पावन पाये परम अनन्दा। निरखि अवधपुर राजभवन सब करत बिचार सुछन्दा॥ धौं अलकावति धौं अमरावति ब्रह्म सदन धौं आये। करिकै कृपा बैकुंठधनी यह सरिस बैकुंठ देखाये॥ धन्य अवधपुर धनि सरयू सरि धनि दशरथ महराजा॥ धन्य धन्य रघुकुल जगपावन जहँ प्रगटे रघुराजा॥ दोहा॥ अस बिचारिते चारि बर चार चतुर चित लाय। चढ़े चन्द्रशाला चटक चहुँकित चितवत जाय॥ छंद चौबोला॥ सभाद्वार पहुँचे जबधावन दशरथ सभा निहारे। सिंहासनासीन कोशलपति सुनासीर मदगारे॥ लोकपाल समभूमिपाल सब बैठे उभय कतारे। ढालन सों ढालन करि चालन करवालन

करधारे ॥ बैठे रघुबंशी रिपुध्वंसी जगत प्रशंसी प्यारे । कलँगी सों कलँगी बिलगी नहिं सान शूरताबारे ॥ अचल अचल इव मौन बैन भट प्रभु मुख रुखहि निहारैं ॥ इष्ट देव सम रघुकुल नायक अपने मनहिं बिचारैं ॥ छाजत छपा छपाकर शिरपर प्रगटत परम प्रकाशा । चारि चमर चालत परिचारक खड़े चारि हूं आशा ॥ आतपत्र दुहुँओर लसत युग रवि शशिबदन बनाये । राम पिता पद सेवन हित मनु दिनकर निशिकर आये ॥ बंदी बदत खड़े बिरदावलि नचत अप्सरा भावैं । गान करहिं गंधर्ब गर्ब भरि बाजन सबै बजावैं॥कनक छरी बहुरतन भरी करधरे खरे प्रतिहारा ।निरखत नयन नरेश बदन बर कारज करत इशारा ॥ बैठ बशिष्ठ कनक सिंहासन भूप दाहिने ओरा । मार्कंडेय आदि मुनिनायक राजत तेज अथोरा ॥ सन्मुख खड़े सुमन्त सचिव बर नृपशासन अभिलाखी । भृकुटि बिलास बिचारि काज सब करत राज रुखराखी ॥ यहि बिधि मिथिलाधिप के धावन पावन भूप निहारे । धर्म धुरन्धर अवध अधीशै धरा धरेंद्र बिचारे ॥ कनक मुद्र कछु रतन लिये कर यथा राजमरयादा । चारौ चतुर चार चलिसन्मुख भरे भूरि अह्लादा ॥ पुलकित तन करिकै प्रणाम सब दंड सरिस महि माहीं । दीन्हे नजरि निछावरि कीन्हे कोशल नायक काहीं ॥ जोरि पाणि पंकज पुनि बोले अतिशय मंजुलबानी । महाराज मिथिलाधिराज इतपठये हमहिंबिज्ञानी ॥ कह्यो रावरेको उराव भरि मिथिला राव जोहारा । बहुरि अनंदन बंदन भाष्यो भानुबंश भरतारा ॥ कह्यो कुशल पूछनको बहु बिधि अपनी कुशल जनावन । दीन्हो बहुरि बिचित्र पत्र यह रघुकुल मोद बढ़ावन ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ करि प्रणाम तिन्हपाती दीन्ही । मुदित महीप आप उठिलीन्ही ॥ बारि बिलोचन बांचत पाती । पुलकि गात आई भरि छाती ॥ राम

लखन उरकरबर चीठी । रहिगे कहत न खाटी मीठी ॥ पुनि धरि धीर पत्रिका बांची । हरषी सभा बात सुनि सांची ॥

रघुराज० ॥ खेलत रहे सरयु के तीरा । युगल बंधुलै बालक भीरा ॥ भरत शत्रुहन सखन पठावैं । प्रथम जे आवैं ते जित आवैं॥एक सखा तब पत्र जनायो । खबरि सहित पुरते लै आयो ॥

श्रीतुलसी० ॥ खेलत रहे तहां सुधि पाई । आये भरत सहित दोउ भाई ॥

रघुराज० ॥ करि बंदन अतिशय अतुराने । लपटत अक्षर बचन बखाने ॥

श्रीतुलसी० ॥ पूछत अति सनेह सकुचाई । तात कहां ते पाती आई ॥ दोहा ॥ कुशल प्राण प्रिय बन्धु दोउ अहहिं कहहु केहि देश । सुनि सनेह सानेबचन बांची बहुरि नरेश ॥ चौपाई ॥ सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता । अधिक सनेह समात न गाता ॥

रघुराज० ॥ पिता पाणिगहि बोले बाता । तात चलब हठ हमहुँ बराता ॥ जनक जनकपुर कब पगधरिहौ । राम लषणलखि कब सुखभरिहौ ॥ नृप हँसिकह चलिहौ तुम लाला । तीन बंधु तुमहीं सहिबाला ॥ कह बशिष्ठ उतगये जनैहैं । सहिबाला धौं दूलहह्वैहैं ॥

श्रीतुलसी० ॥ प्रीति पुनीत भरत की देखी । सकल सभा सुख लहेउ बिशेखी ॥ तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर बचन उचारे ॥ भैया कहहु कुशल दोउ बारे । तुम नीके निज नयन निहारे ॥ श्यामल गौर धरे धनु भाथा । बय किशोर कौशिक मुनि साथा ॥ पहिचानहुं तुम कहहु सुभाऊ । प्रेम बिबश पुनि पुनि कह

राऊ ॥ जा दिन तें मुनि गयेलिवाई । तबते आजुसांचि सुधि पाई ॥ कहहु बिदेह कवन बिधि जाने । सुनिप्रिय वचन दूत मुसुकाने ॥ दोहा ॥ सुनहु महीपति मुकुट मणि तुम समधन्य न कोउ । राम लषण जिनके तनय विश्व विभूषण दोउ ॥ चौपाई ॥ पूछन योग न तनय तुम्हारे । पुरुषसिंह तिहुँ पुर उजियारे ॥ जिनके यश प्रताप के आगे । शशि मलीन रवि शीतल लागे ॥ तिन कहँ कहिय नाथ किमि चीन्हे । देखिय रविहि कि दीपक लीन्हे ॥ सीय स्वयंवर भूप अनेका । सिमिटे सुभट एक ते एका ॥ शम्भु शरासन काहु न टारा । हारे सकल भूप बरियारा ॥ तीन लोक में जे भट मानी । सबकी शक्ति शम्भु धनु भानी । सके उठाय शरासन मेरू । सोउ हिय हारि गयउ करि फेरू ॥ जेहि कौतुक शिव शैलउठावा । सोउ तेहि सभा पराभव पावा ॥ दोहा ॥ तहां राम रघुबंशमणि सुनहु महा महिपाल । भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल ॥

रघुराज० कवित्त ॥ महाराज सुनहु महीपमणि रावरेके डावरेमें जौन एक सावँरो कुमार है । तोरयो शंभुधनुष सरोष रंगभूमि मध्य मोरयो महिपालन को मद बेशुमारहै ॥ रघुराज सकल समाज के निहारतही मिथिलाधिराजै कियो प्रणते उबारहै । पूषन प्रताप तीनौ भुवन प्रकाश कीन्ह्यो कैसे करैं एकमुख सुयश अपारहै १ मारे ताड़काको जाको देवहू डेरातेहुते गयो पंथहीमें परि तासु भरभेंटाहै । राखिक्रतु कौशिककी साखि जग मारे दुष्ट लावनको करि जैसे बाज भरपेटाहै ॥ रघुराज राजमणि तारी नारि गौतमकी रंगभूमि भूपन खलन खरखेटाहै । दीपकलै पाणिमें पतंगको परेखै कौन बिश्वमें बिदित आपही के

बरबेटाहै २ ॥ दोहा ॥ धन्य धन्य तुम अवधपति को नृप आप समान । जिनके पूत सपूत दोउ राम लषण बलवान ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सुनि सरोष भृगुनायक आये । बहुती भांतिन आंखि दिखाये ॥ देखि रामबल निज धनु दीन्हा । करि बहु बिनय गवन बनकीन्हा ॥ राजनराम अतुल बल जैसे । तेज निधान लषण पुनि तैसे ॥ कंपहिं भूप बिलोकत जाके । जिमि करि हरि किशोरके ताके ॥ देव देखि तव बालक दोऊ । अवनि आंखितर आव न कोऊ ॥

रघुराज० ॥ चलहु नाथ अब सहित बराता । देखहु पूतसपूत बिख्याता॥मंत्री बंधु सुभट सरदारा । चलैं संग सब सैन अपारा ॥

श्रीतुलसी० ॥ दूत बचन रचना प्रिय लागी । प्रेम प्रताप बीर रस पागी ॥

रघुराज० ॥ सुनि दूतनके बचन नरेशा । कहे बचन करि प्रेम बिशेशा ॥ मोहिं बिदेह नरेश बुलायउ । सो सुनि अति आनँद उर आयउ ॥ हैं बिदेहके सकल कुमारा । उनहीं को सब बिभव हमारा ॥ नहिं कौशल मिथिलाकर भेदू । जस बिदेह बरणत बिधि वेदू ॥ आज करो इत रैनि निवासा । मैं चलिहौं रविहोत प्रकासा ॥ पुनि अवधेश सुमंत हँकारे । हरैं कान महँ बचन उचारे ॥ दोहा ॥ लाख लाख के आभरण बसन तुरंग मँगाय । चारिहु दूतन देहु द्रुत पठवहु नाग चढ़ाय ॥ चौपाई ॥ सुनिसुमंत शासन नृपकेरा । ल्याय बिभूषण बसन घनेरा ॥

श्रीतुलसी० ॥ सभा समेत राउ अनुरागे । दूतन देन निछावरि लागे ॥

रघुराज० ॥ धरे चारिहू चारण आगे । कहे भूपमणि अति अनुरागे ॥ दूत देत सकुचत मनमोरा । जो कछु देहुं लगै सब

थोरा ॥ तुम पुत्रनकी खबरि जनाई । हमजनु गये फेरि सुत पाई ॥ आज भयो अस मोद अपारा । बहुरि जन्म जनु लहे कुमारा ॥ उऋण जन्मभरि हैं हम नाहीं । और कहा कहिये तुम पाहीं ॥ पान फूल सम यह कछु जोई । लीजे दूत सनेह समोई ॥ देखि दूत पटभूषण भूरी । बाणी कही धर्मरसपूरी ॥ महाराज अब माफ करीजे । यही इनाम हमहिं अब दीजे ॥ धर्म धुरंधर ध्रुव अवधेशा । हमरे शिरपर आप निदेशा ॥ रंगभूमिमहँ जबते नाथा । तोरयो शंभु धनुष रघुनाथा ॥ तबते गई बिवाहि कुमारी । यह लीन्ह्यो हम सत्य बिचारी ॥ दोहा ॥ जस हमार मिथिलेश प्रभु तैसहि प्रभु अवधेश। पै कन्याधन लेतमहँ हमको परत भदेश ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ कहि अनीति तेइ मूंदेउ काना । धर्म बिचारि सबहिं सुख माना ॥

रघुराज० ॥ फेरि सुमंतहि बचन सुनाये । का बाकी जो हम नहिं पाये ॥ समधी राउ राम जामाता । लहे लाभ अस को न अघाता ॥ जबते लखे लषण अरु रामा । तबते लगत न कोउ अभिरामा ॥ पुनि देखे कौशलपति आई । सचिवगये सब भांति अघाई ॥ अब पूरहु इतनी अभिलाषन । सम समधी निरखहिं यक आसन॥मिथिलानगर उछाह अघाता । कब देखहिं अवधेश बराता ॥ सुनि भुवालमणि दूतनबानी । आनँद बिवश भरे दृगपानी ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ तब उठि भूप बशिष्ठ कहँ दीन्ह पत्रिका जाय। कथा सुनाई गुरुहि सब सादर दूत बुलाय॥

रघुराज०चौपाई ॥ लै खत पुलकि मुनीशहु बांचे । लहि सुख सिंधु रामरति राचे ॥

संग्रह० ॥ लखि प्रसन्न गुरु भूप बिज्ञानी । बोलेउ बचन जोरि दोउ पानी ॥

रघुराज० ॥ यह सब नाथ तुम्हारी दाया । रंगभूमि रघुपति यशपाया॥ असकहि गुरुपद पंकजबंदी। बैठेउ सिंहासनहिं अनंदी॥

श्रीतुलसी० ॥ सुनि बोले मुनि अति सुखपाई । पुण्य पुरुष कहँ महि सुख छाई ॥ जिमि सरिता सागर महँ जाहीं । यद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥ तिमि सुख सम्पति बिनहिं बुलाये। धर्म्म शील पहँ जाहिं सुभाये ॥ तुम गुरु बिप्र धेनु सुर सेवी । तस पुनीत कौशल्या देवी ॥ सुकृती तुम समान जगमाहीं । भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं ॥ तुम ते अधिक पुण्य बड़ काके । राजन राम सरिस सुत जाके ॥ बीर बिनीत धर्म्म ब्रत धारी । गुण सागर बालक बर चारी ॥ तुम कहँ सर्ब्ब कालकल्याना॥ सजहु बरात बजाय निशाना ॥

रघुराज० ॥ कालिह सुदिन सुंदर शुभ योगा । सजन बरातहि देहु नियोगा ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ चलेउ बेगि सुनि गुरु बचन भलेहि नाथ शिरनाइ । भूपति गवने भवन तब दूतन बास दिवाइ ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ समाधानकरि दूत बसाये। राय राम जननी गृह आये ॥ अंतहपुर उमग्यो सरभारी। चलीं कोटि सरिता जनुनारी ॥

रघुराज० ॥ ह्वै आसन आसीन भुवाला । राम मातु कहँ बोलि उताला ॥

श्रीतुलसी० ॥ राजा सब रनिवास बुलाई । जनक पत्रिका बांचि सुनाई ॥ सुनि संदेश सकल हरषानी । अपर कथासब भूप बखानी ॥ प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी । म-

नहुँ शिखिन सुनि बारिद बानी ॥ मुदित अशीश देहिं गुरुनारी। अति आनन्द मगन महतारी ॥ लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती। हृदयलगाइ जुड़ावहिं छाती ॥ राम लषणकी कीरति करणी। बारहिंबार भूपबरबरणी ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ पुर बनिता मुनि प्रमदा दौरीं। राम पत्रिका सुनिभईं बौरीं ॥ युवती गण नृप घेरे आई। राय पत्रिका बांचिसुनाई ॥ सुनत सकल प्रमदा गण भूमें। बीणबजत मृगनी जनु घूमें ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंद त्रैलोक्यमंगलग्यारहवांप्रकरणसमाप्तः ११ ॥

श्रीसीतारामचन्द्रायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसियाराम विवाह उत्सव निरूपण संग्रह करिके ॥

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

नामकग्रन्थ बारहवांप्रकरण ॥

श्री दशरथ महाराजका दूतनसों जनकपुरके धनुषभंग वृत्तांत सुनिकर विवाहके विविध मंगल उत्साह अवधमें कर बरात सजके गमनकरना ॥

रघुराजसिंह कृत चौपाई ॥ सुनि तियलागीं मंगल गावन । एक एकसों कछु न बतावन ॥ भरयो भुवन सुख जब न समाना । उमड़ि चल्यो जनुमिसिकरिगाना ॥

संग्रह० ॥ रानिनयुत दशरथ महराजा । परम अनंदित सकल समाजा ॥

श्रीतुलसी॰चौपाई ॥ मुनि प्रसाद कहिद्वारसिधाये । रानिन्ह तब महिदेव बुलाये ॥ दिये दान आनंद समेता । चले विप्रबर आशिष देता ॥ सोरठा ॥ याचक लिये हँकारि दीन्ह निछावरि कोटि बिधि । चिरजीवहु सुत चारि चक्रवर्ति दशरत्थके ॥ चौपाई ॥ कहतचले पहिरेपटनाना । हर्षि हने गहगहे निशाना ॥

रघुराज० ॥ राम मातु उत तुरत सिधाई । रंगनाथके मंदिर

भाई ॥ करि पूजन बहुबिधि सनमानी । पुरवहु सब सुख शा-
रँगपानी ॥ दोहा ॥ उतै सुमित्रा केकयी प्रेम मगन मनमाहिं ।
ब्याह साज साजनलगीं बोल्यउ कुलगुरु काहिं ॥

संग्रह० चौपाई ॥ आये मुनि अंतःपुर माहीं । रानिन किय प्रणाम तिन काहीं ॥

रघुराज० ॥ रंगनाथको पूजन करिकै । कौशल्या आई मुदभरिकै ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा । गुरुसों बोलिबचन बिचित्रा ॥ हमहिं भयो सुख कृपा तुम्हारे । हिय न होति परतीत हमारे ॥ द्वादश वर्ष बैस ममबारे । कौन भांति ताड़ुका सँहारे ॥ केहि बिधि भे मुनि मख रखवारे । डरे न रजनीचरन निहारे ॥ कमलहु ते कोमल कर जाके । हर धनुभंग सजत किमि ताके ॥ लालकरी मुनि बड़ी ढिठाई । भय बिन राज समाज मझाई ॥ तब बोले मन बिहँसि मुनीशा । कृपा सकल जानहु जगदीशा ॥ रघुकुलके बांकुरे कुमारे । कालहुके रण जीतनहारे ॥ रानी कछु न करहु संदेहू । अब बिवाह कारज मनदेहू ॥ दोहा ॥ कहीकौशला केकयी गुरुजस देहु बताय । ब्याह चार तस वेदबिधि करैं बिशेषबनाय ॥ चौपाई ॥ तब गुरु कह्यो सुनहु महरानी । कुलदेवन पूजहु सुख-दानी ॥ इतै गीत मंगलकरचारा । होई सहित बिधानअपारा ॥ ब्याह चार औरौ सब जेते । मिथिलामहँ ह्वैहैं अब तेते ॥ तब दशरथ गुरु निकट सिधारे । बंदि चरण अस बचन उचारे ॥ नाथ सभामहँ सचिव बोलाई । देहु त्वराय रजाय सुनाई ॥ काल्हि पयान जनकपुरहोई । सजै बरात चलै सबकोई ॥ सुनि नृपशासन ब्रह्मकुमारा । गये राजकारज आगारा ॥ बोलेउ स-चिव सुमन्त प्रधाना । आये मन्त्रीगण मतिमाना ॥ दिये सुनाय नरेश निदेशा । काल्हि कूचहै तिरहुतदेशा ॥ राम बिवाह बरात सोहावन । साजहुसकल साज छबिछावन ॥ मंत्री सुभट बंधु सरदारा । रघुकुलके सबराजकुमारा ॥ साज साजि मातंग तुरंगा । शकट पालकी तखत सतंगा ॥ दोहा ॥ साज साजिआवैं सबै

सजे बिख्यात बरात। गोधूली बेला बिमल चलिहैं नृपअवदात॥ अस निदेश नरनाथको सचिवन सकल सुनाय। भरि हुलास निज बासको गवनकियो मुनिराय॥

श्रीतुलसी० चौपाई॥ समाचार सब लोगन पाये। लागे घर घर होन बधाये॥ भुवन चारिदश भरेउ उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिवाहू॥ सुनि शुभकथा लोगअनुरागे। मग गृह गली सँवारन लागे॥ यद्यपि अवध सदैव सुहावनि। रामपुरी मंगलमय पावनि॥

कृपानिवास०॥ अवध सदा मंगलमय सुंदर। तदपि करैं सुख में सुख रसबर॥

श्रीतुलसी० चौ०॥ तदपि प्रीतिकी रीति सुहाई। मंगल रचना रची बनाई॥

कृपानि०॥ रचे वितान सुजान सुहाये। मणि मुक्तामय साज सजाये॥

श्रीतुलसी०चौ०॥ ध्वज पताक पट चामर चारू। छावा परम बिचित्र बजारू॥

कृपानि०॥ कलश पताके ध्वजा धाम शिर। मेरु शिखर रवि शशि कोटिन थिर॥ बहुरंगी मणि बंदनवारे। रसहित मदन फँदन बिस्तारे॥

श्रीतुलसी०चौ०॥ कनक कलश तोरण मणिजाला। हरद दूब दधि अक्षत माला॥

कृपानि०॥ गज मणि चौक नगर में घर घर। धूप सुदीप सुगंध सकल पुर॥ दोहा॥ मंगल द्रुम फल पुष्परचि लता बाटिका बाग। मणिमय पक्षी भ्रमर मृग सुभग भरे अनुराग॥

श्रीतुलसी०दोहा॥ मंगलमय निज निज भवन लोगन रचे बनाइ। बीथी सींची चतुर सब चौके चारु पुराइ॥

कृपानि० ॥ अवधपुरी शोभा निरखि मुनिजन मन आवेश । श्रुति गणेश महेश गिरा शेष न पावत लेश ॥ चौपाई ॥ चहुँदिश मंगलपुरी बिराजैं । त्रिभुवन धाम अत्रछवि छाजैं ॥

श्रीतुलसी० ॥ जहँ तहँ यूथ यूथ मिलि भामिनि । सजि नवसप्त सकल द्युति दामिनि ॥ बिधुबदनी मृगशावक लोचनि । निज स्वरूप रतिमान बिमोचनि ॥ गावहिं मंगल मंजुलबानी । सुनि कल रव कलकंठ लजानी ॥ भूप भवन किमि जाय बखाना । बिश्व बिमोहन रच्यो बिताना ॥ मंगल द्रव्य मनोहर नाना । राजत बाजत बिपुल निशाना ॥ कतहुँ बिरद बन्दी उच्चरहीं । कतहुँ वेदधुनि भूसुर करहीं ॥ गावहिं सुन्दरि मंगल गीता । लै लै नाम राम अरु सीता ॥ बहुत उछाह भवन अति थोरा । मानहुँ उमँगि चला चहुँओरा ॥ दोहा ॥ शोभा दशरथ भवनकी को कबि बरणै पार । जहां सकलसुर शीशमणि राम लीन्ह अवतार ॥

रघुराज०चौबोलाछंद ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी । पूजनलागीं रंगनाथको ईश गणेश भवानी ॥ इष्टदेव कुल देव देव बन ग्रामदेव कहँ पूजैं । कुशल लखहिं दुलहिन दूलह कहँ मन अभिलाषा पूजैं ॥ कारज करहिं नारि सब निज निज गावहिं मंगलगीता । राम जानकी व्याह गानसुर दशदिशि करहिं पुनीता ॥ व्यंजन बिबिधप्रकारनके रचि जाको जैसो योगू । ते देवनकहँ देहिं तौन बिधि पढ़ि पढ़ि मंत्रन भोगू ॥ फूली फिरत रामकीमाता नहिं सुख उरहि समाता । द्वार द्वार देवनको बिनवति कहि कहि मंजुल बाता ॥ गुरुजनको अभिबंदनकरती सहज सुभाय सयानी । दृगभरि देखब दुलहिन दूलह तुम्हरी पुण्य महानी ॥ महल महल मन्दिरह्यो अवधपुर चहल पहल

तेहि रजनी। कोउ गावैं कोउ आवैं जावैं धामै धामै सजनी॥ धूमधाम पुर धाम धाममहँ काल्हि बरातपयाना। आपु सजहिं औरेनकहँ साजहिं पट भूषण बिधिनाना॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ सकल उमाहैं रैनि बिहावे। चक चकई लों भोर मनावे॥ अमित चाह चातकलों चाहैं। राम रसिक रस स्वाति उमाहैं॥

रघुराज०चौबोलाछंद ॥ दीपावली देव आलय महँ भौनबजारन माहीं। करत बरात तयारी भारी नींद नैन महँ नाहीं॥ करहिं बिनय पुरजन देवनसों सपदिहोइ भिनसारा। चलै बरात राम ब्याहन हित आशु बजाय नगारा॥ परी खभंरी ताहि शर्वरी करैं हर्बरी लोगू। कहै हर्षरी मेटि कर्बरी कब प्रभु करी संयोगू॥ राम बिवाह प्रमोद पौरजन देहिं द्विजातिन दाना। करहिं जनकपुर जान तयारी नारि करहिं कलगाना॥ बाजिरहे घरघर बहु बाजन धरे कलश प्रतिद्वारा। नौबतझरत राजमंदिर महँ नादहिं निकर नगारा॥ आये जे बिदेहके धावन पृथक पृथक तिन काहीं। सनमानी रानी मुदमानी लिये कछुक तिन नाहीं॥ पृथक पृथक पुनि अवधप्रजा सब दूतनको सतकारैं। लेत कोहू की कछुक बस्तु नहिं अपनो धर्म बिचारैं॥ बढ़ी उमंग अयोध्याबासिन क्षण क्षण शंभु मनावैं। सो दिन बेगि देखाउ कृपाकरि लखैं लषण अरु रामैं॥ भरत शत्रुसूदन अतिहरषित नैन नींद बिसराई। मुदित कराहिं मातनसों बातन कब देखब दोउभाई॥ यहि बिधि देवी देवनपूजत करत बरात तयारी। निरमाणत भूषण पट बहुबिधि सनमानत त्रिपुरारी॥ राम बिवाह उछाहहि आनत ठानत गवन उमंगा। बचन परसपर बिबिध बखानत सानत चित रतिरंगा॥ अपने कहँ जानत जिय धनि धनि भानत दुख संसारा। दानदेत बिप्रन प्रियमानत छानत सार असारा॥ बिबिध बरातिनको पहिचानत सनमानत परिवारा। नहिं आनत नींदहिं निज नैनन होतभयो भिनसारा॥ दोहा॥

ब्रह्म मुहूरत जानिकै उठेउ सो कोशलपाल । प्रातकृत्य निरबा-हिकै करि मज्जन ततकाल ॥ अर्घ प्रदानादिक कियो रंगनाथपद बंदि । पहिरि बिभूषण बसन बर बैठेउ सभा अनंदि ॥ चौबोलाछंद॥ मंत्रिन प्रजा महाजन सुभटन सरदारन कुल वारे । पौरजान पद सभ्य सुजानन कोशलपाल हँकारे ॥ आये सकल सभामंदिर महँ दशरथ राज जोहारे । सहित समाजन यथा योग तिन प्रतीहार बैठारे ॥ तबसुमन्तको पठै तुरन्ताहि गुरु बशिष्ठबोलवाये । राम काजको काज जानि तहँ मुनिबर हरबर आये ॥ पद अरबिंदन बंदन करिकै कनकासन बैठाये । आज जनकपुर चलन चाय चित चारु निदेश सुनाये ॥ चलहिं धनिक सब अवधनगर के अर्ब खर्ब धनलीने । खाली रतन बिभूषण संयुत बड़ लघुनवल नगीने ॥ साजि साजि सबसाजु समाजन चलहिं अवधपुरबासी। औरहु जाति ज्ञाति सनबंधी लेहु बोलि छबिरासी ॥ रघुकुल के सब राजकुमारन सुकुमारन बोलवाई । लेहु बरात संगकरि सादर नेवतो भवन पठाई ॥ देवलोकते गंधर्वनको अरु अपसरन बोलाई । मही मंगला मुखिन सुखिनको दीजे प्रथम चलाई ॥

इतिश्रीरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलबारहवांप्रकरणसमाप्तः १२ ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

तेरहवांप्रकरण ॥

श्री दशरथ महाराजका आज्ञादेना बरात सजानेकी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भूप भरत पुनि लिये बुलाई । हय गय स्यन्दन साजहु जाई ॥ चलहु बेगि रघुबीर बराता । सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता ॥ भरत सकल साहनी बुलाये । आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये ॥

संग्रह० ॥ अवध नरेन्द्र उठन तब चाये । चारण चारि सभा महँ आये ॥

रघुराज०छं०चौबोला ॥ कौशलपाल कमल पद बंदे कहे कमल करजोरी । गवनबिलंब अबनृप राउरि आलसजनी न थोरी ॥ दूतनसों पुनि कह्यो अवधपति गोधूली शुभबेला । चली बरात जाय सरयूतट रहिहै अबनहिं भेला ॥ जाहु दूत दीजे बिदेहको आशुहि खबरि जनाई । चौथे दिवस दरशकरिहैं हम मिथिलापुर महँ आई ॥ सुनिकै दूत अकूत मोदलहि चले तुरत तिरहूता । गायदान मंदिर दशरथ इत बोलिउ बिप्रनपूता ॥ हय गज भूमि कनक पट भूषण धेनु धाम धन बेसा । किये दरिद्र हीन जग याचक राम लषण उद्देसा ॥ फेरि गीत मंगल करवाये संयुत वेद बिधाना । कौशल्या केकयी सुमित्रा नृपरानीतहँ नाना॥

रंगनाथको पूजनकरिकै गौरि गणेशहु पूजी। करिकै सकल शिंगार सहचरी रति रंभा जनु दूजी॥ वृन्द वृन्द युवती तहँ गावत मंगल गीत सुरीली। चलीं मृत्तिका लेन सरयुतट आनँद रली रँगीली॥ बन्यो कनकको महामनोहर मंडप रतन जड़ीलो। मनो मदनको सदन अनूपम सुर मुनि चित्त गड़ीलो॥ लै बिधियुत सरयूतटते मृदु गावत मंगल गीता। लैआईं मंडपहि मृत्तिका परिचारिका पुनीता॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा किये ब्याह को चारा। इष्टदेव कुलदेव पूजि सब आनँद भयो अपारा॥

श्रीतुलसी० चौपाई॥ रुचि रुचि जीन तुरँगतिन साजे। वर्ण वर्ण बर बाजि बिराजे॥ सुभग सकल सुठि चंचल करणी। अय जिमि जरत धरतपग धरणी॥ नाना जाति न जाहिं बखाने। निदरि पवन जनु चहतउड़ाने॥ तिन सब छैल भये असवारा। भरत सरिस सब राजकुमारा॥ सबसुंदर सब भूषणधारी। कर शर चापतूण कटि भारी॥ दोहा॥ छरेछबीले छैल सब शूर सुजान नवीन। युग पदचर असवारप्रति जेअसिकला प्रवीन॥ चौपाई॥ बांधे बिरद बीररणगाढ़े। निकसि भये पुरबाहर ठाढ़े॥ फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना। हरषहिं ध्वनि सुनि पणव निशाना॥ रथ सारथिन बिचित्रबनाये। ध्वज पताक मणि भूषण छाये॥ चँवर चारु किंकिणि ध्वनि करहीं। भानु यान शोभा अपहरहीं॥ श्यामकर्ण अगणित हय होते। ते तिन रथन सारथिन जोते॥ सुंदर सकल अलंकृतसोहैं। जिनहिं बिलोकत मुनिमनमोहैं॥ जेजलचलहिं थलहिंकी नाईं। टाप न बूड़ बेगअधिकाईं॥ अस्त्र शस्त्र सबसाज सजाई। रथी सारथिन लियेबुलाई॥

दोहा ॥ चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर लागी जुरन बरात । होत शकुन सुंदर सबहिं जो जेहि कारजजात ॥ चौपई ॥ कलित करिवरन परी अंबारी । कहि न जात जेहि भांति संवारी ॥ चले मत्तगज घंट बिराजे । मनहुं सुभग सावन घनगाजे ॥

कृपानिवास० ॥ चढ़े नरेश सुरेश लजावैं । ऐरावतछबिलेश नपावैं ॥

श्रीतुलसी० ॥ बाहन अपर अनेकबिधाना । शिविका सुभग सुखासनयाना ॥ तिनचढ़िचले बिप्रबर वृंदा । जनु तनु धरे सकल श्रुति छंदा ॥ मागध सूतबन्दिगुण गायक । चले यान चढ़ि जो जेहि लायक ॥ बेसर ऊंट वृषभ बहुजाती । चले बस्तुभरि अगणितभांती ॥ कोटिन कांवर चले कहारा । बिबिध बस्तुको बरणैपारा ॥ चले सकल सेवक समुदाई । निज निज साजसमाज बनाई ॥ दोहा ॥ सबके उरनिरभरहरष पूरित पुलकशरीर । कब चलिये कब देखिये रामलषण दोउ बीर ॥ चौपाई ॥ गरजहिं गजघंटा ध्वनि घोरा । रथरव बाजिहींस चहुं ओरा ॥ निदरि घनहिं घूमरहिं निशाना । निज पराव कछु सुनहिं न काना ॥ महाभीर भूपति के द्वारे । रज होइ जात पषाण पवांरे ॥

रघुराज० दोहा ॥ सैर भैर माच्यो अवध सुंदर सजी बरात । गोधूली बेला सुभग आई अति अवदात ॥ छं० चौबोला ॥ लै गुरु सकल पुरोहित जनको भूपति सदनसिधारे । सुमिरि गौरिगिरिपति गणपति हरि सुंदर बचन उचारे ॥ महाराज सुदिवसआयो अब करहु बिजय मिथिलाको । दधि दूर्बा तंदुल घृत धारनदरश

परशकरि याको ॥ सुनि बशिष्ठके बचन भूपमणि गुरुपद बंदन कीन्ह्यो । सकल पुरोहित औरेन बिप्रन हेमदान बहु दीन्ह्यो ॥ दधि दुर्वा तंदुल कर परस्यो रंगनाथ कहं ध्यायउ । लखिहौंराम चारिदिनबीते असगुनि सुख न समायउ ॥ उठे चक्रवरती आसनते मंद मंद पगुधारे । पढ़त स्वस्त्ययन बिप्रमंडली स्वरयुत बेद उचारे ॥ कनक कलश धरि शशि सहस्रनआगे सधवानारी । करहिं मंगलामुखी गानबहु मंगल सुरन सवाँरी ॥ रतिरंभा मैनका उर्बशी सरिस चलीं नृपआगे । जय जय शोर चारिहूंओर न करहिं पौर अनुरागे ॥ गुरु बाशिष्ठआगू पगुधारे पाछे कोशल भूपा । सोहत मनहुं देवगुरु संयुत देव अधीश अनूपा ॥ यहि बिधि चारु चक्रवरती नृप चारु चौक पगुधारा । भरत शत्रुहन सजे खडे तहँ सुंदरयुगल कुमारा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ चढ़ी अटारिन देखहिं नारी । लये आरती मंगल थारी ॥ गावहिं गीत मनोहर नाना । अति आनँद नहिंजाइ बखाना ॥

कृपानिवास०दोहा ॥ मुक्ता मंगल बरषि शुभ करहिं आरती नारि । साकेते सानंद लखि सुरमुनि सदन बिसारि ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ तब सुमन्त दुइ स्यन्दन साजी । जोते हय रवि निंदकबाजी ॥ दोउरथ रुचिर भूप पहँ आने । नहिं शारद प्रतिजायँ बखाने ॥ राज समाज एक रथ साजा । दूसर तेज पुञ्ज अति भ्राजा ॥ दोहा ॥ तेहिरथ रुचिर बशिष्ठ कहँ हरषि चढ़ाइ नरेश । आपुचढ़े स्यंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गणेश ॥ चौपाई ॥ सहित बशिष्ठ सोह नृप कैसे । सुरगुरु संगपुरंदर जैसे ॥ करि कुल रीति बेद बिधि राऊ । देखि सबहिं सब भांति बनाऊ ॥ सुमिरि राम गुरु आयसुपाई । चले महीपति

शंख बजाई ॥ हरषे बिबुध बिलोकि बराता। बरषहिं सुमन सुमंगल दाता ॥

रघुराज०चौबोलाछं० ॥ भरत शत्रुसूदन सुमंतको कह्यो बोलाय नरेशा। सैन चलावहु जौन भांति हम प्रथमहिं दियो निदेशा ॥ करि अभिबंदन दिगस्यन्दन पद तीनहुंगये तुरंता। रिपुहन हय गन भरतनागगन रथगन रहे सुमंता ॥ चली बरात अवधपुरते तब करि दुंदुभी धुकारे। नौबत झरत चली नागनमहँ बरकरनाल अपारे ॥ सकल अवधपुर नारि मनोहर गावहिं मंगलगीता। दूलह दशरथ लाल राम दुलहिन बैदेही सीता ॥ छैल छबीले राजकुवँर सब शत्रुशालकेसंगा। क्षण क्षण क्षिति महं नचनचला-वहिं चंचल चारु तुरंगा ॥ मुकुट कनक कुंडलहिय हारनपीत पोशाक सवाँरे। पटुका पाग छोर छहरे क्षितिझरै मुकुत जनु तारे ॥ कहूं धवावैं कहूं कुदावैं बाजिन राजकुमारा। झमकावैं असि कला देखावैं रिपुहनपाय इशारा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भयेउ कोलाहल हय गज गाजे। व्योम बरात बाजने बाजे ॥ सुर नर नारि सुमंगलगाई। सरस राग बाजहिं सहनाई ॥ घंट घंट ध्वनि बरणि न जाहीं। सरों करें पायक फहराहीं ॥ कराहिं बिदूषक कौतुकनाना। हास कुशल कल गान सुजाना ॥ दोहा ॥ तुरँग नचावहिं कुँवरबर अँकनि मृदंगनिशान। नागरनट चितवहिं च-कित डगहिं न ताल बिधान ॥ चौपाई ॥ बनै न बरणतबनी बराता। होइँ सगुन सुंदर शुभदाता ॥ चाराचाख बाम दिशि लेहीं। मनहुँसकल मंगल कहिदेहीं ॥ दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुल दरश सबकाहूं पावा ॥ सानुकूल बह त्रिबिध बयारी। सघट सबाल आव बरनारी ॥ लोवा फिरि फिरि दरश दिखावा। सुरभी सन्मुख शि-

शुहिं पियावा ॥ मृगमाला फिरि दाहिन आई । मंगल गण जनु दीन्ह दिखाई ॥ क्षेमकरी कहँ क्षेम बिशेखी । श्यामा बाम सुतरुपर देखी ॥ सन्मुख आयउदधि अरु मीना । कर पुस्तक दुइबिप्र प्रवीना ॥ दोहा ॥ मंगल मय कल्याणमय अभिमत फल दातार । जनुसब सांचे होन हित भये सगुन इकबार ॥ चौपाई ॥ मंगल सगुन सुगम सब ताके । सगुणब्रह्म सुंदर सुतजाके ॥ रामसरिस बरदुलहिनि सीता । समधी दशरथ जनक पुनीता ॥ सुनि असब्याह सगुन सब नाचे । अबकीन्हें बिरंचि हम सांचे ॥ इहिबिधि कीन्ह बरात पयाना । हय गज गाजहिं हनहिं निशाना ॥ आवत जानि भानुकुल केतू । सरितन जनक बँधाये सेतू ॥ बीच बीच बरबास बनाये । सुरपुर सरिस संपदा छाये ॥ अशन शयन बर बसन सुहाये । पावहिं सब निज निज मनभाये ॥ निति नूतन सुखलखि अनुकूले । सकलबरातिन मंदिरभूले ॥

रघुराजछंदचौबोला ॥ उतै दूत जे गये अवधपुर लै बिदेह की पाती । जोरि पाणि कीन्हें पद बंदन आय तीसरी राती ॥ दूत बिलोकि बिदेह बिनोदित कहैं कुशल सब आये । कहहु कुशल कोशल भुआलकी कब एहैं सुखछाये ॥ दूतनकही खबरि तहँकी सब नृप रनिवासउराऊ । प्रीतिरीति पुनि लै बरातको बरणयो चलनि खराऊ ॥ पुहुमीपति यहिपुरहि पहुँचिहैं परसौं सहित बराता । कही प्रणाम आपको बहुबिधि दशरथ बिश्व बिख्याता ॥ दशरथ दुनी दूसरोदिनकर बिभौ सरिस सुरराजा । का कहिये तापर ताकेसुत भये लषण रघुराजा ॥ राउरि कुशल पूंछि कोशलपति हमहिं बहुत सतकारे । तेहिदिन दुपहर हमहिं बिदाकरि सांझ आप पगुधारे ॥ प्रथमबास सरयूतटह्वैहै दूसर गंडक तीरा ।

तृतियबास इतते युग योजन परेउ मिलन मतिधीरा ॥ नाथ कृपा हमपर कीन्हें अति दीन्हें अवध पठाई । अति अभिराम रामपुर देखेउ सुखमा बरणि न जाई ॥

संग्रह० दोहा ॥ सुनि दूतनके बचनबर मिथिलापति हरषाय । अति अमोल पटभूषण दिय तिनको मँगवाय ॥

रघुराज०छंदचौबोला ॥ इतैबरात चली रघुकुल की रामदरश अभिलाषी । लषणरामको लखबकालिह हम चले परस्पर भाषी ॥ आनँद बिबश होतमग बिभ्रम संभ्रमभाषन माहीं । को बरणै दशरथ अनंद अब रामहिं व्याहन जाहीं ॥ आठपहरभे आठ युगनसम कबपहुँचैं मिथिलाको । बिश्वामित्र बिदेह सहित कब देखहिं रामललाको ॥ अतिउतसाहित उठत आशुपद ठमकति क्षणकनछाया । हय गजरथ पैदरसम जाते तदपि न पंथसिराया॥ जे याचतयाचकजगतीके जगतीपति पथमाहीं । तेयाचकपुनिहोत अयाचक याचत पुनिजगनाहीं ॥ धायधाय देशनके बासी देखत आय बराता । पूछत प्रथमहिं राम लषणके पिताकौन विख्याता॥ जाके पूत सपूत बांकुरे तासुदरशअघहारी ।तृणसों जिन त्रिपुरारि धनुष दलि व्याहत जनक दुलारी ॥ मारि ताड़का मुनिमष राख्यो गौतमकी तियतारी । सुनि नृप कहत यदपि सतपै मोहिं लगति हँसी असलारी ॥ मिथिलादेश प्रवेश नरेश कियो बरात लै भारी । तब ते हँसि हँसि हुलसि हुलसि जन देत माधुरी गारी ॥ मंगलगान करत युवती जुरि होहिं पंथमहँ ठाढ़ी । सदल दीपधरि कलश शीशपर बरदेखन रतिबाढ़ी ॥ तेलखिभरत शत्रुशाल्नहुको सुंदर दूलह कहहीं । कोउ कह दोउ दूलह सहिबाले बर मिथिलापुर अहहीं ॥ अतिहि त्वरात प्रयात बरात गई जब कमला तीरा । तहँ ते जनकनगर युगयोजन जनक सचिव तहँ धीरा ॥ जोरि पाणि बोलेउ सुमन्तसों इत सबभांति सुपासा । अब मिथिलापुर है युगयोजन करै बरात नेवासा ॥ जाय सुमन्तकह्यो भूपतिसों नृपकीन्हों स्वीकारा । कमलातीरपरे सब

डेरा बन रसाल मनहारा ॥ तुंग मेरु मंदरसम सुंदर भूपति सिविर सोहाये । बिमल बिख्यात सोहात कनातन बहु बितान छबि छाये ॥

संग्रह०दोहा ॥ मिथिलाके परिचर तहां सबकर किये सत्कार । सकल सराहत जनकके अतिउत्तम व्यवहार ॥

रघुराज०छंद०चौबाला ॥ करि भोजन सुखशयन अवध नृप उठेउ रहे दिन यामा । सभामध्य मंडित धरणीपति भये सुपूरण कामा ॥ प्रचुर पठे परिचारक दलमहँ खबरि बरातिन लीन्हीं । आवनकी पुनि अशन शयनकी सबन खातिरी कीन्हीं ॥ सबैबराती सुखी सकल बिधि रंच बिसंच न पाये । धामन आय धरणिपति को अस बिस्तर बचन सुनाये ॥ कौशलपाल तुरन्त सुमन्तहि बोलि कही अस बानी । सजवावहु बरात आजुहिते कालिह होनि अगवानी ॥ सचिव कालिह मिथिलाधिराजको मिलि मुनिराज समेतू । सानुज कौशल्यानंदन लखि मिटी बिरह दुखजेतू ॥ बन बन बागत बहुत दिननते कृशतनु ह्वैहै प्यारे । करत रह्यो ह्वैहै को सोपति दूधबदन दोउबारे ॥ छोड़तरहे न क्षणभरि जिनको खेलत सांझ सकारे । एक मास बीत्यो बिन देखे राम लषण सुकुमारे ॥ कह्यो सुमन्त जोरकर कंजन धन्यधरणि अवधेशा । राम लषण जिनके कुमार जग उदित दिनेश निशेशा ॥ राम बिवाह बिलोकि बिलोचन ह्वैहैं सफल हमारे । को अस जेहि नहिं राम प्राण प्रिय एकोबार निहारे ॥ करिकै बिदा सभासद वृन्दन उठेउ भूप संध्यासी । दिनकर निरखि अस्तगिरि गमनत दीन्हो अर्घ हुलासी ॥ हवनादिककरि नित्य नेम सब अतिथिपूजिश्रद्धालू । रंगनाथको ध्यानधरयो कहि पुजवहु आश दयालू ॥ सकल शोध लै भूप बरातिन कियो शयन महराजा । देखे सपनआय कौशिक मुनि दिये लषण रघुराजा ॥ पुनि जनु कौशिक अरु बशिष्ठमुनि बोले बचन उछाही । जैहौं अवध अवधपति मोदित चारिउ कुवँरन ब्याही ॥ सीताराम बिवाह बिदित जग औरहु सुनहुभु-

माला। द्वितिय और सो नाम उर्मिला जनक भूप लघुबाला ॥ तासु बिवाह लषणको होई कुशध्वज लघु नृप भ्राता। तेहि तनया मांडवि श्रुतिकीरति कीरति छबि बिख्याता ॥ करिहैं भरत बिवाह मांडवी श्रुतिकीरति रिपुशालू। यहि बिधि चारिहु कुवँर ब्याहि जब चलिहौ अवधभुआलू ॥ कुशल सहित कोशलपुर जैहौ कोशलनाथ उदारा। ऐसो सपन देखि रजनी महँ नृपजगि कियो बिचारा ॥ जबते सपनलख्यो जगतीपति तबते नींद न आई। जाय याम बाकी निशि गुरुपहँ दीन्हो सपन सुनाई ॥ कहबशिष्ठकछु शंककरहु जनि देहु देवाय नगारा। चलहु बरात साजि मिथिलापुर सपनभयो सुखसारा ॥ सजन सैन हित दिय निदेश नृप गमन दुंदुभी बाजे। सैनिक सकल बाजि गज स्यन्दन अतिहि अनंदन साजे ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामविवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलबारहवाँप्रकरणसमाप्तः १२ ॥

श्री सीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

चौदहवांप्रकरण ॥

जनकपुरमें बरातका आगमन अवधपुरसे ॥

श्री तुलसी० दोहा ॥ आवत जानि बरातबर सुनि गहगहे निशान । सजि गजरथ पदचर तुरँग लेन चले अगवान ॥ चौपाई ॥ कनक कलश कल कोपरथारा । भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥ भरे सुधासम सब पकवाना । भांति भांति नहिंजाइ बखाना ॥ फल अनेकबर बस्तु सुहाई । हरषि भेंट हित भूपपठाई ॥ भूषण बसन महामणि नाना । खग मृग हय गय बहुबिधि याना ॥ मंगल सगुण सुगंध सुहाई । बहुत भांति महिपाल पठाई ॥ दधि चिउरा उपहार अपारा । भरि भरि कांवरि चले कहारा ॥

रघुराज० त्रिभंगीछं० ॥ फहरन्त निशाना नदत निशाना गायक गाना करतचले । सज्जन मतिमाना हिय हुलसाना किये पयाना भाउभले ॥ रथरतन सवाँरो अति बिस्तारो बाजिन चारो चारुमहा । राकाशशि छत्रा परमबिचित्रा आतपपत्रा राचिरहा ॥ तापर मिथिलेशा चढेउ सुबेशा मनहुं सुरेशा सोहिरह्यो । लक्ष्मी

निथ प्यारो राजकुमारो तुरँगसवारो गैलगह्यो ॥ पुरते छबि भारी कढ़ी सवारी भै घहरारी चाकनकी। बहुबजे सोहावन बाजन पावन जिनध्वनि छावन नाकनकी ॥ दोउ नृपन मिलापा मोदकलापा देव अलापा करतसबै। देखनके आसी नाकनिवासी गुनि सुखरासी ठानि जबै ॥ सुरचढ़े बिमानन बहुबिधि आनन दशहुँ दिशानन नभआये। बरषैं बहुफूला गतसबशूला मंगल मूला यशगाये ॥ उतते अवधेशा इत मिथिलेशा नहिं कमबेशा महराजा। दुहुँ पुण्यहुजागी जगबडभागी समअनुरागी छबिछाजा ॥ दश शुतुरसवारे जनकहँकारे बचनउचारे तुम आवो। ममअरजसुनावो नृपद्रुत आवो बिलंब बिहावो सुख छावो ॥ द्रुतधावन धाये नृपदल आये बचनसुनाये दशरथ को। कहि जनक प्रणामा दरशनकामा चलियहिजामा गहिपथको ॥ ठाढ़े सुखमानी हितअगवानी आंखिलोभानी दरशनको। लै बिशद बराता आवहुताता अवछनआता हरषनको ॥ सुनि मैथिल बैना भरिउर चैना सजल सुनैना अवध धनी। कहबचन तुरंता सुनहु सुमंता नहिं बिलवंता चलै अनी ॥ दोहा ॥ करहु सेनकोशिघ्रहीं दुयाचंदआकार। हमअरुगुरु मधिमें रहब अरुयुग राजकुमार ॥ आगे पैदर शुतुरयुत पुनि बाजी रथफेर ॥ पुनि मतंग मंडल चलै करहुव्यूह बिनदेर। शासनपाय सुमंत तहँ तैसहिसैनबनाय। मिथिलाओरहि शीघ्रगतिदियो बरातचलाय ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ अगवानन जबदीख बराता। उर आनंद पुलकभर गाता ॥ देखिबनाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन हने निशाना ॥

कबित्त ॥ एक ओर मंडली किशोर निमिबंशिनकी बिरद बिचित्र शस्त्र लखि न सकायको। शूरशिरताज राजमान रघुबंशिनमें शीलवंत ठाकुर न दूसरो सुभायको ॥ छरीदार जांगरे नकीबनकी भीरभारी नीतिगुण भूषित बिभूति अनुभायको। मन्दमन्द ल्यावत सुजन सँग मरोरवारो चतुर सुजात बेटा ति-

रहुतिरायको ॥ चमू चतुरंग मध्य राजत गयंद गोल गाजत ब-लाहकसे भारी रोर शोरकी। मत्त शिरताज गजराज राज भूषण सों जटित जवाहिर जंजीर जंग जोरकी ॥ भूप शिरताजको कु-मार शिरताज लिये लसत गरूरवारी चलनि मरोरकी। एक ओर बाहिनी बिचित्र निमिबंशिनकी एक ओर सेना लाल अवधकिशोरकी ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ हरषि परस्पर मिलन हित कछुकचले बगमेल। जनु आनन्द समुद्रदुइ मिलतबिहाय सुबेल॥

रघुराज०चौबोलाछं० ॥ फहरनि नवल निशाननकी छबि तुंग तरंग समाना। राजी गज बाजीनकीराजो महाजंतु बिधिनाना ॥ मिलत युगल चतुरंग उमंगन बिलसै मनहुं अकाशा। घनमंडल भल युगल अखंडल मिलतआय दोहुं आशा॥ मानहुं लै भारी तारादल तारापति हुलसायो। लेनहेत अगवानी आशुहि अंशु-मानकी आयो॥ इत दिनकर सम दशरथ सोहत ग्रहसम सब रघुबंशी। उत महीप मैथिल मयंकसम उड़गणसम निमिबंशी॥ भूमंडल सम सजी सैन मिलि निमिकुल रघुकुल वारी। इत कोशलपति मिथिलापतिको बड़ अरु छोट उचारी॥ छैल छबीले राजकुवँर कोउ तरलतुरंग धवाई। जनकहि करहिं प्रणाम हर्ष बश बाजी वेस नचाई॥ तैसहि कोउ निमिबंश रँगीले हर बर अबै उड़ाई। अभिबंदन करि अजनन्दनको मिलहिं सैन निज जाई॥ मिले तुरंगनसों तुरंगबर मिले मतङ्ग मतंगा। मिले पैदरनसों पैदर तहँ मिले सतांग सतंगा॥ प्रतीहार कहि फरक फरक तहँ किये कछुक मैदाना। इतते कोशलपाल गयउ तहँ उत मिथिलेश महाना॥ गुरु बशिष्ठ अरु सतानंद मुनि भरत शत्रुहन दोऊ। चढ़े तुरंग कुंवर लक्ष्मीनिधि आयगयउ तहँ सो-ऊ॥ दशरथ जनक नयन जुरिगे जब दोउ अभिबंदन कीन्हे। दोउ पंकज पाणिपसारि मिलायलूटि सुखलीन्हे॥ कियोप्रणाम विदेह बशिष्ठहिं पूछेउ कुशलसुखारी। सतानन्द पद दशरथबंदे छै

पगपाणि पसारी ॥ भरत कुंवर रिपुसूदन संयुत जनकहिं किये प्रणामा। लक्ष्मीनिधि कोशलपति बंद लै अपनो मुख नामा॥ पुनि बशिष्ठ के चरणगहे चलि गौतम सुवन सुजाना। रघुकुल गुरुदीन्ह्यो अशीष तेहि पाये मोद महाना ॥ सतानन्द के चरण गह पुनि भरत शत्रुहन दोऊ। आशिष दीन्हेउ गौतम के सुत भये मगन मुद ओऊ ॥ दोहा ॥ पुनि लक्ष्मीनिधि मुदित मन किये बशिष्ठ प्रणाम। आशिष दीन्हेउ ब्रह्मसुत होय पूर मनकाम॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ हरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं। मुदितदेव दुंदुभी बजावहिं॥

रघुराज० ॥ पूछि परस्पर सब कुशलाई। उभै भूप मुदलहे महाई ॥ कहे बिदेह बहुरि करजोरी। तुम्हरी कुशल कुशल अब मोरी ॥ तुम तो कुशल रूप महराजा। धर्म धुरंधर पुण्यदराजा॥

संग्रह० ॥ असकहि कोशलपतिसों बानी। भूप बिदेह शील गुणखानी॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बस्तु सकल राखी नृप आगे। बिनय कीन्हतिन्ह अतिअनुरागे॥ प्रेमसमेतराउ सबलीन्हा। भै बकसीस याचकन दीन्हा॥

संग्रह० ॥ पुनिकह जनक दोउ करजोरी। हृदय मांह अति प्रीति न थोरी॥

रघुराज० ॥ सबबिधि मोहिं धन्यकरि दीन्ह्यो। मिथिला नगर आगमन कीन्ह्यो॥ टूटीफूटी मोरि मड़ैया। तिरहुतिके सब लोग लोगैया ॥ तिन्हें जानवी अवध बसैया। सत्यकहौं करि धर्म दोहैया ॥ सुनि मिथिलापति बचन सुखारे। कहदशरथ दृग बहत पनारे॥ जनकराज तुमहौ सब लायक। कसन कहौ अस बचन सोहायक॥ ज्ञानवान बिज्ञान स्वरूपा। बिश्व बिरागी भक्ति अनूपा॥ दानि शिरोमणि निमिकुल भानू। कहँलगि करिय आप गुणगानू॥ मोपर कृपाकीन मिथिलेशू। सकल भांति हरि

लीन कलेशू ॥ दोहा ॥ आये कौशिक संगमें मेरे युगल कुमार । लहे सुयशजग जोकछुक तौनप्रताप तुम्हार ॥ चौपाई ॥ कह अवधेशबसे दोउभाई । कौनहेत लाये न लिवाई ॥ सुनत बिदेह कह्यो करजोरी । दोउ मर्य्यादा राखीमोरी ॥ जगपालक बालकनृप तेरे । रिपुघालक मालकहैं मेरे ॥ पूत सपूतनको बड़बारी । सकैं न शेश गणेश उचारी ॥ राउर सुवन सहज जिन जाने । त्रिभुवनमहँ तिन होत बखाने ॥

संग्रहकर्त्ता ॥ सुधा सरिस बर गिरा सुहाई । मिथिलापति अतिशय हुलसाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ करिपूजा मान्यता बड़ाई । जनवासे कहँ चले लिवाई ॥

रघुराज० ॥ दशरथ लक्ष्मीनिधि बोलवाई । लिये आपनेयान चढ़ाई ॥ जनक बोलाय भरत रिपुशाले । निज रथ लिये चढ़ाय उताले॥उभय महीपनके युगजाना । मिले बरोबरि कीन्हपयाना ॥ गुरु बशिष्ठ अरु गौतम नंदन । उभय ओर चढ़ि राजत स्यन्दन॥ दोहा ॥ निमिबंशी रघुबंशी अरिध्वंशी रणधीर । पूरण जगत प्रशंसी मिले बीरसों बीर ॥ चौपाई ॥ चली चारु जनवास बराता । सो सुख यक मुख नहिं कहिजाता ॥

संग्रहकर्त्ता ॥ देखत मिथिलापुरकी शोभा । जो बिलोकि मुनिवर मन लोभा ॥

रघुराज० ॥ नगर निकट ह्वै चली बराता । लखन हेत पुरबासिन व्राता ॥ यूथयूथ मारग महँ ठाढ़े । नर नारी आनँदरस बाढ़े ॥ जनकनगर महँ फहली बाता । जनवासे कहँ जाति बराता ॥ मंद मंद उत भूपति दोऊ । दोऊ सैन बीर सबकोऊ॥ निरखत नगर जात जनवासा । करत बिबिध बिधि हास बिलासा ॥ भरत शत्रुसूदन दोउ भाई । लरिकाई बश अतिअतुराई ॥ देहु जनक नृप हमहिं बताई । केहि थल बसत लषण रघुराई ॥ राजकुँवर के बचन सोहाने । सुनत बिदेह हरषि मुसक्याने ॥

चूमि बदन बोले सुनुताता। यहि पुर बसत युगल तवभ्राता॥ लखिहौ आजु अवशि निज भाई। कौशिक सहित लषण रघुराई॥ सुनि पुलके दोउ बंधु अपारा। कह्यो जनकसों अवध भुआरा॥ सुंदर भई पुरी निरमाना। अलका अमरावती समाना॥ आपु सरिस हरिदास प्रधाना। बसै सहित जहँ ज्ञान बिज्ञाना॥ है बैकुंठ सरिस पुर सोई। आवहिं सदा संत सब कोई॥ दोहा॥ धायधाय देखैं सबै मिथिलापुर नरनारि। बारहिबार बखानहीं दशरथभाग उचारि॥ चोपाई॥ धन्य धन्य कौशल्या रानी। धन्य धन्य दशरथ गुणखानी॥ जाके राम सरिस सुत भयऊ। अबकाभव बैभवरहिगयऊ॥ अस सब कहहिं बिबिध बिधि बानी। दशरथ भाग न जात बखानी॥ पुनि कोउ कहहिं परम बिज्ञानी। परयो हमहिं सबको अस जानी॥ जनक सुकृत मूरति बैदेही। जासु प्रभाव बिदित नहिं केही॥ हम सब धन्य जनकपुरबासी। लखे भूप दोउ पुण्य प्रकासी॥ कोउ तिय कहै सुनै सखि बानी। सुंदर जोरी जस मुनि आनी॥ तैसहि युगल कुवँर अतिलोने। दशरथ सँग आये मिठ लोने॥ और हजारन राजकुमारे। तिनके सरिस न परैं निहारे॥ बिश्वभरे की सुंदरताई। लीन्ही दशरथ कुवँर चोराई॥ यहि बिधि करहिं परस्पर बाता। सुख न समात बिलोकि बराता॥ बरषहिं सुमन ससुमन अपारा। चढ़े बिमानन देहिं नगारा॥ दोहा॥ जय मिथिलापति अवधपति मच्यो गगन महिशोर। उपर अमर अधजन नगर रह्यो न बाकी ठोर॥ चोपाई॥ करत बराती हासबिलासा॥ आये सकल सुखद जनवासा॥

संग्रह० ॥ तजि तजि बाहन खड़ी समाजा। रथते उतरे कोशलराजा॥

श्रीतुलसी० चोपाई॥ बसन बिचित्र पांवड़े परहीं। देखि धनद धन मद परिहरहीं॥ अति सुन्दर दीन्हेउ जन-

वासा। जहँ सब कहँ सब भांति सुपासा॥ जानी सिय बरात पुर आई। कछु निज महिमा प्रगट जनाई॥ हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई। भूप पहुनई करन पठाई॥ दोहा॥ ऋधि सिधि सिय आयसु अकनि गईं जहां जनवास। लिये संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास॥

रघुराज०॥ निरखे सब अनूप जनवासा। सत्यसत्य जनु स्वर्ग बिलासा॥ बन्यो राजमंदिर अतिभारी। शक्र सदन सम जासु तयारी॥ महा मेरु मंदर सम तुङ्गा। चमकहिं मनहुं हिमाचल शृङ्गा॥ सभा सदन अतिबन्यो बिशाला। शयन सदन सुंदर शशिशाला॥ मज्जन भोजन भवन बिभागा। चहुं कित चारु तड़ाग सबागा॥ कल कंचनकी कलित कियारी। झरहिं फुहारन सुरभित बारी॥ परसि भूमि लतिका लहराहीं। फूलि फूलि परमलपसराहीं॥ लता भवन बर लता बिताना। फूल सकल ऋतुके फल नाना॥ कुंजन कुंजन गुञ्जहिं भौंरा। कलरव करहिं बिहग चहुंओरा॥ तन्यौ चौकमहँ बसन बिताना। कनक रतन रंजित बिधिनाना॥ दोहा॥ चारिहु भाइनके भवन राजभवन बिस्तार। भिन्नराज कारज भवन बिस्तरकोषागार॥ चौपाई॥ गज शाला बहुबाजिन शाला। सचिव सदनभट सदन बिशाला॥ चौहट हाट बनी हाटककी। मरजा आमन फाटककी॥ कनक कपाटन कलित दुआरा। परिजन भवन परम बिस्तारा॥ कमलातीर मनोहर बासा। योजन युगल बन्यो जनवासा॥ सीरी सघन सुखद अमराई। शाखा क्षिति छ्वैछ्वै छबि छाई॥ अति उतंग चहुं ओर देवाला। पुरइव गोपुर बन्यो बिशाला॥ सचिव सभासद भट सरदारा। सबके पृथक्हिपृथक् अगारा॥ कहे जनक कोशलपति पाहीं। यदपि रावरे लायक नाहीं॥ तदपि निवास करहु

नृपराई। गुनि निजसदन सहित सकराई॥ जो कछु बन्यो सो दिय बनवाई। नाथ देखावत लाजहि आई॥ कह्यो अवधपति हँसि सुखमोई। याते अधिक बिकुंठहि होई॥ दोहा॥ अलरचना कीन्हीं नृपति दिय सुरलोक बनाय। बसबइसे हमसब सुखी आप बसी गृहजाय॥ चोपाई॥ जनकबेगि अवगणक बोलाई। तनक चित्तदे लगन शोधाई॥ गुरु बाशिष्ठ गौतममुनि काही। ज्योतिषके आचारज आही॥ सतानंद आदिक मुनिराई। रचहु समाज आज उतजाई॥ करि सिद्धांत लगन महिपाला। फेरि करहु व्योहार बिशाला॥ याचक बहुयाचनबिधि कीना। दान होत दाता आधीना॥ तुम दाता बिदेहमहिपाला॥ हम राउर याचक यहिकाला॥ आये अमित नरेश कुमारा। अब सबके नृप आप अधारा॥ दानि शिरोमणि भूप बिदेहू। मिटिहैं अवशि सकल संदेहू॥ सुनत सयुक्ति अवधपति बानी। भूप बिदेह महा मुदमानी॥ बोलेउ मंदमंद मुसक्याई। काछति जहँबाशिष्ठ मुनिराई। असकहि मांगि बिदा मिथिलेशा। बंदनकरि पुनि चलेउ निवेशा॥

श्रीतुलसी० चोपाई॥ निज निज बासबिलोकि बराती। सुर सुख सकल सुलभ सब भांती॥ बिभव भेद कछु काहुन जाना। सकल जनककर करहिं बखाना॥ सिय महिमा रघुनायकजानी। हरषे हृदय हेतु पहिचानी॥

रघुराज० ॥ सुखी बरात बसी जनवासा। लहे सकल जनु स्वर्ग बिलासा॥ जाय निवास बिदेह उदारा। पठये बिबिध भांति सतकारा॥ दोहा॥ सुमति सचिव गौतम सुवन ल्याये सब सतकार। देहु बरातिन बासवर यथायोग्य आगार॥ कनक कलश कोपर बड़थारी। कुंड कुंभ मंजूषा झारी॥ भरि भरि भोजन पान प्रकारा। सुधा सरिस पकवान अपारा॥ पुहुप बिभूषण रतन समेतू। बिबिध भांति फल सुधा निकेतू॥ बि-

बिध भांतिकी बनी मिठाई । बस्तु अमित घृत पक्क सोहाई ॥ बिबिध भांतिके रुचिर अचारा । लेह्य चोष्य बर पेय प्रकारा ॥ भोजन योग बस्तु चहुं ओरा । जे नरलोक मांह शिरमोरा ॥ जौन बस्तु प्रिय देवन काहीं । दुर्लभ जेवहिं लोकहि माहीं ॥ सकल बरातिन बसन अपारा । रह्यो जौनजस लघु बड़बारा ॥ कनक रजत रंजित जरतारी । तन धारक पत मुकुत किनारी॥जे लखि भूपति देवसिहाहीं । खानपान धारन मनमाहीं ॥ यथायोग जस जौन बराती । अति उत्तम नृपकहँ सब भांती ॥ दोहा ॥ मंडप कुसुमन के बिबिध पुहुप फरस बिस्तार । और पदारथ मोदप्रद कहँलगकरौं उचार॥ चौपाई ॥भरि भरि कांवर सुघरकहारा । तिमि भरि शकटन ऊंट अपारा। सतानंद अरु सचिव लेवाई। कोशलपालहि नजरकराई ॥ दीन्हे पूरि बरातिन काहीं। रही कछुक अभिलाषा नाहीं ॥ भूपतिहेत पदारथ जेते। सादर लै बांटे नृप तेते ॥ बिश्व उदार शिरोमणि राऊ। लघुबडजान्यो एकहिभाऊ॥ सतानंद अरु मंत्रि सुदामन । आये अवधनाथ ढिग पावन ॥ तिन आगे चूरा दधि राखे। बोले बचन जनक जस भाखे ॥ जोरि पाणि युग नावत शीशा । जनक कह्यो सुनु अवधअधीशा ॥ दधि चूरा उपहार हमारा। लेहु कृपा करि अवधभुआरा ॥ अवध बिभव बासव नहिं तूलै । किमि सतकारकरौं सुखमूलै ॥ जो कछु बिभव नरेश हमारा। सोसबअहै बिशेषि तुम्हारा ॥ सुनत बिदेह बचन नृपराई । दधि चूरा लै शीश चढ़ाई ॥

संग्रह०॥ प्रीति रीति दशरथकी जोई । बरणत लोग मुदित सबकोई ॥ उतै रामसे खबरि जनाये। लैबरातकोशलपतिआये॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पितु आगमनसुनतदोउभाई। हृदय न अति आनंद समाई ॥ सकुचित कहि न सकत गुरु पाहीं। पितु दरशन लालच मन माहीं ॥ बिश्वामित्र बिनय बहु देखी। उपजा उर सन्तोष बिशेखी ॥

संग्रह० ॥ मध्यदिव समय शुभजानी । राम लषण सँग लै मुनि ज्ञानी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ हरषि बन्धु दोउ हृदय लगाये । पुलकअंग लोचन जल छाये ॥ चले जहां दशरथ जनवासे । मनहुँ सरोवर तके पियासे ॥

रघुराज० दोहा ॥ भोजनकाल बिचारिकै उठन चहेउ नरनाह। हल्लापरयो बरातमें यकबारहि तेहिकाल ॥ राम लषण लै संग में दशरथ दरशन हेत । आवत विश्वामित्र अब तुरित गाधिकुल केत ॥ कबित्त ॥ भोजन करत रह्यो भोजन बिसारि धाये पान को करत जोई पान बिसरायो है । सोवतरह्यो जो वैसेही सो उठिधाये मज्जन करत धाये नीके न नहायो है ॥ करत हतौ जोकाम जौन जौन जोईजन परत अवाज कान तौनही भुलायोहै । सकल बरातमाहिं चारोंओर शोर छायो रघुराज आये आज रघुराज आयोहै ॥ रामसखा जेते रहैं तेते सब धाय धाय नगरकढ़त राम लषणको लीन्हेहैं । नामलैलै आपने बताय निज काम धाम बापको बताय कहैं आप हमैं चीन्हेहैं ॥ मुनिमख राखिबेको जबते कढ़ेहो मीतहमको न काहे एक पाती पठैदीन्हेहैं ॥ रघुराज व्याहहोत ह्वैगई बेलंदआंखैं मिथिला निवासिनि मिताई नई कीन्हेहैं ॥ खाये एकसाथ अरुखेले एकसाथहीमें साथसाथ शैनकीन्हे सैरत्योंशिकारको । मातुमानि एकभेदनाहिंराखेनेकटारे नाहिं कीन्हें टेक ना बिबेक बार बार को ॥ अब दिन दशते निकरि अवधूत संग मिलत मिजाज नहिं कौशला कुमार को । टोरि कै पुरानी धनुहीको आज रघुराज भूलिगे हमारी सारी यारी प्यारे यारको ॥ दोहा ॥ प्रेम लपेटे अटपटे सुनिसखानके बैन । मुनि सकोचबश नहिं भनत बिहँसत राजिवनैन ॥ कीन्ह्यो शयन प्रवेशजब राम लषण मुनिसंग । जुरे अवधबासी सकल मच्यो महासुख रंग ॥ चौपाई ॥ परहिं चरणकोउ अवध निवासी । देहिं प्रदक्षिण कोउ सुखरासी ॥ चूमहिं बदन मदनछबिवारी। सालि

सुखात लही जनु बारी ॥ गद्गद गर रोमांचित देहा । बचन कढ़त नहिं अधिक सनेहा ॥ निरखहिं राम लषण मुख चंदा । बिते कल्प मनु मिल्यो अनंदा । कह्यो नृपहि कोउ भरघोउमंगा । आवत राम लषण मुनिसंगा ॥ भईभीर दशरथके द्वारे । निकसत जन करि जोर निकारे ॥ भरत शत्रुहन अति अतुराई । आयगये सुनि राम अवाई ॥ आयोतहँ निषादपति आसू । बाढ़यो रघुपति दरश हुलासू ॥ आये रघुकुल राजकुमारा । राम लषण लालसा अपारा ॥ राम लषगकी सुनत अवाई । गुरुबशिष्ठ आयेहरषाई ॥ गुरुबशिष्ठ अरु कोशलपाला । सहित निषाद भरत रिपुशाला ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन समेत । उठेउ हरषि सुखसिंधुमहँ चलेथाहसीलेत ॥

रघुराज०चौपाई ॥ इत ते करि बशिष्ठ मुनि आगे । राज समाज गई अनुरागे ॥ उतते आये गाधि कुमारे । सहित युगल दशरत्थ दुलारे ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठहि देखी । कियो प्रणाम महामुद लेखी ॥ पूंछिपरस्पर मुनि कुशलाई । बारहिंबार मिलेसुखपाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा । बारबार पद रज धरि शीशा ॥ कौशिक राउ लिये उर लाई । कहि अशीश पूँछी कुशलाई ॥

रघुराज० ॥ गद्गद कंठ कढ़त नहिंबाता । खड़े जोरि नृपकर जलजाता ॥ पूंछत कुशल पुलकि मुनिनाहा । बहत भूप दृग अम्बु प्रवाहा ॥ दोहा ॥ धनुषयज्ञ पुत्रेष्टिकरि कौशिक यज्ञकुमार । आय आजुहीं जनुदिये युगल कुमार उदार ॥ चौपाई ॥ जस तस कै नृप सुरति सम्हारी । बोलेउ बचन बहत दृगबारी ॥ नाथ कृपा फल मोहिं दरशायो । राम लषण मैं आजुहि पायो ॥ जो कछु कीरति सुगति बड़ाई । सुनियत राम लषण इतपाई ॥ सो तुव पद पंकज प्रभुताई । द्वितिय भांति नहिं सजतिबड़ाई ॥ तुम समान को दीनदयाला । दीन्हेउ मोहिं देखाय दोउलाला ॥

तापर सुयश प्रताप बड़ाई । जनकबंशमहँ ब्याहकराई ॥ तुम से सज्जन जे जगमाहीं । तिनकहँ यह अचरज कछु नाहीं ॥ असकहि पुनि पुनि बंदतचरणा । दशरथ हर्ष जायनहिं बरणा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुनि दण्डवत करत दोउभाई । देखि नृपति उर सुख न समाई ॥ सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे । मृतक शरीर प्राण जनु भेंटे ॥

रघुराज० ॥ अज महेश ध्यावत जेहिकाहीं । शेष बरणि यश पार न जाहीं ॥ नेति नेति जेहि वेद बखाना । वेद बिबुध मुनि कारक जाना ॥ दोहा ॥ ताहि गोद लै अवधपति नैनन नीर बहाय । कहत गाधिसुतकी कृपा गये पूत मैं पाय ॥ चौपाई ॥ गद्गद गर कछु बोलि न आवत । पुनि पुनि तन फल पनसबनावत ॥ मनहुँ बिरंचि खेलावन हेतू । लिये अंक रवि शशि सुख सेतू ॥ मनुबत्सल रस परमनिशंका । कीन्ह्यो दास्य शृँगारहि अंका ॥ मनु कश्यप अश्वनी कुमारा । लीन्हेअंक अनंद अपारा ॥ चूमत मुख सूँघत पुनि शीशा ॥ गद्गद गर नहिं बदत महीशा । सुमनस सुमन बरषि झरिलाये । दून दुंदुभी दिशि न बजाये ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुनि बशिष्ठ पद शिर तिन नाये । प्रेम मुदित मुनिवर उरलाये ॥

रघुराज० ॥ आशिष दै बशिष्ठ मुनिराई । लिये दुहुँन कहँ अंक उठाई । चूमि बदन सूंघेउ पुनि शीशा । चिरजीवहु अस दीन अशीशा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बिप्र वृन्द बन्दे दुहुँ भाई । मन भावत अशीश तिन पाई ॥ भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा । लिये उठाइ लाइउर रामा ॥ हरषे लषण देखि दोउ भ्राता । मिले प्रेम परिपूरण गाता ॥

रघुराज० ॥ रिपुहन भरत दौरि पुनि जाई । कौशिक चरण गहे हरषाई ॥ गाधिसुवन दिय आशिरबादा । सुखी रहौध्रुव भुव

मरयादा ॥ दोहा ॥ सखा सखा कहि दौरि पुनि मिले निषादहि राम । मिलन देखि रवि रथ रुक्यो भयो दून सो याम ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ पुरजन परिजन जाति जन याचक मन्त्री मीत । मिले यथा बिधि सबहिं प्रभु परम कृपालु बिनीत ॥

रघुराज० ॥ यहि बिधि सबसों मिलि तहां पितु मुनि बंधु समेत । जाय बितान तरे मुदित बैठेउ कृपानिकेत ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ रामहिं देखि बरात जुड़ानी । प्रीति कि रीति न जाय बखानी ॥

रघुराज० ॥ कनक सिंहासन युगल मँगाये । गुरु बशिष्ठ कौशिक बैठाये ॥ चापत चरण महीपति बैठे । मानहुं मोह महोदधि पैठे ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ नृप समीप सोहहिं सुत चारी । जनु धनुधर्मादिक तनु धारी ॥

रघुनाथदास० ॥ दहिने दिशि हैं लक्ष्मण रामा । बायें भरत शत्रुहन नामा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सुतन सहित दशरथ कहँ देखी । मुदित नगर नर नारि बिशेखी ॥

रघुनाथदास० ॥ धन्य भूप भल देव मनाये । जो सुत चारि मनोहर पाये ॥

संग्रह०॥ रामनिकट बरराजकुमारे । मानहुं मदन रूपबहुधारे॥

रघुराज० ॥ देखत सुछबि लहत अहलादा । सायुध ठाढ़ो राज निषादा ॥ जबते राम लषण दोउ भाई । किये प्रवेश बरातहि आई ॥ जबते बिरह ताप दुखदाई । मिटे मेघ जिमि मारुतपाई ॥ सबके हिय नहिं हर्ष समाई । दशरथ दशा जाय किमिगाई ॥ जस तसकै धरि धीरज राजा । बोलेउ कौशिकसों तजिलाजा ॥ गृहते मोहिं बोलाय पठायो । प्रभु शासन शिरधरि इत आयो ॥

चारिहु कुवँर रावरे केरे । मैं नहिं जानहुं हैं मुनि मेरे ॥ उचित होय सो शासन दीजै । मोहिं अपनो सेवक गुनि लीजै ॥ पालै पोषै जो जेहि काहीं । सो ताको पितु संशयनाहीं ॥ दोहा ॥ राज राज मुनिके बचन सुनि कौशिक मुसक्याय । सुखसानी बानी कही मनमानी मुनिराय ॥ मख रक्षणहित मांगि मैं लायों युगल कुमार । तुमहिं समर्पण करतहौं लीजे अवध भुआर ॥ चोपाई ॥ असकहि राम लषण गहिहाथा । सौंपेउ नृपहि मुदित मुनिनाथा ॥ दशरथ कह्यो न मैं अब लैहौं । दीन बस्तु नहिं घरलैजैहौं॥ राउर सुत रह राउर पासा । आप कृपाबश मोहिं न त्रासा ॥ मुनि मुसुकाय कही तब बानी । राउर सुत सबके सुखदानी ॥ सबके निकट भिन्न सबहीते । कबहुं न टरतहमारे हीते । को अस जगमहँ भूप सुजाना । इनहिंछोड़ि लागै प्रिय आना ॥ जगतमहाप्रिय जगहितकारी । जे इन लखत तासु हृदचारी ॥ धन्यधन्य तुव अवध अधीशा । पाये सुत दायाजगदीशा ॥ अब यह शासन मम सुनिलीजै । चारिहु कुँवर संगमहँ कीजै॥भोजन भवन तुरंत सिधारी । अशन करहु लैपुत्रनचारी॥

संग्रह० ॥ अस सुनि गाधि सुवनकी बानी । दशरथ भूप परम सुखमानी ॥ सतानंद अरु सब मंत्रीगन । बिदा होन चाह्यो तिनके मन ॥

रघुराज०दोहा ॥ सादर बोले अवधपति कहि प्रणाम मुनि मोर । पुनि बिदेहसों अस कह्यो सकल अनुग्रह तोर ॥ अहहु महात्मा ज्ञानिबर निमिकुल पंकज भानु । यहप्रसाद सब रावरो भवभागवत प्रधानु ॥

संग्रह०चोपाई ॥ बिनय प्रेम दशरथको जोई । करत प्रशंसाअति सब कोई ॥

श्रीतुलसी० चोपाई ॥ सुमन बरषि सुर हनहिं निशाना । नाक नटी नाचहिं करि गाना ॥ सतानंद अरु बिप्र

सचिव गन । मागध सूत बिदुष बंदीजन ॥ सहित बरात राउसनमाना । आयसु मांगि फिरे अगवाना ॥

संग्रह० ॥ कहमुनि हमहूं चहत सिधाये । उठि नृपचरणन महँ शिरनाये ॥ ऋषि अशीशदीन्हेउ मतिधामा । होवहु सिद्ध सकल मनकामा ॥

रघुराज० ॥ हम बशिष्ठ पुनि आउब काली । करब बिवाह उछाह उताली ॥ असकहि कौशिकमुनि सुखसेतू । गये बशिष्ठ समेत निकेतू ॥ दोहा ॥ उठेउभूप भोजन करन संयुत चारि कुमार । चले राजबंशी सकलसंग करन ज्योनार ॥ छंदचौबोला ॥ भोजन करन लगेउ भुआलमणि भोजन शाला माहीं । आगे पुरट पटन बैठाये चारिउ भाइन काहीं ॥ सिगरे राजकुमार और तहँ बैठे आसन जोरे । बैठ चक्रवरती चामीकर चौकी महँ मधिठोरे ॥ कनकथार कंचनभाजन भल भरि भरि ब्यंजन नाना । प्याले पुरटबिशाले जलभरिल्याये सूदसुजाना ॥ कंठन कटुले कड़े करन में हीरन जड़े अपारे । सूपकार शुचि पहिरि लसत युग पीतांबरन पखारे ॥ यथायोग पुनियथायोग रुचि परुसे भोजन मीठे । अमृत लगत आगे जिन सीठे कबहुं न खात उबीठे ॥ दै बलि बैश्वदेव अचवन करि भोजन बिधि निरधारी । भाषिसबै लक्ष्मनारायण खानलगे सुखधारी ॥ भोजन करतजात भूपति मणि लखत लषण अरु रामै । पूछत कौन भांति मखराखे करि निशचर संग्रामै ॥ कौनभांति ताड़का संहारी लगी न डर लखिघोरा । मुनियत गौतमनारि प्रकटभै परसिपाउ पुनितोरा ॥ कौन उपाय पुरारि पिनाकहिं भंज्यो मध्य समाजा । कहँ पायो यतनो बल लालन जहां बली सब राजा ॥ प्रभु मुसक्याय कह्यो पितु मैं नहिं जानहुँ कारणकोई । आपप्रताप कृपा कौशिक की मोर जोर येतनोई ॥ कौन कलेऊ देतरह्यो तोहिं किमि सोये तृणसेजू । चले चरणकोमल कठोर महि मुनि कसक्यो नेक करेजू ॥ बनबन आतप बात सहत बहु

बिथा न भै तनमाहीं । कोसोपति सबभांति कियो तब घरकेकोउ सँगनाहीं ॥ प्रथम लषण लरिकाईंके बश कहेबैन अतुराई ।पिता अवधतेकढ़त महामुनिविद्यायुगल पढ़ाई॥काकहियेविद्या प्रभाव पितुभूख प्यासनहिं लागी। थाक नींद आलस्यअबलता हमरे तनतेभागी ॥ रामकह्यो सो पति सबजैसी कौशिक करी हमारी । तस नहिं कीन्हीं अवध महलमें त्रिशत साठि महतारी ॥ जानि परो नहिं हमहिं बिपिन दुख घरहुते सुख अधिकाना । जिमि राखती पलक नैनन तिमि राखेउ मुनिभगवाना ॥ सुनि भूपति करणी कौशिक की महामोद मन मान्यो । बारहि बार सराहि पुलकि तन समाधान उर आन्यो ॥ यहिबिधि भोजन करत सुतनयुत बदत बचन सुख साने । करि आचमनउठे अवनी पति आनँद माहिं अघाने ॥ धोइ चरणकर पहिरि बसन कछु शैन सदन नृपगयऊ । इतै राम लै बंधु सखा सब बैठि प्रमोदित भयऊ ॥ पूछन लागे कथा सखा सब भरत लला करि आगे । कहन लगे प्रभुचरित कियो जस सहजलाज रसपागे ॥ हँसि बोलेउ कोउ राम बिवाहहु काहे जनक कुमारी । जहँ चाहहु तहँ तुम पषानते लेहु प्रकट करि नारी ॥ सुनतहासरस हँसे सखा सब प्रभुने सुक मुसुक्याने । लषण कही तुम प्रकटत पेखे सब थलनारिपषाने ॥ कोउकह मारि नारि निशिचरकी रसिकनाम किय हानी । हरि हँसिकह्यो हते पापिनिकेहानि भईसुखखानी॥ दोहा ॥ मांगि बिदा सब सखागण आये निज निज ऐन।संध्यादिक रघुबीरकरि बंधुनयुत कियशैन ॥चौपाई ॥ जगे सकारेहिचारिहु भाई । प्रातकर्म कीन्हें चितलाई ॥ ब्रह्ममुहूरत दशरथ जागे। संध्याबंदन किय अनुरागे ॥ जगे बराती होत बिहाने । रामदरश हित मन ललचाने ॥ करिकै सभाभूप मुदभीना । सुतनसहित नृप भोजन कीना ॥ कौशिक मुनि बशिष्ठकरि भोजन । निज मंदिर बैठ सहआेजन ॥ वहां सतानँद गणक बुलाये । बुधजन केरि समाजकराये ॥ पुनि गौतमसुत शिष्य पठाये । बिश्वामित्र

बशिष्ठजु आये ॥ सतानन्द मनमोद अपारे । करि सनमान मुनिन बैठारे ॥ तब बशिष्ठ बोले मृदुबानी । लगन बतावहु मंगलखानी ॥ गुरुबशिष्ठके बचन सुहाये । सुनत ज्योतिषीमन हुलसाये ॥ पुनिलागे बुधकरन बिचारा । शोधि लगनबर बचन उचारा ॥ मार्गशीर्षसुदि पंचमिबारा । लगन नखत ग्रहसबसुख सारा ॥ सुरभीरजसमये बर पावन । होय राम भाँवरि सुखछावन ॥ दोहा ॥ करि सिद्धान्त बशिष्ठमुनि अवधनाथ ढिगजाय । मास दिवस तिथिलगनबर दीन्हों सकल सुनाय ॥ दिगस्यन्दन आनंद मन प्रमुदित सकल बराति । उतमिथिलापुर अति खुशी जनक भूपकुल ज्ञाति ॥

रघुराज० छंद चौबोला ॥ भोग बिलास बरातिनको तहँ लहैकौन कहिपारे। एक एक रघुबंशिन को थल लोकपाल लखिहारे ॥ घटी घटी सुरनटी नटैं तहँ घटै न घट घट हर्षा । भरि गुण गर्ब सर्ब गंधर्वा गाय करते सुम बर्षा ॥ महा मनोहर बाजन बाजत संयुत तालबँधाना । सबके डेरन बने जरीके बिस्तर तने बिताना ॥ बाग तड़ाग नहर सुरभित जल बने बिचित्र अगारा। पूरण सकल अपूरब वस्तुन जो नहिं कबहुं निहारा॥ जो जहँ चहत जौन मनमें जन मिलत तौन अनयासा । इन्द्र कुबेर बरुण देवनसम पावत भोग बिलासा ॥ बीतत बासर रैन चैन महँ जागत शैनहुं माहीं । अवधबिलास बरातिन भूलेउ कहहिं जाब अब नाहीं ॥ ब्याहि कुमार चारि कौशलपति बसैं इतै सबकाला । अस सुख कबहुं न लहे जन्मभरि जस अब लहे बिशाला ॥

संग्रह० ॥ सभामध्य शोभित दशरथ नृप सिंहासनआसीना । मुरछल चमर ढुरावत सेवक ठाढ़े परमप्रवीना ॥ तेहि औसर धावन द्वै आये कहे जोरि युगपानी । केकै महाराज के नंदन नाम युधाजित जानी ॥ आवत काशमीर नृपनंदन आगे हमहिं पठाये । खबरि देनहित राज राजमणि हम आये अतुराये॥ सुनि

आगमन युधाजित को तब कोशलपति हरषाये । तेहि अगवानी करन भरत रिपुसूदन को पठवाये ॥ कछुक दूरते भरत जाय निज मातुलको लैआये । जोहि युधाजित अवध भूपको बारबार शिरनाये ॥ उठेउ भूप सादर ताको मिलि दै आसन अनुरूपा । कह्यो युधाजित सों कुशली हैं कुलयुत केकै भूपा । राम लषण अरु भरत शत्रुहन मातुल किय परणामा ॥ मिले युधाजित दै आशिष बहु सिद्ध होय मन कामा ॥ कह्यो युधाजित पुनि दशरथसों हमहिं पिता पठवाये । बारबार पूंछी कुशलाई भूपति तमहिं उराये ॥ हमहिं कह्यो तुम जाहु अवधपुर भरत सुतासुत मोरा । लैआवहु तेहि लषण अनुजयुत लखन हेतु यहि ठोरा ॥ काशमीर ते चले प्रथम हम अवधनगर को आये । द्वै दिन भे निकसे बरातको ताते तुमहिं न पाये ॥ सुन्यो बिवाह भागिनेयनको होत जनकपुर माहीं । परम प्रमोदित चले बराबर आये हमहुं इहांहीं ॥ यहां प्रमोद पयोनिधि बाढ्यो रही भाग्य मम भारी । राम बिवाह बिलोकि बिलोचन ह्वैहैं हमहुं सुखारी ॥ दोहा ॥ सुनत युधाजितके बचन हरषेउ अवधभुवाल । बारबार सतकार करि कीन्हेउ स्याल निहाल ॥ छंदचौबोला ॥ दियो युधाजित को डेरा नृप भरत महल महँ जाई । सकल भांति सो पति भूपति किय करि सतकार बड़ाई ॥ रहेउ युधाजित चैन पाय अति ऐन अनूपम माहीं । भोजन समय चारि कुवँरनयुत आनेउ नृप तेहि काहीं ॥ हिलिमिलि भोजन करनलगे नृप ठानत हास बिलासा । कहेउ युधाजितसों कोशलपति सहित मंद मुखहासा ॥ करहु युधाजित तुम उछाह युत दूसर ब्याह हमारा । वृद्धजानि कीजे जनि मन भ्रम लेहु सुयश संसारा ॥ कहेउ युधाजित आप कुमारिन किये सदारन जोई । अभिलाषा यह अवशि रावरी पूरणकरिहैं सोई ॥ यहिबिधि हासबिलास करत नृप करि भोजन सुखसाने । उठि अचमन कीन्हे सुगंध जल सुभगबसन परिधाने ॥ निज निज भवन शयन हित गवने

आनँद मगन अपारा । सांझ समै पुनि सहित कुमारन नृपबैठे दरबारा ॥ मंत्री सचिव सुभट सरदारहु कवि द्विजगण पगुधारा । देवनटी गंधर्व सर्व युत करनलगीं नटसारा ॥ राम लषण अरु भरत शत्रुहन सहित युधाजित आये। पुत्रनको सनमुखके-कयि सुत निज समान बैठाये ॥

संग्रह० ॥ समय समाज बिदाभये सिगरे गय निज निज अस्थाना । परम प्रमोदित सकल बराती जागे होत बिहाना ॥ चौपाई ॥ अवध लोग मिथिलापुर बासी । आपुस में अति प्रीति प्रकासी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्रथम बरात लगनते आई । ताते पुर प्रमोद अधिकाई ॥ ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं । बढ़ै दिवस निशि बिधिसन कहहीं ॥ दोहा ॥ राम सीय शोभा अवधि सुकृति अवधि दोउ राज । जहँ तहँ पुर-जन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज ॥ चौपाई ॥ ज-नक सुकृति मूरति बैदेही । दशरथ सुकृत रामधरि देही ॥ इन सम काहु न शिव अवराधे । काहु न इन्ह समान फल साधे ॥ इनसम कोउ न भयउ जगमाहीं । है नहिं कतहुं न होनेउ नाहीं ॥ हम सब सकल सुकृत की रासी । भये जग जन्मि जनकपुर बासी ॥ जिन जानकी राम छबि देखी । को सुकृती हम सरिस बिशे-खी ॥ पुनि देखब रघुबीर ब्रिवाहू । लेब भली बिधि लोचन लाहू ॥ कहहिं परस्पर कोकिल बयनी । यह ब्रिवाह बड़लाभ सुनयनी ॥ बड़े भाग्य बिधि बात ब-नाई । नयन अतिथि होइहैं दोउ भाई ॥ दोहा ॥ बारहिं-बार सनेह बश जनक बोलाउब सीय । लेन आइहहिं

बंधु दोउ कोटिकाम कमनीय ॥ चोपाई ॥ बिबिधभांतिहो-इहि पहुनाई । प्रिय न काहि अस सासुरमाई ॥ तब तब रामहिं लषण निहारी । होइहहिं सब पुर लोग सुखारी ॥ सखि जस राम लषणकर जोटा । तैसेइ भूप संग दुइढोटा ॥ श्याम गौर सब अंगसुहाये । ते सब कहहिं देखि जे आये ॥ कहा एक मैं आजु निहारे । जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे ॥ भरत राम एकहिं अनुहारी । सहसा लखि न सकहिं नर नारी ॥ लषणशत्रुसूदन इकरूपा । नखशिखते सब अंग अनूपा ॥ मन भावहिं मुख बरणि न जाहीं । उपमा कहँ त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥ छंदहरिगोतिका ॥ उपमा न कोउ कह दास तुलसी कतहुं कबि कोबिद कहैं । बल बिनय बिद्याशील शोभा सिंधु इनसम यइअहैं ॥ पुरनारि सकलपसारि अंचल बिधिहिं बचन सुनावहीं । ब्याहि चारिउ भाइ इहिं पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

प्रियाशरण जी०दोहा ॥ यहि बिधि पुर नरनारि सब मगन प्रेम आनंद । नित देखत अति हर्षहिय सियमुख पूरणचंद ॥

इतिरामप्रताप चित्रकार बिरचिते श्रीसीताराम बिवाहसंग्रह परमानंद त्रैलोक्यमंगल तेरहवांप्रकरणसमाप्तः १३ ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

---०---

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

चौदहवांप्रकरण ॥

जनवासे में श्रीदशरथ महाराजके पास सतानन्दमुनि का लग्न पत्रिका लैके पधारना और श्रीरामचन्द्रजीके तैल चढ़ाय लौकिक व वैदिक नहछूचारादि करके जनकमहलको पधारना ॥

कृपानिवास०चौपाई॥ नेह बिदेह अछेह जनावैं। नित सन्मान अधिक सरसावैं॥ महामोद रसभरि उरमाहीं। बासर निशि मिसि भासत नाहीं॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ गये बीति कछुदिन यहि भांती। प्रमुदित पुरजन सकल बराती॥ मंगल मूल लगन दिन आवा। हिम ऋतु अगहन मास सुहावा॥ ग्रह तिथि नषत योग बर बारू। लगन शोधि बिधि कीन्ह बिचारू॥ पठैदीन्ह नारद सनसोई। गनी जनककेगणकन जोई॥ सुनीसकल लोगन यहबाता। कहहिं ज्योतिषी अपर बिधाता॥

संग्रह० ॥ लगन सुनत प्रमुदित मिथिलेशा। गौतम सुतको दियउ निदेशा॥

कृपानिवास० ॥ करि प्रकाश रनिवास सतानँद । पूजि बिनायक बाने सानँद ॥ करि कुलरीति बजाय बधाई । पंच शब्द ध्वनि मंगल गाई ॥

श्रीतुलसी०छंदसोहर॥ सीय रामहित पूजहिं गौरिगणेशहिं। पुरजन परिजन सहित प्रमोद नरेशहिं ॥ प्रथम हरदि बंदनकरि मंगल गावहिं । करि कुलरीति कलश थपि तेलचढ़ावहिं ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ लली तैल महदी जबधारी । परम सुहाग भाग भरि भारी ॥ बेद बिप्र युवती गण गावैं । उबटनि साज सखी अन्हवावैं ॥

संग्रह०॥इतै सकल करिकै कुलचारा। जनवासेमुनिवरपगुधारा॥

कृपानिवास० ॥ कनक थार धरि लगन सुपांती । भेट सोज सजि अगणित भांती ॥ भूषण बसनरत्न मणिमुक्ता । कञ्चन रचित द्रब्य बहु युक्ता ॥ कुंकुम केसर मलय कपूरे । धूप गंध धरि कोपर रूरे ॥ अक्षत दल श्रीफल पुंगी फल । मेवा मिश्री पकवान बहुत कल ॥ धरे अमित जन चले लिवाई । बनिठनि नारि सुवासिनि आई ॥ सतानन्द कर थार सुहाये । भूसुर बिपुल निगम सुरगाये । रंग अबीर बरषि कुसुमांजलि । बजत निशान गान युवती मिलि ॥ करत धूम जनवासे आये । भेटधरी कहि लगन सुनाये ॥ बांचि बशिष्ठ करी निजरीती । धारि यथा विधि पूजि सुप्रीती ॥

संग्रह० ॥ सतानन्द गे मांगि बिदाई । कह्योबशिष्ठ सुनहु नृपराई ॥ तैल चढ़ावन आदिक चारा । करहु काल्हि बर मंगल बारा ॥ सुनि गुरु बचन परम सुखदाई । समय जानि नृप सुतन बोलाई ॥

रघुराज०समुच्चयछं०चोबोला ॥ चारिहु कुवँर सहित भोजन करि नृप बैठे पर्यंका । राम लषण रिपुहन भरतहु को बैठाये निज

अंका । लगे सिखावन कुवँर सोहावन बेटा यह ससुरारी । कियो न चपलाई चलि परघर ह्वैहै हँसी तिहारी ॥ ससुर सास को बन्दन करियो मोहिं सम गुन्यो बिदेहू । बिना बोलाये उतै न जइयो नहिं वाग्यौ बहुगेहू ॥ बहुत हँसी करियो नहिं काहु सों उत्तर दियो सम्हारी । मिथिलापुर की चतुर नारि देहैं जुरि जुगुतिन गारी॥ सुनत बैन पितु राम बन्धुजन लज्जित शीश नवाये। करजोरे भोरे इव बैठे मनहींमन मुसुक्याये॥यतनेहीमें प्रतीहार तहँ आशुहि खबरि जनाये । मिथिलाधिप व्योहार पठाये सुमति सचिवलै आये ॥ उठेउ हरषि देखन कोशलपति सहित कुमार सिधारा । एक एक बस्तुन के लागे पूरण प्रथित पहारा ॥ बहु बिधान पकवानन के तहँ पान बिधानहु नाना । लघुते लै परजंतु बस्तु बडिबसन बिभूषणनाना ॥ निज निज अभिलाषन अनुसारन पाये सकल बराती । रही न कोहु के कछुक कामना तोषित भे सबभांती ॥ भई सांझ भूपति सन्ध्याकरि बैठेउ कुवँर समेता । पूर्वचित्ति मैनका उर्बशी रम्भा आदि सुचेता । बिश्वावसु तुम्बुरु आदिक तहँ करन लगे कलगाना । साजि समाज बिराजि बिभूषण नचहिं अप्सरा नाना ॥ मन अभिलाषित भूप दीन तिन बसन बिभूषण नाना । भाइन सहित बिलोकि राम छवि भूलेउ भान अपाना ॥ शयनकाल गुनि भूप कुमारन निज निज भवन पठाई । महामोद महँ मगन महीपति शयन कियउ गृहजाई ॥ दोहा ॥ नाच गान व्यवधान महँ खानपान सनमान। मगन बराती जगतही पायो पुलकि बिहान ॥ सोरठा ॥ बन्दीवृंद अपार ब्रह्म मुहूरत जानिकै । अवध भूपके द्वार बदन लगे बिरदावली ॥ छन्द ॥ जय जय इक्ष्वाकु बंश बारिधि के चन्दिरे । धर्म के निशान ज्ञान मान मोद मन्दिरै ॥ भानु बंश भानु भूप कोशलाधिराजहौ । राज के समाज के दराज शीशताजहौ ॥ आपने सुबंश में बिचारि राम ब्याहको । अंशुमान आवते भरे लखै उमाहको ॥ तजौ सुसैन चैन सों सनींद नैन खोलिये ।

प्रदान अर्घ्य कीजिये सुबेद मंत्र बोलिये ॥ दिनेश भीति मानि तार वृन्दहू बिलाइगे। उलूक चूक हूक मानि मूक ह्वै पराइगे॥ नरेश आप मित्रसे प्रफुल्ल कञ्ज वृन्द भे। अरीनसे अनेक कैरवानि वृन्दमन्दभे ॥ सखा सुमंत्रि बंधु बर्ग देहु देव दर्शने। स्वपक्ष रक्ष दक्ष आप चक्रज्यों सुदर्शने॥ मुकुंद ध्यान ठानिकै प्रभात कर्म कीजिये। अनेक बिप्र वृंदको अनेक दान दीजिये॥ दोहा॥ अज नंदन आनन्द भरि अभिबंदन हितद्वार। वृन्दनके वृन्दन खडे सचिव सुहृद सरदार॥ सुनि बंदिनके बरबचन निशा व्यतीत बिचारि। जग के पति जागतभये नयनन नींद निकारि॥ पितुके पूरुब कछु जगे चारिहु राजकुमार ॥ राम दरश तिन आयकिय तीनहुं बंधु उदार॥ रघुनंदन भ्रातन सहित पितु दरशन कियजाय। चरण बंदि आशिषलहेगमने पाइ रजाय॥ प्रातकृत्य निरबाहि सब सुरभित सलिल न हाय। अर्घ प्रदानादिक किये दिय द्विजदान बुलाय॥ रघुनंदन चंदनदिये गायत्री जप कीन। नित्य नेम निर्बाहि सब बंधुन बोलि प्रबीन॥ बसन बिभूषण पहिरिकै करि सुंदर शृंगार। चले चारिहू बंधु तहँ करन पिता दरबार॥ दशरथ इतै प्रभात को नित्य नेम निरवाहि। बैठे सभासुरेश समबोलेउ कुलगुरु काहि॥ मार्कंडेयादिक मुनिनलिये तुरंत बोलाइ। बिश्वामित्रहि बोलि पुनि बोलेउ कौशलराइ॥ चौपाई॥ तैल चढ़ावन आदि प्रचारा। करवाइय जस होइ विचारा॥ पुनि करवाइय मुनि गोदाना। मंगल मण्डित वेद बिधाना॥ सुनि नृपबचन परम अहलादी। बिश्वामित्र बशिष्ठहु आदी॥

संग्रह॥ रामचन्द्रकोलिये बुलाई। कृत्य अरंभ किये मुनिराई॥

रघुराज॰॥ पूजन गौरि गणेश कराये। ते निज रूप प्रत्यक्ष देखाये॥ पूजन लेन ब्याज सब देवा। आवहिं करन राम की सेवा॥ करि बाचन पुण्याह सुखारी। लिये बोलि द्विज पंच कुमारी॥ निकट पुरट घट चट पट धरिकै। सदलसदीप अमल

जल भरिकै ॥ नवलपीतपट भूषण नाना। विप्रकुमारी करिपरि-
धाना ॥ लै हरिद्रदूर्वा तेहि बेला। प्रभुकहँ लगी चढ़ावनतेला ॥
जस जस व्याहकृत्य तहँ होती। तस तस तिनतनलाजउदोती॥
दोहा ॥ तेल चढ़ावहिं कन्यका प्रभुको बदन निहारि। तकि तकि
छबि छबि छकिरहै जकि जकि मृदुल निहारि ॥ छंदचौबोला ॥शिर
कंधन जानुनी पगन महँ फेरहि पाणि कुमारी। मनहुं पूजि
शशि नील रतनगिरि उतरहि कुमुद सुखारी ॥ परिकर सचिवा-
दिक अहलादित करहिं निछावरि आई। मणिगण सुबरण बसन
बिभूषण पावहिं धाय धवाई ॥ रतनालिका बीरमणि ठाढ़े राई-
लोन उतारैं। राम सुछबि लखि लखि दृग छकि छकि मानहुं
तन मन वारैं ॥ जासु प्रसाद गणेश आदि सुरहरैं बिघनकरि
मंगल। सो प्रभु शिरनाव मंगल हित गणपति थापि कमंडल॥
नभमहँ बाजन बजत बिबिधबिधि गावहिं देवनदारा। मच्यो
हुलास महाजनवासे द्विज धनलहैं अपारा॥ विश्वामित्र बशिष्ठ
राम को दिये तेल चढ़वाई। भये अनंदित सकल बराती बहु
धन दिये लुटाई ॥

संग्रह० ॥ करवायउ गोदान रामको गुरु बशिष्ठ मुदभीना।
चारि कुमारनयुत शोभितभे सिंहासन आसीना ॥

रघुराज० ॥ जैसे चारिहु लोकपालयुत राजतसभा बिधाता।
तैसेहि चारि कुमारनतेयुत दशरथ भूप बिभाता ॥ ताहिसमय
जनक पठवाये सतानंद मुनि आये। उठि आसन दीन्ह्यो अव-
नी पति चरणकमल शिरनाये ॥ विश्वामित्र बशिष्ठ आदि मुनि
मंडल भूप बोलाये। यथायोग्य आसनदै सबको बारबार शिर
नाये ॥ गौतम तनय कह्यो भूपतिसों बिनती कियेउ बिदेहू।
बीते चारिदंड यामिनिके व्याह लगन गुनिलेहू ॥ गोधूली बेला
महँ ह्वैहै काल्हि द्वारको चारा। महाराज लै चारि मारन करैं
पवित्र अगारा ॥ सुनत चक्रवर्त्ती अवनीपति मन अभिलषित
सुबानी। गदगदकंठ सुमिरि बिकुंठपति कह्यो जोरि युगपानी ॥

संग्रह० ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ राम को अभ्युदय श्राद्ध करायो। बिधिपूर्बक सों तैल चढ़ायो पुनि गोदान दिवायो ॥

रघुराज० ॥ नहछू काल्हिकराय महामुनि सुंदर साजिबराता। धेनुधूलि बेलामहँ आउब कहहु जाय मुनि बाता ॥ दोउ ब्रह्मर्षि बशिष्ठ गाधिसुत सहित जनकपहँ जाहू। बेद बिधान साज सब साजहु जस भाषैं मुनिनाहू। सुनि कै सतानंद सानंदित लै रघुकुल गुरु संगा। बिश्वामित्र समेत चलेउ तहँ रँगेउ प्रीति के रंगा ॥ मुनिवर जाय जनक मन्दिर महँ पाय परम सतकारा। साजे सकल ब्याह सामग्री जस बिधि बेद उचारा। पुनि बशिष्ठ कौशिक बिदेह ढिग कही मनोहर बानी। सकल चार ह्वै गयउ उभय दिशि रह्यो ब्याह सुख खानी ॥ दोहा ॥ यथा हुलास प्रकास है राउर के रनिवास। तैसहि हास विलास सुख दशरथ के जनवास ॥ दाता तुम दशरथ अहैं आज ग्रहीता दान। यह सुख मुख कहिजात नहिं समधी उभयसमान ॥ सुनि बशिष्ठ के बैन बर बोलेउ बचन बिदेह। दोऊ दशरथ भूप हैं का विचार निज गेह ॥ मेरो घर कुल राज धन सब दशरथको आय। एक अहै मिथिला अवध दूसर नाहिंदेखाय॥सुनिबिदेहके बैनबर पाय बशिष्ठ प्रमोद। जनवासे गमनत भये लखि बिनोद चहुं कोद ॥ छंद चौबोला ॥ फैलिगई यह बात चहूं कित रनिवासे जनवासे। ह्वैहै काल्हि बिवाह रामको सुनि सब भये हुलासे॥ खैर भैर मचिरह्यो नगर महँ घर घर होतं तयारी। अवध लोग इतसजनि सजावत काल्हि बरात सिधारी॥यकयक रघुबंशिनके डेरनहोन लगे नटसारा। बैठे राम ब्याह सुख भाषत होतभयो भिनसारा ॥ नहिं जनवासे नहिं रनिवासे नहिं पुरके कोउ सोये। करत तयारी महासुखारी जागतही रविजोये ॥ दशरथ सुतन कराय बियारी शयन भवन पठवाई। पौढ़ेउ यदपि भूप पर्यंकहु तदपि नींद नहिं आई ॥ बात कहत इमि रातिसिरानी लाग्यो होन प्रभाता। द्वार देशमहँ आवन लागे बंदी बिरद बिख्याता॥

भूपति उठि उछाह बश आतुर प्रातकृत्य सबकरिकै। देवै दान बोलाय द्विजनको सुतन बोलि सुख भरिकै॥ करि जलदी ज्योनार बारयुत साधारण पट पहिरी। बैठेउ आय राज सिंहासन जेहि सुखमा अति गहिरी॥ बोलवाये बशिष्ठ कौशिकको सचिव सुमंत तुरंता। दियो निदेश बरात सजावन सुमिरि चरण श्रीकंता॥ पुनि बोलेउ कौशिक बशिष्ठसों नाथ मुहूरत भाखौ। तौन मुहूरत साधिचलो इत लै बरात सुखचाखौ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ मुहूरत शंकर भणित बनाई। कह्यो भूपसों बचन बिनोदित रहे याम दिनराई॥

संग्रह० ॥ नहछूचार करहु दूलहको कुलरीती जस कीजे। अभिजित मुहूरतमें बरातको लै नृपमणि चलिदीजे॥

रघुराज० धेनु धूलिबेला रेला सुखहोय द्वारको चारा। याम याम यामिनी लगन शुभ पाणिग्रहण सुखसारा॥ अर्धरात्रिलो सकल चारकरि आयजाहु जनवासे। होय बिलंब कुमारनको नहिं सोवहिं सुखी सुपासे॥ कौशिक संवत जुबानीबर सुनि बशिष्ठकी भाखी। कह्यो तुरंतहि बचन सुमंतहि महामोद मिति नाखी॥ सुनत सुमन्त तुरन्त हजारन परिचारन बोलवाय। डेरन डेरन रघुबंशिनके शासन सपदि पठाये॥ आवैं आज पहरदिन बाकी सजि समाज सरदारा। सजे मत्तमातंग तुरंगहु पैदर सुरथ अपारा॥ धावन धाय पुकारन लागे जस सुमन्त कहिदीने। आवन लगे बराती सजिसजि शक्र सरिस सुख भीने। एकओर बाजिन की राजी एकओर गज वृन्दा। यकओर रथ के यूथ पंथ महँ पैदर खड़े सनन्दा॥ नौबत भरनलगी चारों दिशि बाजे बिबिध नगारे। हिंहिंनाते हय बर घहनाते घंटा शंख अपारे॥

संग्रह०दोहा ॥ समय जानि श्री राम को बुलवायउ भूआर। नहछू करवावन लगे जस कुल को व्यवहार॥

रघुराज०चौपाई ॥ समय पाय मिथिलापुर केरी। आई नाउनि सजी घनेरी॥ अवध भूप पहँ खबरि जनाई। नहछू करन हेत

हम आई ॥ सुनत जनकपुर नाउनि राजा। लीन बोलाय जा-
नि बड़ काजा॥ सजी शृंगारन नापित नारी। मनहुं मनोज
बधू छबिवारी ॥

सग्रह० ॥ गुरु आयसु प्रभु मज्जन कीना। पीताम्बर युग
धारि नवीना ॥ रतन जड़ित चौकी अभिरामा। तेहि पर बैठे
छबिनिधि रामा ॥

रघुराज० ॥ मिथिलापुरकी नाउनि आई। दूलह देखि दून सुख
पाई ॥ युग श्यामल युग गौर कुमारा। हँसी करन लखिकियो
बिचारा ॥ तिन महँ चतुर एक छबि छाई। करि कटाक्ष बोली
मुसक्याई ॥ यगल गौर युग श्याम कुमारा। एकहि पितुके चा-
रिहु बारा ॥ सुनि नृपकह यह इहैं बिवेका। एक मातु पितु होत
अनेका ॥ दोहा ॥ सुनत सुघरि नापित घरनि हँसि रस वश अ-
नुरागि। नख करतनि लै कंजकर नखनछुआवनलागि ॥ चौपाई ॥
नख करतनि नख परश सोहाये। मनु ढिग बिधुन बिधुन्तुद
आये ॥ कनक थार भरि नीर उरायनि। लागी देन महाउर
नायनि ॥ भरि भाजन जावक बडभागी। चरणकमल कर धोवन
लागी ॥ परत कमल पदतल अरुणाई। नाउनि जावक गई
भुलाई ॥ जिन पद ललित बिश्व अघखोवै। धनिनाउनि ते पद
करधोवै ॥ तरसत जिन पदरजकहँ देवा। नाउनि करति सुतिन
पद सेवा ॥ बसहिं स्वयंभु शंभुचित जेई। नाउनि करनिमलति
पद तेई ॥ जेपद मुनिमानससरबासी। ते नाउनि कर करत
प्रकासी ॥ जिनहिं न तुलित मुक्तिप्रद कासी। ते पद भे नाउनि
कर वासी ॥ भरयो कमंडलु बिधि जिनपदजल। सोइ सुरसरि
ह्वै हरति बिश्व मल ॥ तेइपदपंकज पाणि पखारति। नाउनि
दशपितु पतिकुल तारति ॥ पतितन पावन जिन पद पानी।
धनिनाउनि धोवत निजपानी ॥ दोहा ॥ निजकर कठिन बिचारि
अति प्रभुपद कोमल कंज। परसति पुनिडरपति हिये छनक
रंज छनरंज ॥ चौपाई ॥ देति महाउर चित्र बिचित्रा। युग पद

पंकज बिश्व पवित्रा ॥ लसहिं चिह्न प्रभु पदतल जेते । नाउनि लिखति उर पद तेते ॥ जानि राम नाउनि चतुराई । दीन्ह्यो ज्ञान हरयो जड़ताई ॥ जानि जगतपति सो बड़भागी । लीन्ह्यो नेग भक्तिरस मांगी ॥ दीन्हीं भक्ति ताहि रघुराई । चली भवन सो शीश नवाई ॥ जड़ित जवाहिर भूषण नाना । लगेदेन नृप नेग महाना ॥ सो कह लह्यो नेग हम जैसो । अतिदुर्लभ पावत कोउ ऐसो ॥ असकहि प्रमुदित नापित रमनी । मंगलगीत गावती गमनी ॥ इत अप्सरगण गावन लागा । रामव्याह मंगल शुभ रागा ॥ गावहिं मंगल रागसहाना । रामसुयश पावन कर काना ॥ गुरुबशिष्ठ नहछूकर चारा । करवायो जस बंशप्रचारा ॥ कंकण गुंजा गुच्छन केरे । कनककलित लगि रतन घनेरे ॥

संग्रह०दोहा ॥ गुरुबशिष्ठ रघुनंद के कंकण बांध्यो हाथ । बीर बहूटिन कंजको मानहुंकीन्हो साथ ॥

रघुराज०चौपाई ॥ पुनिबोल्यो दशरथ नृपराई । व्याहबसन पहिरावहु जाई । लागेउ आपहु करन पोशाका । भिन्नभवन चलि कै सुखछाका ॥ यहिविधि करिनहछूकर चारा । सजन भवनगे राजकुमारा ॥ तहँ परिचर पहिरावनलागे । सचिव सुमंत बतावन लागे ॥ बहुमणि मंडित मौर प्रकाशी । करतमंद दिनकर रुचिराशी ॥ सो रघुराजहिं शीश बिराजा । मनहुँ नीलमणि गिरि दिनराजा ॥ तुर्रा तड़प उभय दिशि कैसी । मेदुर मेघ बकावलि जैसी ॥ काकपक्षबिच भाल सोहावत । जनु रणराहु जीति शशि आवत ॥ भाल बिशाल बीच अति लोना । लसत धात्रि करदीन दिठोना ॥ मनहुं मयंक मीत मनमानी । शृंगारहि लीन्हो उरआनी ॥ भृकुटि बंक मनु मदन कमानू ॥ तिलक रेख जनु शर संधानू ॥ दोहा ॥ अमल कपोलन के उपर युग चख डोरे लाल । मनहुं उछलि सरते लसत फँसे मीन युग जाल ॥ सवैया ॥ को बरणै रघुनन्दन के दृग मीन औ खंजन कंजन जीते । सैनके सैफन कीन्हे कटा जिन मानिनि मान के दुर्ग

अजीते ॥ हैं रतनारे बड़े अनियारे सदा रघुराजके प्यारे सुजीते। नीतिसों प्रीतिसों प्रेम प्रतीतिसों आजलों ना रसरीतिसों रीते॥ दोहा॥ कुंडल काननमें लसैं मञ्जुल मकराकार। मनहुं सुछबि युगवापिकन झलकत झख शृंगार॥ सवैया॥ पीत सुरंग दियो पहिराय चमाचम चारु मनोहर बागो। मंडित मोतिन जाल विशाल बिचै बिच हीरन को सुम लागो॥ घेरु बड़ो मनो फेरु सो फावित मेरु मयूखनसों द्युति जागो। तापर भावै बिभाकर ज्यों मणिमौर कहै रघुराज सपागो॥ कटि में पटुको छविछाय रह्यो क्षितिछ्वै छबि छोरनकी छहरैं। पच रंग मणीन की ढाल बँधी करवाल विशाल बिभा भहरैं॥ पद अम्बर सम्बर शत्रुरचो जनु त्यों पदत्राण प्रभा लहरैं। नव नूपुर ते पद पंकज में रघुराज भजे भवशोक हरैं॥ हरिगीतिकाछन्द॥ हाटक कटक करमें चटक हीरनछटा छूटैं घनी। नव रतन अंगद बाहु मूल अतूल बिचबिच बहुमनी॥ माणिक सुपन्नापदिक मोतिन जाल सोहत सेहरा। मन मीन फाँसन हेत मनु मनसिजरच्यो कल केहरा॥ बैकुण्ठपति के कण्ठ तेज अकुण्ठ कंठाभरन हैं। मनु अंबुनिधि सुत कम्बु बन्धुहि मिलत लम्ब सुकरन हैं॥ मणि इन्द्र नील सुपद्मराग बिभागकृत सेल्ही भली। मनुमेरु चारिहु ओर तारन कलित मारुत की गली॥ हियरो हरति हेरतहि हठि हियहीरकी हारावली। मनु तरणि तेजहि तापि शशिबल तड़पती तारावली॥ धात्री रुचिर रतनालिका कज्जल दृगनि देतीभई। निज पाणि राईलोन बरन उतारि पावक में दई॥ चुटिकीनको चटकाय पुनि बलिजाय बारहिबारसो। आनन्द अम्बु बहाय अम्बक सुमिरि त्र्यंबक बारसो॥ कर जोरि बोली गुरुबशिष्ठहि यंत्र मंत्र न बांधिये। नहिं दीठि लागे ललन के यहि हेतु हर अवराधिये॥ गुरु कह्यो इनके डीठि मूँठि लागती अस को कहै। दुनिया भरे की डीठि इन के मूठि में सब दिन रहै॥ उतै भूप पहिरे पीत पट दीन्ह्यो मुकुट पुखराज को। पुखराज के उरहार जामा जर-

कसी सुख साज को ॥ कटिकसो पटुको पीत माला पहिरि पीत प्रसून को । मिथिलेश को समधीसजेउ सुख दून देखन सूनको ॥ यक कर सहजकरवाल तुलसी माल यक कर सोहई । रघुराज पितु ऋतुराजसो राजन समाजन सोहई ॥

संग्रह० ॥ दूलह लखनहित भूपदशरथ सुरपतीसम आयऊ। अवलोकि सुतकी भेषरचना राउ अति सुखपायऊ ॥

श्रीतुलसी० दोहा ॥ धेनु धूलिबेला बिमल सकल सुमंगल मूल । बिप्रन कहेउ बिदेह सन जानि समय अनुकूल ॥ चौपाई ॥ उपरोहितहि कहेउ नरनाहा । अबबिलंब कर कारण काहा । सतानंद तब सचिव बुलाये । मंगल कलश साजि सब लाये ॥ शंख निशान पणवबहुबाजे । मंगल कलश शकुन शुभ साजे ॥ सुभग सुआसिनि गावहिं गीता । करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता ॥ लेनचले सादर यहि भांती । गयेजहां जनवास बराती ॥ कोशल पतिकर देखिसमाजू । अतिलघुलाग तिन्हहिंसुरराजू ॥

रामप्रियाशरण० ॥ सतानंद दशरथ ढिग गयऊ । नृपउठि पद शिर नावत भयऊ ॥ पुनि सादर बैठायउ राजा । हरषे दशरथ सहित समाजा ॥ जेतनी बस्तु भेट हित गयऊ । नृप सम्मुखपधरावत भयऊ ॥ लखि राजा प्रमोदमन भारी । बांटदईयाचकन्ह हँकारी ॥ कछु बचिगई लेत कोउ नाहीं । धरी रही जनवासे माहीं ॥ बहुरि सतानंद कहि मृदुबानी । मंगल मोद परम सुखखानी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ भयउ समय अबधारिय पाऊ । यह सुनि परा निशानन घाऊ ॥

रघुराज०छंदहरिगीतका ॥तब कह्यो बचन बशिष्ठ यहि छन भूप परिछनकीजिये । दूलह चढ़ाय तुरंगमहँ पुनि गमनशासन दीजि-

ये ॥ तबतुरततरल्ल तुरंग चारु समाज साज मनीनकी। अनुपम सुछबि मोहरो लगाम ललाम दुमची जीनकी॥ पगमें पुरट पैजन परेहै कलसु हीरनके जडे। चामर सड़ाके अतिप्रभाके गासिया मखमलमड़े॥ पायरसुपन्नाके बने कलँगी कलित मुनि गुच्छकी। यदि जमै मंदिर माथ सुरतरु ताहुकी छबि तुच्छकी॥ चोटी गुही मोती अमल तिन जानु लोलर लरकती। मनु शरद बारिद की घटा जलबिंदु अवली ढरकती॥

संग्रह०॥ अस सज्यो बाजि बिलोकि गुरु रघुलाल को आज्ञा दये। श्रीराम तुरंग सवारभे छबि देखि मुनि प्रमुदित भये॥

रघुराज०॥ लै पाणि दधि अक्षत सगुन दीन्ह्यो त्रिकुटि टिकुली भली। मानो मयंक निशंक कीन्ह्यो अंक निज सुत बुधबली॥ पुनि दियो दधि अक्षतन बिंदु बिशाल भाल भुआलहै। लागेउ उतारन आरती तेहिकाल होतनिहालहै॥ बरषहिं सुमन सुर देत दुंदुभि करत जयजयकारको। बाजे बजाय बरात महँ जन लहत मोद अपारको॥

श्रीतुलसी०चौ०॥ गुरुहि पूछि करि कुलबिधि राजा। चले संग मुनि साधु समाजा॥

संग्रह०॥ शत्रुंजय गज भूपमँगाई। चढ़े मुदित मन हरि शिरनाई॥

रघुराज०दोहा॥ लसेउ नरेश सुनागपै मणिगण दिये लुटाय। मनहुँ उयउ उदयाचलै दिनकर कर छिटकाय॥ होतसवार भुआरके परयो निशानन घाव॥ गुरु कौशिक को युगलगज लिय चढ़ाय तहँ राव॥

श्रीतुलसी०दोहा॥ भाग्य बिभव अवधेश कर देखिदेव ब्रह्मादि। लगे सराहन सहस मुख जानि जन्म निज बादि॥ चौपाई॥ सुरन सुमंगल अवसर जाना। बरषहिं सुमन बजाइ निशाना॥ शिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा।

चढ़े विमानन्ह नाना यूथा ॥ प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू । चले बिलोकन राम बिबाहू ॥

संग्रह० ॥ लखिबरातकी सुंदरताई । कहतपरस्पर सुरहरषाई ॥

देवस्वामोपदरा० ॥ बराती भयउ मनहुं ऋतुराज । उत बरषाको साज ॥ नारि गान कोइल जनु कुहुकत डंका घनसो गाज । उठत सुगंधमहीसे चहुंदिशि बरसत रसअंदाज ॥ लाल लाल कर पल्लव लाखन फूले सुमन समाज । नभमें उड़त मनहुं बकमाला होय न सकत अंदाज ॥ मनमें मानस पंकज फूले छूटिगई जनु लाज । बहुत अरगजा पंकमहीमें लहरतजीव अनाज ॥ पूरणकामदेव नर किन्नर सिद्धहोत सबकाज । दामिनिसे भूषण असिचमकत दोउ भूपति शिरताज ॥

संग्रह०दोहा ॥ बिप्रनिगम धुनि बंदिजन करहिं सुयशउच्चार । बाजिनपै चहुंदिशिलसैं रघुकुल राजकुमार ॥

रघुराज०छंद चौबोला ॥ चारिहु बंधु तुरंगन सोहत अंग अनंग लजावन । यक जोरी मूरति मरकतसी युगलपदिक छबिछावन । जात नचावत कछुक चलावत पुनि झमकावत बाजी । बाहन युत शिवसुवन लजावत भावत लखन समाजी ॥ जस जस नचत तुरंग तरलगति तिल तिल पगमहि काटै । तस तस छमछमात पैंजनि धुनि सुरन ठाटबहु ठाटै । सखा उछालत ऊरधबाजिन तेहिथल पुनि लै आवैं । जन समूह नहिं परस होत कोउ अद्भुत कला दिखावैं ॥ राम बंधुयुत बीच बिराजत चहुँकित सखा सोहाये । तिनपाछे शत्रुंजय गजपर अवध नाथ अति भाये ॥ चढ़े मतंग महीप उभय दिशि गुरु अरु कौशिक राजैं । जनु ऐरापति चढ़ेउ पुरंदर शुक्र वृहस्पति भ्राजैं ॥ देखि देखि दशरथ को सुरमुनि कहहिं कौन अस भागी । त्रिभुवनपति को चलेउ बिवाहन पुत्र प्रेमरस पागी ॥ जस जस झमकत नचत रचत गति रामबाजि अभिरामा । तसतसदिल

डरपत दशरथको छुटै न पग कहुँ ठामा॥ कोउ झमकावत कोउ सिखवावत कोउ दरशावत सोई। कोउ मुरकावत कोउ बढ़ि जावत रुकिजावत रचि कोई॥ राजकुमार कला दरशावत पावत परम प्रशंसा। सखा प्रमोदित परामिलावत जहँ रघुकुल अवतंसा॥ महँ बरोबर बैस सखा सब लहि समान सनमाना। भूषण बसन समान सुहावन को समान तिन आना॥ वृद्ध वृद्ध रघुबंशी कुलके पीछे सिखवत जाहीं। करहु न चंचलता बहु लालन अवधनगर यहनाहीं॥ वृद्धनबचन सुनत सकुचत अति दूलह भूपदुलारे। मंदहि मंद चलावत बाजिन देते सखा इशारे॥ तनक बाग ऊंची करिदेते नभ उड़िजात तुरंगा। चमकिबीजुरी सो पुनि बहुरत नहिंकंपत कछु अंगा॥ चलत हंसगति कहुँ मयूरगति कतहुँश्येनगति लेहीं। उच्चैश्रवा करत मद रद हद मानहुं गरुड़सनेही॥ राम तुरंग नाम सुग्रीवहि इसव लषणको बाजी। भरत अश्वको पुहुप बलाहक रिपुहन मेघ मिजाजी॥

संग्रह० ॥ राम बनाके दुहुँदिशि चामर मुरछल करहीं आछे। छत्र सुरजमुखि लिये मुदित जन चलत अश्वके पाछे॥

रघुराज०छंद॥ आवत जानि बरात जनकपुर मंगल साज सवाँरी। यूथयूथ घट पुरट शीश धरि खड़ी बिलोकत नारी॥ खबर राजमंदिर महँ पहुँची आवत चली बराता। कहेउ बिदेह बोलि लक्ष्मीनिधि जाव लेन तुम ताता॥ जनक कुमार सुनत चढ़ि बाजी चलेउ लेन अगवानी। धरे कनकघट शिर सँगवातिय चलीं सहस छबि खानी॥ तेहि बिधि औरहु बहु पुर नारी धरे कलश युत दीपा। गावत मंगल गीत सोहावन दूलह लखन समीपा॥ सजनी सजी बजी मिथिलाकी तिन मिलि रूप छिपाई। शची गिरा गौरी आदिक सब सुरतिय सुखित सिधाई॥ दोहा॥ धरे शीश कञ्चन कलश गावत मंगल गीत। दूलह देखन निकट ते गमनी परम पुनीत॥ मिथिलापुर की कोउसखी बोली भरी अनंद। करहि मंद सखि चंद को नृप नंदन मुख चंद॥ पद॥

ब्याहन आये दशरथ लाल । माथे मौर पीत अम्बर तन राजत हिय बनमाल ॥ सुन्दर तरल तुरँग भमकावत भावत अतियहि काल । श्री रघुराज निछावरि याकी त्रिभुवन छबि तिहुँ काल ॥ धनि धनि सीता जनक दुलारी । जाके हित सुन्दर बनरा यह बनिश्रायो मनहारी ॥ हम सीता बालकपनते यक संग रही खेलारी । श्रीरघुराज आज अब यहि सम कोउ नहिं परत निहारी ॥ गावहु मंगल गीत सखीरी । अस अवसर कबहूं नहिं पैहौ पुनि बिधि नाहिं लिखीरी ॥ कोशलपति किशोर चितचोर सु छबि जिन नाहिं लखीरी । तेहि रघुराज कहत जगजीवत सति बिष बेलि भखीरी ॥ दोहा ॥ लक्ष्मीनिधि के संगमें सोहत राज कुमार । छटे छबीले छबि भरे गवने पंच हजार ॥ अगवानी आये निकट रुकिगै सकल बरात । लक्ष्मीनिधि बंदन कियो नृप पूँछी कुशलात ॥ सुत बिदेहको नेहवश अवधनाथ हरषाय । पकरिपाणि निज नाग में लीन्हेउ चटकचढ़ाय ॥ नारिन शीशन पुरट घट दीपावली सोहाय । मनहुँ भई थिर बीजुरी लै तारन समुदाय । रानि सुनैना सहचरी तंदुल दधि भरि थार । राम भाल टिकुली दई सुमिरि महेश कुमार ॥ महामणिन के छत्र पुनि राका इंदुअकार । पठवाये मिथिलेशके दूलहके हितचार ॥ कोशल छत्र उतारि कै मिथिला छत्र लगाय । मिथिलाके परिकरचले दूलह संग सुहाय ॥ अगवानीको चार करि गमनी चारु बरात । राजकुवँर चहुं ओरके बाजि नचावत जात ॥ छंद हरिगीतिका ॥ गमनत बरात सोहत यहि बिधि निकट शहर पनाहके । आई जबै पुरलोग सब देखत भरे सुउमाहके ॥ जुरि सकल जन यूथन अनेकन त्यों बरूथन नारिके । देखत बरात अघात नहिं बतरात बचन बिचारिके ॥ हमरे सुकृत फल सीयराम बिवाह मिथिलापुर भयो । को आज हम सम धन्य महितल सुफल लोचन करिलयो ॥ कोउ कहैं दूलह देखु सियको मदन निउछावरि करो । नहिं रामसम कोउ

भुवन सुंदर तोरि तृण धरणी धरो ॥ अस कहहिं युवती परस्पर भुकिरहीं दूलह देखने । भरि प्रीति गावहिं गीत मंगल मोद मगन अलेखने ॥ सूर्यास्त समय बरात प्रविशी जनक नगरसुहावनो । देखत बराती नगर सौभग इन्द्र नगर लजावनो ॥ फहरैं पताके तुंग चहुंकित बिबिध रंग अनंगसे । तोरण कनक तड़िता तड़प घट पुरटद्वार पतंगसे ॥ बर रंभ खंभ खड़े अनेकन द्वार द्वार बिराजहीं । अतिशय उतंग अवास हिमगिरि शृङ्गशोभ पराजहीं ॥ सींची गली सुरभित सलिल बिस्तार बृहद बजार को । द्रविणाधिपति सम बणिक बैठे करहिं बस्तु प्रचारको ॥

बिश्वनाथसिंह० चौपाई ॥ जोहन हित तिय चढ़ीं अटारी । आनँदमय सब खबरि बिसारी ॥ कोऊ केश अध गूँथत धाई । फूलन झरत परम छबि छाई ॥ छंद हरिगीतिका ॥ झरि कुसुम तिनके कचनतें क्षितिपरत अति छबि पावहीं । जनु व्योमतें हरि ब्याह निरखन अवनि उडुगण आवहीं ॥ कोउ एकही पगदिये जावक राम जोहनको चली । कोउ एकही दृगदिये अंजनअटन पट लागी भली ॥ दोहा ॥ बिनहि कसे कोउ कंचुकी चढ़ी दरश हितधाइ । अति उत्कंठित कोउ चढ़ी बांधि किंकिणी पाइ ॥

रघुराजसिंह० छंदहरिगीतिका ॥ शारद घटाऊंची अटाछन छटासी युवती चढ़ीं । अति हरषि बरषि प्रसून लाजा बरलखन चोपहिं मढ़ीं ॥ आई बरात बजारमहँ नर नारि दूलह देखहीं । दशरथ जनक अरुभाग आपन अधिक उरहि उरेखहीं ॥ घर घर बजत बाजन बिबिध मिथिलापुरी धुनिमय भयी । देते बरातिन नारि नर करि युक्तिगारी रसमयी ॥ सुनिकै बराती मुदितमन मुसक्यायरहत निहारिकै । को कहै परम उछाह सबउर जनकपुर नर नारिकै ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ दशरथ पूरण पर्ब बिधु उदित समय संयोग । जनक नगर सर कुमुदगण तुलसी प्रमुदित लो-

ग ॥चौपाई॥ देखि जनकपुर सुर अनुरागे । निजनिज लोक सबहि लघुलागे ॥ चितवहिं चकित बिचित्र बिताना । रचना सकल अलौकिकनाना ॥ नगरनारिनर रूपनिधाना । सुघर सुधर्म सुशील सुजाना । तिनहिं देखि सब सुरपुरनारी । भये नखत जनु बिधु उजियारी ॥ बिधिहि भयउ आचरजबिशेखी । निजकरणी कछु कतहुँ न देखी॥ दोहा ॥ शिव समुझाये देव सब जनि आचरज भुलाहु । हृदय बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर विवाहु ॥ चौपाई ॥ जिनकर नाम लेत जगमाहीं । सकल अमंगल मूल नशाहीं ॥ करतल होहिं पदारथ चारी । तेइ सियराम कहेउ कामारी ॥ यहि बिधि शंभु सुरन समुझावा । पुनि आगे बरबसह चलावा ॥ देवन देखे दशरथ जाता । महामोद मन पुलकित गाता ॥ साधु समाज संग महिदेवा । जनु तनुधरे करहिं सुरसेवा ॥ सोहत साथ सुभग सुतचारी । जनु अपवर्ग सकल तनुधारी ॥ मरकत कनक बरण बर जोरी । देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी ॥ पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरषे । नृपहिं सराहि सुमन बहु बरषे ॥ दोहा ॥ रामरूप नखशिख सुभग बारहिबार निहारि । पुलकगात लोचन सजल उमासहित त्रिपुरारि ॥ चौपाई ॥ केकि कंठ द्युति श्यामल अंगा । तड़ित बिनिन्दक बसन सुरंगा ॥ ब्याह बिभूषण बिबिध बनाये । मंगलमय सबभांति सुहाये ॥ शरद बिमल बिधुबदन सुहावन । नयननवलराजीव लजावन॥

कृपानिवास० ॥ कल कपोल मृदु बोल अमोले । नासाकीर श्रवण युग तोले ॥ मकराकृत कुंडल मुक्ताहल । चञ्चल चलत

सुभग गंडस्थल ॥ अलकैं कुटिल कपोलनि बिथुरीं । शशि रस हित जनु नागनि उतरीं ॥

केशवदास०दोहा ॥ अमल कपोलै आरसी वाहू चंपक मार । अवलोकनै बिलोकिये मृगमदमय घनसार ॥

कृपानिवास०चौपाई ॥ त्रिभुवन श्री श्री तिलक बिराजैं । भाल बिशाल जगत उपलाजैं ॥ मस्तकमौर मनोहर मणिमय । जनु शृंगार शीश त्रिभुवन जय ॥ सिहरा सुभग बदनपर छायो । रूप जाल जनु चंद छिपायो ॥ जादू जाल जानकी प्रेरयो । लाल बदन कछु कारण घेरयो ॥ छंदबैताल ॥ घेरयो बदन त्रैकाज हित रघुराज मंडप राजहीं । लोचन कटीले मुख छबीले प्रगट लखि ढिग लाजहीं ॥ बदनारबिंद सुवृन्द सुखमा दृष्टि मुष्टि न परस-हीं । शशिसहित नवफनि कीर खञ्जन जलज इकसर दरशहीं ॥ यह जानि चित्र महान प्यारी जाल भावनिता धरयो । निज लाड़ करुणा प्रेमको परनेम मनु मनथिर करयो ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सकल अलौकिक सुन्दरताई । कहि न जाइ मनही मन भाई ॥ बंधु मनोहर सोहहिं संगा । जात नचावत चपल तुरंगा ॥ राजकुँवर वर बाजि नचावहिं । वंश प्रशंसक बिरद सुनावहिं ॥ जेहि तुरंग पर राम बिराजे । गति बिलोकि खगनायक लाजे ॥ कहि न जाइ सबभांति सुहावा । बाजि बेष जनु काम बनावा ॥ छंदहरिगीतिका ॥ जनु बाजि वेष बनाइ मनसिज राम हित अति सोहहीं । अपने बय बलरूप गुणगति सकल भुवन बिमोहहीं ॥ जगमगाति जीन जड़ावज्योति सुमोति माणिक तेहि लगे । किंकिणि ललाम लगाम ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥

रघुराज०कवित्त ॥ राजै सबै बाजिन की राजी बीच राम बाजी जातिको सुताजी महा मारुत मिजाजी है । भानुहू के बाजिनको

जीति लिन्हों बेगि बाजी उच्चैश्रवै पाजीकरि बेगता बिराजी है ॥ रघुराज मानसको काजी मन भाजी गति पन्नगारि दांजी करैं पतंग पराजी है। नाकत त्रिलोकपै बचावत बिचारि बुद्धि परि है त्रिबिक्रम के बिक्रममें भाजी है ॥ बेगके विवशनासा फरफरहोत जाकी बूटी बूटी थरथरकांपती है अंगकी । ज्वलन जरत भस परत पुहुमि पाय शील से समेटे गति मारुत के संगकी ॥ बाग राग रचितसो तड़िता तड़प इव तड़पि थिरत छबिहरततरंगकी। रघुराज जौलौं चहै शारदा बखाने तौलौं आने आनै होती छबि राम के तुरंग की ॥

बिश्वनाथ० ॥ चोटीके छुयेतें बोटी बोटीलौं फर फरात छोटी दुम मोटी सुम शोभा सरसावते । पूंजीपटा पुच्छराजे जरी जर बिलीजीन चौंर चारु चंद्रिकाकी चंद्रिका लजावते॥ रामचन्द्र रावरे ये रूरे गुण पूरे बाजि बिश्वनाथ बिदित बिनोद दरशावते। ब्रह्मा बिष्णु बामदेव पावते जो ऐसो कहूं काहेको बिहंग बैल बाहन बनावते ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ प्रभु मनसहि लयलीन मन चलत बाजि छबि पाव। भूषित उडुगण तड़ित घन जनुबर बरहि नचाव ॥ चौपाई ॥ जेहिबर बाजि राम असवारा। तेहि शारदहु न बरणै पारा॥ शंकर रामरूप अनुरागे। नयन पंचदश अति प्रियलागे ॥ हरिहित सहित राम जब जोहे। रमा समेत रमापति मोहे ॥ निरखि राम छबि बिधि हरषाने। आठै नयन जानि पछिताने॥ सुर सेनप उर बहुत उछाहू। बिधिते डेवढ़ सुलोचन लाहू॥ रामहि चितय सुरेश सुजाना। गौतम शाप परमहित माना ॥ देव सकल सुरपतिहिं सिहाहीं। आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं ॥

संग्रहकर्ता ॥ सकल अमर करहिं इमिबाता। रामरूप लखि मन न अघाता ॥

बिश्वनाथसिंह० दोहा ॥ ऊंचे महलनिके जहां मंजु झरोखनि चाहि। बैठीं जहँ तिय चंद मिलि चंद जानिगतिजाहि ॥

संग्रह० ॥ विधुबदनी मृगलोचनी पिकबैनी सुकुमारि । बनरा गावन तियलगीं रघुबर रूपनिहारि ॥

कृष्णरंगसखीजीकृतपद ॥ बनरासलोना माई रघुबरराज। माथे मौर खौर चंदनकी अँग अँग भूषणसाज॥ गज रथ तुरँग नचावत आवत राजत राजसमाज । कृष्णरंग बड़भाग सियाको बर पायो शिरताज ॥ सुन्दरता को बर्णन ॥

बैजनाथ० ॥ देखु सखी छबि राम बनेकी। कंचन मौर खौर चन्दन शिर जगमग द्युति मणि माल घनेकी। पग जावक कंकण कर राजत भूषण सकल सुदेश ठनेकी। बैजनाथ कहि कौन सकै गति मृदु कटि पर पटपीत तनेकी ॥

श्रृंगारका बर्णन ॥

बिश्वनाथसिंह० ॥ बिबिध रंग मणिमौर इन्द्रधनु धोर बाल शशिसौर सरपांती । गजमुक्तनकी गलमाला कल राजिरही बकऔलि उड़ाती ॥ सोहति फहर पीतपट प्यारो दमकिदामिनी थिर तेही छन। बिश्वनाथ है पवन चलावत बरसावत सुख हरि श्रृंगार घन॥ (सनेहताको बर्णन) दृगन देखु सिय दूलह नीको। भावत हयफरकावत आवत ऐसो सुंदर द्वितिय दुनीको॥ बपुकी सुछबि अपार निहारत मार श्रृँगार शरीर सुधारैं । बिश्वनाथ छबि तकत शिरीपति तन मन धन इन ऊपर वारैं ॥ सुन्दरता को बर्णम ॥

कृपानिवासकृतपददादरा ॥ सईयोआजु बना योबना नीकीभांति। पग में जावक कर में मेहँदी शिरसे हरेदी पांति ॥ अंग उमंग अनंग बिमोहत छायरही नबक्रांति। कृपानिवास निरखि सीता बर लोचन पाई हैं जल स्वाति ॥

सरयूसखीकृतपद ॥ बनाजी प्यारी चितवनि है चित चोर। भौंहैं कमान बान बांके लोचन कजरारे हगकोर॥ जुलफैं जुलुम करत मुखऊपर अंग अंग भरी है मरोर। तुरँग नचावत आवत सजनी दशरथ राजकिशोर॥ सरयू सखी बनराकी छबि पर वारिय काम करोर॥

रघुराजसिंह० ॥ बानिकवेष अवध बनरेकी। चंपकरंगबिराजत बागो उर पुखराज सुछबि गजरेकी॥ शीश मौर सेहरा सोहावन कुंडल कानन बनीमकरेकी। श्रीरघुराज राज अलबेलो मति गतिहेरि हरत हियरेकी॥

रसिकअलीकृत ॥ अनोखोमाई राजकुँवर बनरा। खंजन मद गंजन अंजन युत नैनहरे मनरा॥ मोतियनमय शिर मौरमनोहर उर मोतिन गजरा। रसिकअली लखि राम बना छबि मनमें मार मरा॥

रघुराजसिंह कृत ॥ हो सलोना बना राजकुवँर वारी जाउं। हँसनि फँसनि फांसत आलिनको बिहँसनि में वारी जाउं॥ मैन सैन उरहोत दुशाले चितवनि में वारी जाउँ। श्रीरघुराज मदन नेवछावरि बोलनि में वारी जाउं (अथ सखी प्रति सखी बचन) दोहा ॥ कोउ सखिजन संघर्षवश जस तस कै कढ़िजाय। पुनि आवनि चाहत लखन बोली सजनिं सुनाय॥ पद॥ देख-नरी चलु अवध दुलारो। आयो बनि बनरा मिथिलापुरहौं ज्यों त्यों यक बार निहारो॥ नयनन परत धस्यो हियरे महँ केहूं निकसत नाहिं निकारो। श्रीरघुराज सांवली छबि पै हौं तुरंत तकि तनमन वारो॥

प्रेमसखीकृतसवैया॥ दर्पणसे मुख गोल कपोल सखी अवलो-कतही रहिये। नैन समेत फँसे मनबुद्धि कहो उपमा अब क्यों कहिये॥ अंचलओट भये सजनी लघुमीन ज्यों बारिबिना दहि-ये। प्रेमसखी हिय माहँ बसे तिनको फिर साधन क्याचहिये॥

आसक्तताको बर्णन ॥

किशोरअलीकृतसवैया ॥ अति राजि रही पगड़ी शिर पै कलँगी मणिमै लटकी लसिकै । कलकंचुकि त्यों बिलसै अँगमें पटुका कटिखीन बँधो कसिकै ॥ सखि मैं तो झरोखहिते निरखी निरख्यो मुखमोरि सोऊ रसिकै । चित चोर सो राजकिशोर अली मन मेरो चुरायलियो हँसिकै ॥

रामसखेकृतपद ॥ कोशल राजकिशोर तेरे रतनारे नैनलगे । मिथिलापुरमें आय सबनिके बरबस प्राणठगे ॥ लिये श्यामता कछुक सिताई सुधाश्रृंगारपगे । रामसखे लखि जनु रतिपतिके शायक से उरमाहँ खगे ॥

प्रियाशरण० पद ॥ रामलाल बनरा मोय मोही चेटक डारि दइरी । माथे मौर मणिन मोतिनमय लखि सुधि भूलिगइरी ॥ चितवनि चारु मदन मन हरनी दूलह राम बिहारी । सुरँग बसन ढिग मणि मुक्तावलि जरित महाछबिकारी ॥ अस शोभा कहुं सुनी न देखी जस यह राज सलोना । नखशिख शुभ माधुरि मन मोहत ठौर ठौर बरटोना ॥ लखि छबि मगनसखी सब गावति मंगलराग सोहाई । प्रियाशरण मनहरण लालछबि नयनन रही समाई ॥

युगलानन्यशरण० गजल ॥ सखी श्याम बनेकी अदा दिल बीच बसी है । भुले न भुलाये मुझे लयलीन लसी है ॥ क्या खूब झलक सेहरेकी सब तौरसे प्यारी । कुर्बान हुआ आपही शुचि सार शशी है ॥ दरदस्त पांय मेहँदी मुबारिक चेखुश लगे । आशिकके कतल करनेके लिये लाल असी है ॥ जुल्फें मरोरदार सुरत शोकसे सोहै । जी जुग्मका जिसबीच बांध छोड़ हँसी है ॥

रघुराज०पदरागदादरा ॥ आली सिया बर कैसा सलोना । कोटि मदन मूरति नेउछावरि दै दै सखी चलि भाल दिठौना ॥ डरत मोर जिय डगर नगरमहँ कोऊ सखी करिदेइ न टोना । हौं तो जाइ ललाकि उर लगिहौं रैहौं न देइ जो मोहिं भरि

सोना ॥ कहरपरी यह जनक शहरमहँ छूट्यो री खानपान निशि सोना । श्रीरघुराज मोर वारेपर अबतो हमहिं फकीरिन होना ॥

बैजनाथ० पद ॥ आली सियाबर अजब रँगीला । पग जावक कटि बसन पीतकर कंकण शिर सुमौर चटकीला ॥ बदन तँबोल बोल मृदु बिहँसनि कुण्डल श्रवण अलक सोमीला । अधर बुलाक नयन अंजनयुत सुभग भालपर तिलक रसीला ॥ मेहँदी करपग रुचिर महाउर छबि लखि नवलनेह उमगीला । बाल बिहाल हाल यहि पुरकी बिषधर मनहुँ मंत्रसों कीला ॥ परत न चैन रैन दिन नयनन मनहुं चकोर चंदकी लीला । बैजनाथ रघुनाथ बने पर अबतो लाज शरम सब ढीला १ आली सियाबर डारि मोहनियां । नारि निहारि वारि तनमन धन क्षण न परत कल कछु न सोहनियां ॥ बैन न आव रैन दिन यकटक रूप भरत करि नैन दोहनियां । प्रेम पियास अंक लागनकी शंक नहीं गुरुलोक कहनियां ॥ अहंकार बुधि चित हरिलैगे धीरज धरम शरम समुझनियां । बैजनाथ रघुनाथ कुवँरकी बोलनि हँसनि चलनि चितवनियां २ ॥

रघुराज०पद ॥ रघुबर कैसीहै तेरी नजरिया । एकहुबार परति जेहि ऊपर रहत न तनहिं खबरिया ॥ हे अवधेश लला बनरा बन डोलहु डगर डगरिया । श्री रघुराज जनकपुर नारी मोहैं झांकि झँझरिया १ अब कुलकानि सुरति नहिं आवै । देखत बनत अवध बनराको और नहीं कछु भावै ॥ बरबस चलि लागि हौं निशंक उर कोऊ कितेक बुझावै । श्रीरघुराज लगनके मनको को पुनिकै मुरकावै ॥

रामसखे०पद ॥ ये मा अजब बना बनिआयो । देख्यो सुन्यो न या पटतर कोउ जस सीता बर पायो ॥ माथे मौर बांधि चेटकमय सबको पतिव्रत नायो । रामसखे वारिहौं मैंहुं अब रूप अतिहि मन भायो १ बन्यो सखि दूलह अजब रँगीलो । दशरथकुँवर सांवरो अदभुत सोहत परमछबीलो ॥ अनव्याही व्याही सब

द्यांही देखत रूप ठगीलो । रामसखे अबलगत प्राण सम प्यारो अवध नवीलो २ ॥ अथसुंदरताको बर्णन ॥

प्रेमसखीकृतपद ॥ अजब सलोना बनिआया । बनरा ॥ शिरसोने को मौर बिराजै मुतियन झालरि लाया॥ सुंदर सब अंगन प्रति भूषण करमें मेहँदी लाया । प्रेमसखी बलिहारि बदनछबि बनरी के मन भाया ॥

रूपसरसकृतपद ॥ बनराने मनरा लीन्हों। नैन सैनते मैनबिवश करि हर सुधिबुधि छलकीन्हों॥बदनचंद इतफेरनवीलोमंदमुसकि रसदीन्हों। रूपसरस अस छैलछटाबिन धृकजीवन जग चीन्हों १ मोको आली बनराछबि बशकीन्ही । भूषण बसन जाल छैली गति फांस मृगी ज्यों लीन्ही ॥ मोमनमीन गह्यो दृगबंसी अलक डोरि रसभीन्ही । तबतें रंग पतंग सदृश कुल कानि उडी रति चीन्ही ॥ भई निशंक लोक परलोकहु इत्यादिक भयहीन्ही । रूपसरस अबतो सियबर सँग रहिहै नित रतिभीन्ही ॥

युगलाननकृतपद॥ बनेकी बांकीछबिहेरो । लोकलाज कुलकाज गाज सम मानि समुदमें गेरो ॥ सुहाई नख शिख ललिताई । उपमा सम उपमा न मिले कहुँ थकिगई कविताई ॥ अनोखे चोखेपन चोखे । लसत अमल आभरन हरन मन मनमथ तर तोखे ॥ सनेई श्यामा सुखदाई । जुलफ कुलफ चित चमकि रही रस बरसत द्युतिपाई ॥ मधुर मुसक्यान खान सुख की । श्री युगलानन्य अली अवलोकत कथा कवन दुखकी ॥

सुधामुखीकृतपद ॥ बनो सखि साँवलियो बनरा । दृग खंजन अंजन की रेखा मोह लेत मनरा ॥ मनोहर मौर शिर सोहै । कर कंकण महदी बनिआई कोटि काम कोहै ॥ पगन छबि जावककी नीकी । सुधामुखी मुसक्यान मिटावै प्रबल ताप जीकी ॥

शृंगारका कथन ॥

बैजनाथ०पदलावनीमें ॥ बनो बनरा जो सीताको । लोक समिता नहीं ताको ॥ जरी रंग पति को जामा । मैन लखि लाजत

तनश्यामा ॥ सजै मेहँदी भली हाथे। मौर मणि हेमको माथे॥ रचित महाउर पाउँ में उर मोतिन की माल। पीत बसन कटि कसन रँगीली सिंह ठवनि गज चाल॥ निरखि मोही अली ताको। कमल नव नयनन में कजरा। सजे गर फूलन का गजरा॥ अधर छबि नासिका मोती। कानमें कुंडलद्युति होती॥ झलकत अलक कपोलपै पलक न लावत बाल। बैजनाथ जाओर रँगीली चितवनि दशरथलाल॥ चितै हरि लीन्हों ही ताको॥

युगलानन्य कृतपद॥ बना तेरी छबिपर बलि बलिजाऊं। ऐसी द्युति अनमोल लहींकित कहो कौनबिधि गाऊं॥ सौरभ सदन सरस सोहन तन सुखमा लखि हरषाऊं। मोहनि मन उन्माद बढ़ावनि मधुर बचन हिये लाऊं॥ चितवनि चपल चित्त चोरन तकि छकि जकि होश गमाऊं। प्रियबर बैन सुधानिन्दत सत सुनि सनेह सरसाऊं॥ युगलानन्य अली दूलह लखि देह गेह बिसराऊं॥

रघुराजसिंह०पद॥ बैठोरी घर द्वार देखाई। बारबार मैं कहौं बुझाई॥ नृप कोशल कुमार कलकारी अलक पाश पसराई। फांसत नारि बिहङ्ग मन क्षण क्षण कछु न चलत मनुसाई॥ अबलों रहे येई यहि पुर में यक बिदेह नृपराई। अबतो अवध छैल सिगरो पुर दियो बिदेह बनाई॥ देखन को सुकुमार श्याम तन जो जैहौ बरिआई। श्री रघुराज लखौ वाकी छबि दैहौ गरब बिसराई॥

बैजनाथकृतपद॥ श्याम सुन्दर रघुनाथ बनेकी। छबि लखि मन न अघातरी माई। निरखत ललकि पलक नहिं लागत देह बिवश होइ जातरी माई॥ आठौ याम श्याम रंगभीनी काम न कछू सुहातरी माई। बैजनाथ भूली सब सुधि बुधिदृग माधुरि पगि जातरी माई॥

संग्रह०दोहा॥ कहत परस्पर अस बचन मिथिलापुरकी बाम।

मोह्यो सखिमन सबनको राम सुछबि अभिराम ॥ चौपाई ॥ प्रेमासक्त भईं सब नारी। लोक लाज कुल कानि बिसारी ॥ मनमथ कोटि निछावरि कीजे। राज कुवँर छबि दृगभरि लीजे ॥

बिश्वनाथसिंह० ॥ विषमदृष्टि गौतमहू अहई। लोकपाल इरषा तें कहई ॥ शापहु सहज न दिय सबकाहीं। हैप्रसन्न अपराधहि माहीं ॥ यहिबिधि तियन सुरनकी बानी। सुनतजात प्रभु अति सुख मानी ॥

संग्रह० ॥ भये मोह बश नर अरु नारी। रामचंद्र मुखचंद निहारी ॥ तियन सहित सुर चढ़े बिमाना। बाद्य बजाय करहिं कल गाना ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ मुदित देवगण रामहिं देखी। नृप समाज दुहुँ हरष बिशेखी ॥ छंदहरिगीतिका ॥ अति हर्ष राजसमाज दुहुँ दिशि दुन्दुभी बाजहिं घनी। बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जयजयति जय रघुकुल मनी ॥ इहिभांति जानि बरात आवत बाजने बहुबाजहीं। रानी सुआसिनि बोलि परिछनहेतु मंगल साजहीं ॥

संग्रह०दोहा ॥ रूपलता अंतःपुर नारि कहहिं असबैन। सिय प्यारीके दुलहको लखिलीजे भरि नैन ॥

इतिश्रीरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलचौदहवांप्रकरणसमाप्तः १४ ॥

श्री सीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

पन्द्रहवांप्रकरण ॥

श्रीरामचन्द्रश्रीजानकीजीकाओरप्रियबंधुनसहितभाँवरीहोकर दुलहिनिनसहितजनवासेमेंपधारना ॥

रघुराज०सोरठा ॥ जब मिथिलापति द्वार आई अवध बरातबर । तेहिक्षणको सुखभार बरणि पारकिमिजाय कवि ॥ दोहा ॥ मिथिला जन तिमि अवधजन तिमि सुर सर्व अपार । तिमि महि के बासी मनुज प्रगट्यो पारावार ॥ जनक महलके द्वारको चौक महा बिस्तार । भरत भीर जस जस मनो तस तस बढ़तअपार ॥ चौपाई ॥ कनकखचित बरबसन बनाये । चित्र बिचित्र रंग तिन भाये ॥ परिचर तहँ बिदेह के ल्याये । डारि पाँवरे अति सुखछाये। गोपुरते अंतःपुर द्वारा । परीपाँवड़े बिस्तार अपारा ॥ जनकराज महिषी छबिखानी । साजि सुआसिनि अतिहरषानी ॥ रचिआरती कनक मणि थारा । पठई जहां द्वारकर चारा ॥ द्वारचार थल रच्यो बनाई । मोतिन माणिक चौक पुराई ॥ कनककुंभ करि बदन स्वरूपा । आवाहन करि मंत्रअनूपा ॥ थापित करत माहँ तेहिकाला । भे प्रत्यक्ष गणनाथ बिशाला ॥ गौरि अवाहन किय सनमानी । मूर्त्तिवंत भै प्रगट भवानी ॥ रामदरश लालस मन माहीं । समय समय सुर प्रगटत जाहीं ॥ उभय ओर आसन

अतिपावन। धरे पुरोहित शुचि छबिछावन॥ गौतम सतानंद बड़ज्ञानी। याज्ञवल्क्य आदिक मतिखानी॥ दोहा॥ राजत भे मुनिमंडली रामदरश अभिलाख। द्वारचार करवावने बैठ युत श्रुतिसाख॥ चौपाई॥ उज्वालित आरती अपारा। लीन्हें पाणि पुरट के थारा॥ खड़ी सुआसिनि किहे कतारा। कनक कुंभ शिर सजत अपारा॥ भईं भूमि थिर मनहुँ दामिनी। गावहिं मंगल गीत भामिनी। सचिव सुदामन जनक पठाये। लक्ष्मीनिधि कहँ बचन सुनाये॥ महाराज अस दियो निदेशा। ल्यावहिं सुतन सहित अवधेशा॥ रहे चौक महँ खड़ी बराता। आवहिं रघुकुल नृप बिज्ञाता॥ रामसखा सब संग सिधारे। देखे दूलह द्वारनचारे॥ सचिव सकल मिथिलेश निदेशा। राजकुवँर सों कह्यो अशेशा॥ जनक कुवँर दशरथ पद बंदी। पितु रजाय सब कह्यो अनंदी॥ सुनि कोशलपति अति सुख पाये। तुरंगन ते कुवँरन उतराये॥ चारु सुखासन बरन चढ़ाये। सखा और कुलवृद्ध बोलाये॥ भये पालकी राउ सवारा। शोभा निरखि धनद हियहारा॥ दोहा॥ सब तुरंग मातंग रथ औरहु सकलबरात। खड़ी करायो चौकमहँ बाजत बाजनब्रात॥ चौपाई॥ परत पांवड़े पांयन मन्दा। करि आगे दूलह सानन्दा॥ राम भरत लक्ष्मण रिपुशाला। तिन पाछे दशरथ महिपाला॥ चलेउ द्वार को चार करावन। जनु बिधि लोकपाल युतपावन॥ चढ़ी अँटा अन्तःपुर नारी। लखि दूलह छबि तनमन वारी॥ दशरथ तुरत सुमन्त बोलाये। सादर सुखद निदेश सुनाये॥ रघुकुल गुरु कौशिक मुनिराई। दोउ आनहु पालकी चढ़ाई॥ कश्यप मार्कण्डेय उदारो। कात्यायन जाबालि हकारो॥ और मुनिनकहँ लेहु बोलाई। द्वारचार करवावहिं आई॥ ल्याये तुरत सुमन्तलेवाई। रामब्याह प्रमुदित मुनिराई॥ चढ़िपालकी बशिष्ठ सिधारे। तिमि कौशिक तप तेज अपारे॥ दोहा॥ मुनिमंडल महिपालमणि मंडितभये अपार। रविशशि अश्विनितनय मनु

वेद सहित करतार ॥ चौपाई ॥ यहि बिधि अन्तःपुरके द्वारे । लै दूलह नरनाथ पधारे ॥ लै दूलह जब अवध महीपा । द्वारचार की चौक समीपा ॥ आयउ मुनि मंडल लै भारी । तब बशिष्ठ अस गिरा उचारी ॥ धरहु सुखासन बरन उतारी । अवधनाथ आपहू पधारी ॥ अस कहि पढ़न लगेउ स्वस्तैना । उतरि भूप युत कुवँर सचैना ॥ चौक समीप कुवँर करि आगे । ठाढ़े भये भूप अनुरागे ॥ तहां सुआसिनि परम हुलासिनि । सजी सकल मिथिलापुर बासिनि ॥

श्रीतुलसीदासजी कृत दोहा ॥ सजि आरती अनेक विधि मंगल कलश सवाँरि । चली मुदित परिछनकरन गज गामिनि बर नारि ॥ चौपाई ॥ विधुबदनी मृगशावक लोचनि । सब निज तनु छवि रतिमदमोचनि ॥ पहिरे बरन बरन बरचीरा । सकल विभूषण सजे शरीरा ॥ सकल सुमंगल अंग बनाये । करहिं गान कलकंठ ल-जाये ॥ कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं । चाल विलोकि काम गजलाजहिं ॥ बाजहिं बाजन विविध प्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥ शची शारदा रमा भवानी । जे सुरतिय शुचि सहज सयानी ॥ कपटनारि बर वेष बनाई । मिली सकल रनिवासहिं आई ॥ करहिं गान कलमंगल बानी । हरष विवश सब काहुनजानी ॥ छंद हरिगीतिका ॥ को जान केहि आनन्द बश सब ब्रह्मबर परिछन चली । कल गान मधुर निशान बरषहिं सुमन सुर शोभा भली ॥ आनन्दकंद बिलोकि दूलह सकल हिय हरषित भई । अम्भोज अम्बुक अम्बु उमँगि सु-अंग पुलकावलि छई ॥

अथ सुनैनाजीआदि निमिवंशियोंकी रानियोंका गान ॥

प्रियाशरण०सुगंधाछंद ॥ मंगल मूरति रामबना छबिमयन है। जेहि छबि कहत लजात शेष शिव बयन है ॥ सुंदर मोर मनोहर शीश बिराजहीं। नखशिख मणि शृंगार महाछबि छाजहीं ॥ काजर नयन बिराजित अति शोभामई। केसर तिलक ललाट तड़ित द्युति छबिछई ॥ मणि मोतिनकी माल उर सुशोभाकरे। श्यामगात नभमध्य नखत जनु छबि धरे ॥ कटि तट किंकिणि रटतमधुर स्वर बाजहीं। नूपुरछबि अवलोकि मदनबहुलाजहीं ॥ रघुबर बना सलोना रानिन भावहीं। प्रियाशरण छबि देखि सुमंगल गावहीं ॥

श्रीतुलसीकृतदोहा ॥ जो सुखभा सिय मातु मन देखि राम वर वेष। सो न सकहिं कहि कल्प शत सहस शारदा शेष ॥

रघुराज०चौपाई ॥ सिद्धि नाम लक्ष्मीनिधि रमनी। जनक पतोह क्षमा छबि छमनी ॥ औरहु वृद्ध जनक कुल नारी। लखि दूलह तनमन धनवारी ॥

प्रियाशरणकृत ॥ पुनि धरिधीर राम मुख देखी। हर्षीं सब रनिवास बिशेखी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ नयन नीर हठि मंगल जानी। परिछन करहिं मुदितमन रानी ॥ छंदतोमर ॥ नखशिख सुंदर रामरूप जब देखहिं। सब इन्द्रिन महँ इन्द्र बिलोचन लेखहिं ॥ परमप्रीति कुलरीति करहिं गजगामिनि। नहिं अघाहिं अनुराग भागभरि भामिनि ॥ नेगचार महँ नागरि गहरु लगावहिं। मुनिमन अगम अनंद सुलोचनि पावहिं ॥ करि आरती निछावरि बरहिं निहारहिं। प्रेम मगन प्रमदा गण तन न सँभारहिं ॥

चौपाई ॥ बेद बिहित अरु कुल आचारू। कीन्ह भली बिधि सब ब्यवहारू ॥

संग्रह० ॥ मुनिवरकी अनुशासन पाई। बैठेउ आसन पर रघुराई ॥

रघुराजसिंह० ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ उदारा। बैठ राम ढिग गुनि अधिकारा ॥ मंजुल बाजन बजत अपारा। गाय रहीं सुर नर मुनि दारा ॥ अंतःपुर महँ कह कोउ नारी। द्वारचार देखहू सिधारी ॥ दोहा ॥ बिज्जु छटासी कोउ सखी बैठि अटा सुख छाय। कहत सखी सों बैन बर औरहु सखिन सुनाय ॥ पद ॥ सखि लखन चलो नृप कुवँर भलो मिथिलापति सदन सिया बनरो। शिर मौर बसन तन में पियरो ॥ उरसोहत मोतिनको गजरो। रतनारी आंखिन में कजरो ॥ चितये चित चोरत सखि हमरो। चितये बिन जिय न जिये हमरो ॥ अलकैं अलिअजब लसै चेहरो। झपि झूमि रह्यो कटिलों सेहरो ॥ युवती जनको जालिम जहरो। मन बैठत लखत मैन परो ॥ पुनि ऐहैं नाहिं जनक शहरो। ले लोचन लाहु नेक गहरो ॥ यकहै वहि लखत बड़ो अनरो। पुनि रुकत न रोकेहु तें उनरो ॥ रघुराज त्यागि जगको झगरो ॥ दोहा ॥ कोउ सखि पाछे परिगई तेहि कोउ कहति पुकारि। खरी कहां तू यहि घरी अरी आउ सुकुमारि ॥ पद ॥ चलुरी चलु देखसिया बनरो। यह राजकुमार हरताहियरो ॥ शिर को पागो बागो पियरो। युग जुलफ जुलम करती जियरो ॥ जेहिं डहरत डहर करतकहरो। चित चख चोरत चेटकचहरो ॥ सखिप्राण पियार सदा हमरो। रघुराज अनुज सोहहि जमरो ॥

रामसखेकृतपद ॥ श्यामलरा बना राघौ जू महराज। अजब बन्यो प्यारी अँखियन कजरा दशरथ सुत शिरताज ॥ रतन मौर केसरिया बागो और बिबिध मणि साज। रामसखे यह रूप अटकि मन हरी लोक कुल लाज ॥ दोहा ॥ यहि बिधि भाषहिं तिय सकल बचन सरस रसबोर। सिय बनरे मुख चन्दके कीन्हे नैन

चकोर ॥ चौपाई ॥ लाग्यो होन द्वार कर चारा। किये वेद बिधि मुनिन उचारा ॥ पूजन भयउ जौन तेहि देशू। लिय प्रत्यक्ष है गौरि गणेशू ॥ करवायउ मुनि बेद बिधाना। मानि आपनो भाग्य महाना ॥ वेणु थम्भ पूज्यो भगवाना। जनु निमि कुल जस ध्वज फहराना ॥ तेहि अवसर लक्ष्मीनिधि आये। साराजोरी चार कराये ॥ यहि बिधि भयो द्वार कर चारा। भरयो भुवन आनन्द अपारा ॥ सतानन्द तब बचन उचारा। सुनु बशिष्ठ गुरु गाधिकुमारा॥आयो अब लगनहुँ कर बेला। मण्डप तर बर चलहिं झपेला ॥ दोहा ॥ नाऊ बारी महर सब धाऊ धाय समेत। नेग चार पाये अमित रह्यो जासु जस हेत ॥ उपरोहित निमि बंशको सतानन्द मुनिराय। लिये नेग बभ्भिराम सु मम हिय बसहु सदाय ॥ तहँ बशिष्ठ बोलेउ हरषि सुनहु राज शिरताज। दूलह सहित पधारिये मण्डप तर सुख काज ॥ चौपाई ॥ बिश्वामित्र महा सुख पागे। सुखित स्वस्त्ययन भाषन लागे ॥ औरहु सकल मुदित मुनिराई। पढ़न लगे स्वस्त्ययन सोहाई ॥ तेहि अवसर बहु बजे नगारे। नौबत झरन लगी प्रति द्वारे ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ पंच शब्द धुनि मंगल गाना। पटपांवड़े परहिं बिधि नाना ॥

संग्रह० ॥ आयसु पाय सुनैना रानी। कंचन थार लियो निज पानी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ करि आरती अर्घ तिन्ह दीना। राम गवन मण्डप तब कीना ॥

रघुराज० ॥ उर्ची नारि सब एकहिबारा। मंडपतर गमनी भरि थारा ॥ ह्वैगो सकल द्वारको चारो। आपहु मंडपतर पगुधारो ॥ सुनि दशरथ बशिष्ठकी बानी। सुमिरि गणेश महेश भवानी ॥ रंगनाथ पद पंकज ध्याई। उठेउ अनंदित कोशलराई ॥ सतानन्द गुरु गाधिकुमारा। करि आगे मुनि और उदारा ॥ पुनि

आगे दूलह छवि भारी । अन्तःपुरकहँ चलेउ सुखारी ॥ राम ब्याह गावहिं सब नारी । देहिं सुआसिनि अर्घ सुखारी ॥ मणि दीपिका दिपे गृह माहीं । थल थल करहिं प्रकाश तहांहीं ॥ कक्षा तीनि बिभूति अपारा । निरखत हरषत अवध भुवारा ॥ गये खास रनिवास दुवारा ॥ जहँते नहिं पुनि पुरुष प्रचारा ॥ दोहा ॥ धवल धाम ध्रुव धाम इव चामी करके चारु । हिमगिरि मन्दर मेरु जिन जोवत मानत हारु ॥

कविकेशवदासकृत पद्धटिकाछंद ॥ गज दंतनकी अवली सुदेश । तहँ कुसुमराज राजति सुवेश ॥ शुभ नृप कुमारिका करतिगान। जनु देविनके पुष्पक बिमान ॥

रघुराजसिंह० चौपाई ॥ चौक चंद शाला छवि शाला । लखि ललचत अमरावति पाला ॥ राम निरखि ससुरारि बिभूती । मन महँ गुनी सीय करतूती ॥ निरखि बिदेह बिभव अवधेशा । मनमहँ करत अमित अंदेशा ॥ धों सुरपुर इत शक्र बसायो । ब्रह्म सदन धों इत चलि आयो ॥ किधौं बिदेह भक्ति जिय जानी । हरि हरपुरी आय निरमानी ॥ निज तप बल यह बिभव अपारा । लह्यो बिदेह दिनकरतारा ॥ यहि बिधि देखत सुख अवगाहा । दशरथ बारहिंबार सराहा ॥ गे ड्योढ़ी अन्तःपुर केरी । सजी नारि तहँ खड़ी घनेरी ॥ लिहे सहस्रन सखी मसाला । चलीं देखावत सब सुर बाला ॥ तहँ रनिवास पौर अधिकारी । जोरि पाणि जय जीव उचारी ॥ करत प्रवेश नेगसो माँग्यो । दिय मणिमाल राउ अनुराग्यो ॥ सोरठा ॥ करि आगे मुनि वृन्द तिनपाछे करि कुमारको । नहिंसमाह आनन्द अन्तःपुर प्राविशे नृपति ॥ दोहा ॥ लीन्ही परिकर करनते चमरछत्र बहु नारि । चली चलावत चायभरि करि दूलह बलिहारि ॥ चौपाई ॥ आवेराम जबै रनिवासा । अन्तःपुरमहँ भयो हुलासा ॥ धाईं दूलह देखन नारी । देखि देखि जाती बलिहारी ॥ रहहिं जोहिं थकि कढ़ै न बानी । चित्र पूतरीसी छबिखानी ॥

बहुरि परस्पर कहहिं सयानी। निजकर बिधि मूरति निरमानी॥ कहँ अनंग बापुरो अनंगा। कहँ सुर बिगत पलक रसभंगा॥ लखी आजलों असछबि नाहीं। अबलों लोचन रहेतृषाहीं॥ आजुहि आंखिनकर फल पायो। बिधिबनाय दैपलक नशायो॥ युवति यूथ असभाषहिं बातैं। रामदरश नहिं नैन अघातैं॥

संग्रह० ॥ इतअवधेश लखत रचना बर। मंद गवन मन अति आनँद भर॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ दशरथ सहित समाज बिराजे। बिभव बिलोकि लोकपति लाजे॥ समय समय सुर बरषहिं फूला। शांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला॥ नभ अरु नगर कोलाहल होई। आपन पर कछु सुनै न कोई॥ इहिबिधि राम मंडपहि आये। अर्घदेइ आसन बैठाये॥

छंदहरिगीतिका॥ बैठारिआसन आरती करि निरखि बर सुखपावहीं। मणि बसन भूषण भूरिवारहिं नारि मंगल गावहीं॥ ब्रह्मादि सुर बर बिप्रबेष बनाइ कौतुक देखहीं। अवलोकि रघुकुल कमल रवि छबि सुफल जीवन लेखहीं॥ दोहा॥ नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ। मुदित अशीषहिं नाइ शिर हरष न हृदय समाइ॥

कृपानिवास०चौ०॥ मंडपद्वार लसैं नृपदशरथ। सुख समाज अहिराज थकै कथ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ मिले जनक दशरथ अतिप्रीती। करि बैदिक लौकिक सबरीती॥ मिलत महा दोउ राज बिराजे। उपमा खोजि खोजि कविलाजे॥ लही न कतहुँ हारि हिय मानी। इनसम यह उपमा उर आनी॥

कृपानि०॥ पगे भावभरि चगे न अंगा। पुलकिद्रवत दृग मनसि

उमंगा॥उपमा सम नहिं त्रिभुवनपाई । तदपि न मानति मतिकछु गाई ॥ मनहुँ मोद रस बोध स्वरूपा । परमंगल लखि मिलत अनूपा ॥ प्रेमसूत्र जनु विवश मेर भरि । बिच मनिका सुखब्याह और धरि ॥ दाम शीश है बिलग बिराजै । भजन अवधि फल मूरति भ्राजै ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ समधी देखि देव अनुरागे । सुमनबर्षि यश गावन लागे ॥ जग बिरंचि उपजावा जबते । देखे सुने ब्याह बहु जबते ॥ सकल भांति सब साजसमाजू । समसमधी देखेहम आजू ॥ देव गिरासुनि सुंदरि सांची॥ प्रीति अलौकिक दुहुँ दिशि माची ॥ देत पांवड़े अर्घ सुहाये । सादर जनक मंडपहि आये ॥

रघुराज० ॥ फहरि रहे पताक बहुरंगा । छबिसागर जनु तरल तरंगा ॥ कनक इक्षु दंडन ते छायो । तापर विशद बितानतनायो॥ रतन यतनयुत जड्यो अमाना । जगमगात द्युति जाति दिशाना॥

कविकेशवदास०पद्धटिकाछंद ॥ गजमोतिनकी अवली अपार । तहँ कलशनपर उर मति सुढार ॥ शुभ पूरित रतिजनु रुचिर धार । जहँ तहँ अकाश गंगा उदार ॥

रघुराज०दोहा ॥ मोतिन माणिककी फवति झालरि झूलि अपार । मनहुँ फँसावन मनविहँग रच्यो जाल करमार ॥ चौपाई॥ तहँ मणिदीप प्रदीपहि नाना । फटिक फरस बिस्तार महाना ॥ आखत पीत पुहुप बर नाना । अलंकार बेदिका बिधाना ॥ पुरट पालिका अगणित भारी । लसै जवांकुर की हरियारी ॥ लसत अमोले कनक करोले । भरे सुरभि जल धरे अतोले ॥ कनक थार कोपर रतनाली । धूप दीप भाजन मणिमाली ॥ खंभ प्रकाश असंख्य उदोता । धरेश्रुवा शुक्र सुरसरि सोता ॥ अर्घपात्र मंडित मणि मोती । लाजा भाजन सुछबि उदोती ॥ कंचन थारी थार कटोरे । जगमगात चितवत चितचोरे ॥ बिछे पवित्र

दर्भ महिमाहीं। तहँ रतनासन चारु सोहाहीं॥ मनमोहन छबि नहिं कहिजाई। सहित स्वर्ग छबि मेरु लजाई॥दोहा॥ दिपति दिव्य दीपावली तारावली प्रमान। रतन बिहंग बिराजहीं छबि सुरवृक्ष समान॥ मंडप खंभन में लगे मणिमय मुकुर बिशाल। जगमगात प्रतिबिंब बहु बस्तुब्रात तेहि काल॥

श्रीतुलसी० छंद हरिगीतिका॥ मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे। निज पाणि जनक सुजान सब कहँ आनि सिंहासन धरे। कुलइष्ट सरिस बशिष्ठ पूजे बिनय करि आशिष लही। कौशिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौन परै कही॥ दोहा॥ बामदेव आदिक ऋषय पूजे मुदित महीश। दिये दिव्य आसन सबहि सबसन लही अशीश॥

रघुराज०॥ सबै देव मुनि रूपधरि मिले महर्षिसमाज। बैठे स्वामी स्वामिनी ब्याह बिलोकन काज॥ चौपाई॥ बिद्याधर चारण गंधर्वा। किन्नर सिद्ध महोरग सर्वा॥ आसमान महँ चढ़े बिमाना। बरषहिं फूल बजाय निशाना॥ सुर सुंदरी करहिं कल गाना। नचहिं अप्सरा सहित बिधाना॥ रही गगन ध्वनि चहुं दिशि छाई। तैसहि जनक नगर महँ भाई॥ बाजन बाजत बिबिध प्रकारा। द्वार द्वार सोहत नट सारा॥ राजमहल सुख जाय न गाई। थल थल नाचहिं नटी सोहाई॥ भई एक ध्वनि मिलि ध्वनि भूरी। रहीपुरी पुहुमीमहँ पूरी॥

श्रीतुलसी०चौ०॥ बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा। जानि ईश सम भाव न दूजा॥ जोरि पाणिकर बिनय बड़ाई। कहि निज भाग्य बिभव बहुताई॥ पूजे भूपति सकल बराती। समधीसम सादर सब भांती॥ आसन उचित दीन्ह सब काहू। कहौं कहा मुख एक उछाहू॥ सकल

बरात जनकसनमानी । दान मान बिनती बरबानी ॥ बिधि हरि हर दिशिपति दिनराऊ । जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ ॥ कपट बिप्रबर वेष बनाये । कौतुक देखहिं अति सचुपाये ॥ पूजे जनक देवसम जाने । दिये सुआसन बिन पहिंचाने ॥ छंद हरिगीतिका ॥ पहिंचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई । आनंद कंद बिलोकि दूलह उभय दिशि आनँद मई ॥ सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये । अवलोकि शीलसुभाव प्रभुको बिबुधमन प्रमुदितभये ॥ कुण्डलिया ॥ राम सु भूषित जगमगे माड़व मध्य समाज । माथे मुक्ता मौर छबि नखत सहित निशिराज ॥ नखत सहित निशिराज नारि नर देखत शोभा । रघुपति मुख शशि शरद निरखि छबि तृप्त न कोभा ॥ रघुपति मुख छबि शरद शशि नयनचकोरनि लखिलगे । मदन कोटिशत वारिये राम सुभूषित जगमगे ॥ दोहा ॥ रामचन्द्र मुख चंद्र छबि लोचन चारु चकोर । करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर ॥ चौपाई ॥ समय बिलोकि बशिष्ठ बुलाये । सादर सतानन्द सुनि आये ॥ बेगि कुँवरि अब आनहु जाई । चले मुदित मन आयसुपाई ॥ रानी सुनि उपरोहित बानी । प्रमुदित सखिन समेत सयानी ॥ बिप्र बधू कुलवृद्ध बोलाई । करि कुलरीति सुमंगल गाई । नारि बेष जे सुरबर बामा । सकल सुभाय सुंदरी श्यामा ॥ बारबार सनमानहिं रानी । उमा रमा शारद समजानी ॥

संग्रह० ॥ कह्यो सुनैना अति हरषाई। सुनत सखिन सीतहि अन्हवाई ॥

कृपानिवास० ॥ सखी शृंगारत सिय सुकुमारी। कमलादिक चतुरा बहु नारी ॥

रघुराज० ॥ रतन ग्रथित अम्बर पहिराई। चिते चौंध चखगई समाई ॥ पुरट पीठ सीतहि बैठाई। मणिन जटित भूषण पहिराई ॥ नख करतनि नखमाहिं छुहाई। नाउनि तहँ जावक लै आई ॥

हरिहर०दोहा ॥ कोमल सिय पद पीठ ढिग लाजत शची कपोल। सिरससुमन मखमल कहा कोमलता बेमोल ॥ ललित पद अँगुरिन की शोभा अति सरसाय। पंचदेव मानौ समुझि बैठे पद ठहराय ॥ सिय एँड़ी सम नहिं रँगी ठहरावे करि गौर। नारंगी तब धरि दिये नाम सुकबि शिरमौर ॥ सिय तरवा लाली निरखि फूल गुलाब मलान। गंग यमुन के बीच महँ दुरी सरसई आन ॥

देवस्वामी०पद ॥ सियजूके अरुणारे दोउ तरवा। मानो अनुरागनके घरवा ॥ का गुलाब का कमल कँटीलो का बड़लाल अनरवा। का कुसुंभ जल बुंद परतही बिगरत रंग निचोरवा ॥ का मखमल का सरसों कलँगी का मालती पतरवा। इनकी कोमलताके आगे का कपोल बटपरवा ॥ ऊरध पद्मफल यतरु अंकुश रेखनको उजियरवा। एक एक रेखनपर वारों त्रिभुवन को शृंगरवा ॥ जिनके धोवत डरत देवता जिनि चुइपरत अतरवा। इनसे लगन नहींतो बिरथा दंड कमंडलु करवा ॥

रघुराज० दोहा ॥ अमर यतन करि जन्म बहु लहे न जिन पद रेनु। ते पद नाउनि कर लसत निज जनके सुरधेनु ॥ चौपाई ॥ जे पद लाल प्रवालहु तेरे। शिव अज उरपुर करत बसेरे ॥ ते पदमहँ नाउनि बड़ भागिनि। जावक देन लागि अनुरागिनि ॥ चितवत चारु चरण अरुणाई। नाउनि जावक देन भुलाई ॥

जगा न जोवति जावक योगू। कियो महाउर नख संयोगू॥ सिय अंगुलिन लखि कोमलताई। नव रसालदल रहलजाई॥

हरिहरप्र० दोहा॥ चहुं दिशि लाली मध्य नख शोभा अति सरसाय। जनु गुलाबके दलनपर दश विधु बैठे आय॥ सिय नख विधु लखि विधु लज्यो भज्यो जाय आकास। कसकानि हियकारो परयो अजहुं झांवरोभास॥ सीता नख द्युतिकांचमक लेश चंदके माहिं। तनिक निरंजनब्रह्म महँ पूरण कतहूं नाहिं॥ जनक लली नख द्युति सरिस निज द्युतिकहँ नहिं जोय। ब्रह्म ज्योति प्रगटत नहीं अजहूं लज्जित होय॥

रघुराज०चौपाई॥ जावकसाहित लसत नख कैसे। उदित अमित अंगारक जैसे॥ इन्द्रनीलमणि नूपुरभाये। मनु सरोज बहुषट-पदआये॥ लघुअंगुरिन मुंदरी सोहाहीं। कंजकोष मनु रवि पर छाहीं॥ तेइ पुनि नखन निकट छवि देही। धरयो परिधि मनु शशिनभनेही॥ सियपदसम नहिं करिनसरोजू। सहिआतप तप ठानत रोजू॥ जब न भयो सियचरण समाना। तब झारत केशर दलनाना॥ गुलुफ सुलुफ छबि कविजन कहहीं। नहिं गुलाब कलिका सम लहहीं॥ धरयो चरणजलभरि जेहिथारा। भोजो-हत जावक अनुहारा॥ दो०॥ जिनपदलेश कृपापरत पावतदेव विभूति। ते गोदति अपने करनि धनि नाउनि करतूति॥ चौ०॥ नहछूचार मातकरवाई। भूषण बसन विमल पहिराई॥ पुरट पीठ पुनि प्रीति समेतू। बैठाई सिय सजनि निकेतू॥ सतानन्द सों पुनि कहरानी। चुक्योचार इतको मुनिज्ञानी॥ कहहु जबै मंडपतरल्यावैं। तब मुनिकह हम जबबोलवावैं॥ असकहि मुनि मंडपतरआये। दूलहदेखि दुगुण सुखपाये॥ रामकरत गणना-यकपूजा। लख्यिोप्रगट मनोरथपूजा॥

कृपानिवास०॥ लौकिक रीति सुप्रीति दिखाई। सियाराम स-र्वोपरि भाई॥

रघुराज०॥ गुरुबाशिष्ठ तहँ वेदविधाना। अनल थप्यो वेदी

मतिमाना ॥ प्रगटयो परमप्रकाश हुताशा । ज्वालावली दाहिनी आशा ॥ जनक सबंधु बशिष्ठ बोलाये । तासुपाणि मधुपर्क दे-वाये ॥ गणपतिपूजन आदिकचारा । करवाये गुरु गाधिकुमारा॥ सतानन्दसों दोउमुनिगाये । बनत आशु अब सियहि बोलाये ॥ दोहा ॥ सतानन्द आनंदभरि कह्यो सुनैनहि जाय । तहां जानकी जानकी गईघरी अबआय ॥ चौपाई ॥ जनकपट्ट महिषी जगजा-नी । कही सखिनसों मोदितबानी ॥ मंडपतर अब चलहिकुमारी। संगसखी सब साजसमारी ॥

श्रीतुलसी० ॥ सीय सँवारि समाज बनाई । मुदित मंड-पहि चलीलिवाई ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ चलि ल्याय सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी । नव सप्त साजे सुंदरी सब मत्त कुंजर गामिनी ॥ कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं । मंजीर नूपुर क-लित कंकण ताल गति बर बाजहीं ॥

रघुराज०चौपाई ॥ बोलहिं सखीनकीब सुखारी । जैजैजै मिथि-लेशकुमारी ॥ चलै चारुचामर दुहुँओरा । छजत छत्र छविछ्वै क्षिति छोरा ॥ पानदान आदिक सबसाजू । संयुत सोहति स-खीसमाजू ॥

कविकेशवदास०सोरठा॥पहिरेबसन सुरंगपावकमय स्वाहामनो। सहज सुगंधित अंग मानहुं देवीमलयकी ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ सोहति बनिता बृंद महँ सहज सुहा-वनि सीय । छबि ललना गण मध्य जनु सुखमा अति कमनीय ॥ चौपाई ॥ सिय सुंदरता बरणि न जाई । लघु मति बहुत मनोहरताई ॥ आवतदीख बरातिन सीता ॥ रूप राशि पति प्रेम पुनीता ॥ सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा । देखि राम भय पूरणकामा ॥ हरषे दशरथ सु-

तन समेता । कहि न जाय उर आनँद जेता ॥ सुर प्रणाम करि बरषहिं फूला । मुनि अशीष धुनि मंगल मूला ॥ गान निशान कोलाहल भारी । प्रेम प्रमोद नगर नरनारी । यहि बिधि सीय मंडपहिआई । प्रमुदित शांति पढ़हिं मुनिराई ॥ तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू । दुहुं कुलगुरु सब कीन्हअचारू ॥ हरिगीतिकाछंद ॥

आचार करि गुरु गौरिगणपति मुदितबिप्र पुजावहीं ।
सुर प्रगट पूजा लेहिं देहिं अशीष अति सुखपावहीं ॥
मधुपर्क मंगल द्रब्य जो जेहि समय मुनि मन महँचहैं ।
भरे कनक कोपर कलश सो तब लियहि परिचारकरहैं ॥
कुल रीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर किये ।
यहि भांति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासन दिये ॥
सियराम अवलोकनि परस्पर प्रेम काहु न लखिपरै ।
मन बुद्धि बर बाणी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै ॥

दोहा ॥ होम समय तनु धरि अनल अति सुख आहुति लेहिं ॥ बिप्रवेष धरि वेदसब कहि बिवाह बिधि देहिं ॥

प्रियाशरणजीकृत दोहा ॥ सिंहासनके तीन दिशि बहु सखियन की भीर । मणि भूषण नखशिखसजे पहिरे सबरँगचीर ॥

रघुराजसिंह०चौपाई ॥ एकओर भल सखीसमाजै । गावत मंगल गीत बिराजै । मुनिमंडल तहँ बिमल बिराजा । सिंहासन पर कौशलराजा ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ उदारा । चारकरावहिं सुखितअपारा ॥ सतानन्द गौतमसुत तैसे । चारकरावहिं श्रुतिकह जैसे ॥ जैधुनि सकल नगर नभपूरी । पुहुपावली पुहुमिगैपूरी ॥ तेहिअवसर असको जगमाहीं । रामब्याह जेहि आनंद नाहीं ॥ दोहा ॥ जड़ चेतन सुरनर मुनिहु पशु खग कीट पतंग । रामजानकी ब्याहलखि मगन मोदरसरंग ॥

श्रीतुलसीकृतचौपाई ॥ जनक पाटमहिषी जगजानी। सीय मातु किमिजाय बखानी॥सुयश सुकृत सुख सुंदरताई। सब समेटि बिधि रची बनाई॥ समय जानि मुनिवरन बोलाई। सुनत सुआसिनि सादर ल्याई॥ जनक बाम दिशि सोह सुनैना। हिमगिरि संग बनी जनु मैना॥ कनक कलश मणि कोपर रूरे। शुचिसुगंध मंगल जल पूरे॥ निजकर मुदित राउ अरु रानी। धरे रामके आगे आनी। पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसर जानी॥ बर बिलोकि दंपति अनुरागे। पायँ पुनीत पखारन लागे॥ छंदहरिगी० ॥ लागे पखारन पायँ पंकज प्रेम तनु पुलकावली। नभ नगर गान निशान जयधुनि उमँगि जनु चहुँदिशि चली॥ जे पद सरोज मनोज अरिउर सर सदैव बिराजहीं। जे सुकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलिमल भाजहीं॥ जे परसि मुनि बनिता लहीगति रहीजो पातक मई। मकरंद जिनको शंभुशिर शुचिता अवधि सुर बरनई॥ करिमधुपमन योगीश जन जेहि सेइ अभिमत गति लहैं। ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं॥

तथारामस्वयंबर॥

श्रीरघुराजसिंहजीकृतचौ० ।पुनि वरबधू बिभूषण नाना। जटित सूर्य शशि मणिन प्रधाना॥ अमित निचोल अमोल ललामा। दिये जनक सुखभरि तेहिठामा॥पारिजात पुहुपनकी माला। पहिराई मिथिला महिपाला॥ पूजन किय वरबधू समेतू। षोड़श बिधि नृप निमिकुल केतू॥ साधु साधु मुनिदेव बखाने। ज्ञानि शिरोमणि जनकहिजाने॥दोहा॥ निमिकुलके सबवृद्धजन आय सहित

निज नारि । भये परमपद योगलब रघुबरचरणपखारि ॥ चौपाई ॥
यामिनि यामजात जिय जानी । बोलेउ वचन बशिष्ठ बिज्ञानी ॥
सुनहु बिदेह लगन अब आई । कन्यादान देहु सुखछाई ॥ हवन
सकल हम बिधिवत कीन्हा । पावक प्रगट रूप हविलीन्हा ॥
जनक तनक अब होइ न देरी । पाणिग्रहण यहिलगन निवेरी ॥
सुनत बिदेह नेह भरिभारी । धरी कनक मणिमंडित थारी ॥
तेहिमहँ भरघो सुगंधितनीरा । लीन्ह्यो निजकर कुश मतिधीरा॥
कुंकुम रंगित तंदुल धरिकै । लै जानकी अंक मुद भरिकै ॥
तापरधरि मणि महा बिकासी । चूड़ामणि जेहि नाम प्रकासी ॥
रानि सुनैना गांठिहि जोरी । सो ढारति जल प्रीति न थोरी ॥
सिय करकंज कंज कर राखी । रामहिं चितै देन अभिलाखी ॥
दोहा ॥ अंबक अंब अनन्द भरि रोमांचित सबगात । प्रेम बिबश
गद्गद गरो कही राम सों बात ॥ कवित्त ॥ बेदन बखान कनि
शिष्टि गर्भाधान की सुशोभा शीतभानकी अनेक उपमानकी ।
इंदिरा समान की सुगौरी धर्म सानकी समान कुलमानकी प-
तिव्रता प्रमान की ॥ रघुराज दिनराज बंश दिनराज आजलजि
ललनानि की शिरोमणि जहान की । पालिनी प्रजानकी सुधा-
लिनी अजान की है जानकीसी जानकी कुमारी मेरी जानकी ॥
दोहा ॥ धर्मचरी तुव सहचरी सदा संचरी संग । छायासी माया
बिगत दायामय सब अंग ॥ मेरे पंकज पाणि में पंकज पाणि
लगाय । लेहु लाल अवधेश के लली मोरि चित चाय ॥ श्लोक ॥
इयंसीताममसुतासहधर्म्मचरीतव । प्रतीच्छचैनाम्भद्रन्तेपाणिंगृ
ह्णीष्वपाणिना १ पतिव्रतामहाभागाछायेवानुगतासदा । इत्यु
क्त्वाप्राक्षिपद्राजामंत्रपूतञ्जलन्तदा २ ॥ दोहा ॥ पढ़ि सुमंत्र
यहिभांति ते छोड़िदियो जल धार । सुरपुर नरपुर नागपुर मा-
च्यो जय जयकार ॥ धूपुरलों अरु भूमि भरि भूतल में यकबार ।
बाजन बाजे बिबिध बिधि भो सुख पारावार ॥ एकबार बोले
सकल जै जै दशरथ लाल । जै जै जनक लली भली हम सब

भये निहाल ॥ चौपाई ॥ लगे बजावन बाज बराती। गाय उठीं तिय जुरी जमाती ॥ मंगल मोद भयो मिथिलापुर। सुखसागर उमग्यो नहिंकेहिउर ॥ सुर मुनि सबै भये बिन भीती। रविरथ रुक्यो गगन भरि प्रीती ॥ दश दिशि निर्मल बही बयारी। शीतल मंद सुरभि सुखकारी॥ दिशा प्रसन्न सन्न खलबृन्दा। तारन सहित रुक्यो नभ चन्दा ॥ करहिं बेदधुनि मुनिगण नाना। जनकहर्ष को करै बखाना ॥ तैसहि अवधअधीश अनंदा। कहैं जो कवि मिति सो मति मंदा ॥

बाबूहरिश्चन्द्रजीकृतसवैया ॥ वेदनकी बिधिसों मिथिलेश करी तहँ ब्याहकी रीति सुहाई। मंत्र पढ़ैं हरिचंद्र सबै द्विज गावत मंगलदेवमनाई॥हाथमें हाथके मेलतहीतहँ बोलिउठे मिथिलोग लुगाई। जोरी जियो दुलहा दुलहीकी बधाई बधाई बधाई बधाई ॥ झूलना ॥ अगिनि अरु पौन अरु चन्द्र धरती नहीं ज्योति जगमगति नहिं ताहितूल्यो। समयसंयोग श्रीबिष्णुसोहतभये कोटिगुण रूप पालनभूल्यो ॥ बिष्णुके नाभिसों कमल पैदाभयो ताहिसम तूल कैलास तूल्यो। राम करकमलपर जानकी करकमल कमलपर कमल केहिभांति फूल्यो ॥ कियो संकल्प जबजनक ऋषि जानकी देखि सब देव नर नारि भूल्यो। लाल अरु हीर नव रतन की ज्योति पर कोटि रतिकाम नहिं ताहि तूल्यो ॥ सहित सुमेरु सुखलहत चौदह भुवनमध्य हियहार हिंडोल भूल्यो। राम कर कमलपर जानकी कर कमल कमलपर कमल इहिभांतिफूल्यो ॥

अथ श्रीमानस रामायण ॥

श्रीतुलसी०छंदहरिगीतिका ॥ वर कुँवरि करतल जोरिशाखोच्चार दौ कुलगुरु करैं। भयो पाणिग्रहण त्रिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं ॥ सुखमूल दूलह देखि दंपति पुलकि तन हुलस्यो हियो। करिलोक वेद बिधान कन्यादान नृप भूषण कियो ॥ हिमवंत जिमि गिरिजा

महेशहिं हरिहिं श्री सागर दई॥ तिमि जनक सिय रामहिं समर्पी बिश्व.कलकीरति नई॥ क्यों करै बिनय बिदेह कियो बिदेह मूरति सांवरी। करिहोम बिधिवत गांठि जोरी होनलागी भांवरी॥ दोहा॥ जयधुनि बंदी बेदधुनि मंगल गान निशान। सुनि हर्षहिं बर्षहिं बिबुध सुरतरु सुमन सुजान॥

रघुराजसिंह०चौ० ॥लेहिं हुलासित हव्यहुताशा।गुनी भूमि निज भार बिनाशा॥ रामजानकी जोहहिं जोरी। तोरहिं तिय तृण प्रीतिनथोरी॥ करहिं निछावरि मणिगण भूरी। परसहिं पाय प्रेमपरिपूरी॥ कहहिं परस्पर नारि करोरी। युगयुगजियैं युगल जगजोरी॥ सुरमुनि पुरुष नारिसब लेखे। अस दुलहिनि दूलह नहिं देखे॥ दोहा॥ मुनिमंडल पितु मातु सखि अवलोकनमिसिसीय। निरखति हरषति रामछबि कोटिकाम कमनीय॥चौ०॥ लाज और अभिलाष समाना। मनमुसक्याहिं जानि भगवाना॥ साधु साधु भाषहिं सबदेवा। नमोनमोकहि ठानत सेवा॥ जैजै धुनि पुनिपुनि सुरकरहीं। रामसीय सुखमा दृगभरहीं॥ यहि बिधि पाणिग्रहण तेहिकाला। करतभये सियको रघुलाला॥ राम बामदिशि सियबैठाई। सरबसपाये निमिकुलराई॥ राम निकट सिय सोहहिं कैसी। कनकलता तमालढिग जैसी॥ मनहुं श्यामघन दामिनि नेरे। सोहिरही हिय हरि सबकेरे॥ छंदगीतिका॥ भांवरिबिलोकनहेत सब उमंगे अमित अभिलाषते। सीतारमण सीतासहित निरखत पलक परमाषते॥ तब सतानंदहि कह्योरघुकुल गुरुगिरा सुखछामिनी। अब भांवरी करवाइयेपुनि अधिकबीतत यामिनी॥ सुनि सतानंद सहर्ष करवावनलगे बर भांवरी। ठाढ़ेभये रघुबंशमणि तिमि जनकभूपति डावरी॥ बेदी बिभाव सुजनक भूपहि मध्यकरि मगरोहनै। लागेफिरन फेरो कवित फटिकै फरशमक मोहनै॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ कुंवरि कुंवर कलभांवरि देहीं। नयनलाभ सादर सबलेहीं ॥ जाइनबरणि मनोहर जोरी। जोउपमा कवि कहैं सो थोरी ॥ रामसीय सुन्दर प्रति छाहीं। जग मगाति मणि खम्भन माहीं। मनहुँमदन रतिधरि बहु रूपा। देखत राम बिवाह अनूपा ॥ दरश लालसा सकुच न थोरी। प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥

बिश्वनाथसिंह०छंदहरिगीतिका ॥ फिरि देत भाँवरि खम्भमणि प्रतिबिम्ब परहि सोहाइ कै। जनु बहुत तन धरि रामयहि मिलिरास किय सिय पाइकै ॥

रघुराज० ॥ छावति छटा क्षिति गौरि सियकी जोन्ह फरस सुफावती। रघुनाथ मुख छबि इन्द्रनीलक भूमि बहुरि बनावती ॥ गति मंद मंदहि चलत सुन्दर हरत हिय नर नारिके। घनश्याम दामिनि से लसत दोउ इष्टदेव पुरारि के ॥ जगमगत दोहुन ज्योति मनु यक यक जितत सित श्यामहै। सित श्याम मिलि मिलि होत शोभा हरित अति अभिराम है ॥ मनु बीजुरी को बसन बिरचि दिनेश शशि यकसंगही। देते सुमेरु प्रदक्षिणा दक्षिणावर्त उमंगही ॥ जुरि युवति गावहिं गीत मंजुल राम सिय छबि छकित हैं। करि मदर रति निवछावरै तकि मामरै चित चकित हैं ॥ युग सखी सिय के संग की अस कहहिं हँसि हँसिकै तहां। धीरे चलहु कछु लालहै सुकुमारि जनक लली महां ॥ सुनि राम नैन नवाय रहत लजाय मृदु मुसक्याय कै। अरबिन्द पूरण चंद पेषत रहत ज्यों सकुचाय कै ॥ कोउ बरबधू परफूल बरषहिं हेलि हास हुलासमें। कोउ ओढ़ि अंचल बिधिहि बिनवहिंरहहिं दोउ यहि बासमें ॥ जबलों परीं त्रय भामरी तब लों सिया आगू चली। पुनि चारि भाँवरि देतमें भे राम आगू छबि भली ॥ जबरही सियपुर सर चलत तब अस भली सोहत रहीं। जनु जात आगे भानुके सित भानु पूरनि मालहीं ॥ जब

भये दशरथ कुवँर आगे चलत जनककुमारिके । तब लसत मानहुं चन्द्रमा पीछे प्रयात तमारिके ॥

श्रीतुलसी० ॥ राजत राम जानकी जोरी । श्याम सरोज जलद सुंदर बर दुलहिनि तड़ित बरण तन गोरी ॥ व्याह समय सोहत बितान तर उपमा कहुं न लहति मति मोरी । मनहुं मदन मंजुल मंडपमहँ छबि शृँगार शोभा सोउ थोरी ॥ मंगलमय दोउ अंग मनोहर ग्रथित चूनरी पीत पिछोरी । कनक कलश कहुं देत भांवरी निरखिरूप शारद भइ भोरी ॥ मुदित जनक रनिवास रहस बश चतुर नारि चितवहिं तृणतोरी । गान निशान वेद धुनि सुनि सुर बरषत सुमन हरष कहै कोरी ॥ नयननको फल पाइ प्रेम बश सकल अशीषत ईश निहोरी । तुलसी जेहि आनंद मगन मन क्यों रसना बरणै सुख सोरी ॥ पद ॥ दूलह राम सिया दुलहीरी । घन दामिनिबर बरण हरण मन सुंदरता नख शिख निबहीरी ॥ ब्याह विभूषण बसन विभूषित सखि अवलीलखि ठगिसिरहीरी । जीवन जनम लाहुलोचन फल हैं इतनोइ लह्यो आजु सहीरी ॥ सुखमा सुरभि शृँगार क्षीरदुहि मयन अमियमय कियो है दहीरी । मथि माखन सियराम सँवारे सकल भुवन छबि मनहुं महीरी ॥ तुलसिदास जोरी देखत सुख शोभा अतुल न जाति कहीरी । रूपराशि विरची बिरंचि मानो शिला लवनि रतिकाम लहीरी ॥

नानाअलो० पद गजल ॥ चल देखिये महबूबको क्या खूब बना है । शिर मौर वो मौरी मनोहर ज्योति घना है ॥ सेहरे कि

शोभा क्या कहौं छबि जाल तना है। करि करि यतन इसजक में बहुतोंने गना है॥ कहि कहि थके पाया नहीं तिहुंलोक जना है। तन मन बचन यारूपसों जिस्को न पना है॥ ज्ञानव भली ते दूरहै आनाभिमना है॥

बैजनाथ०पद२१० ॥ नख शिख छबि अवलोकि भलीरी। दूलह राम जानकी दुलहिनि घन दामिनि निज एक थलीरी॥ जावक पग नूपुर मँजीर युत सज्जन मनकिधौं मधुप बलीरी। जामा रुचिर पीत जरकस कटि पट परिधान ज्योति अमलीरी॥ जरकसि कलित अरुण चूनरिसों पीत वसन कृत गांठि भलीरी। चन्द्रहार मणिमाल जवाकृत पञ्चदाम गर चंपकलीरी॥ बैजंती बनमाल पदिक मणि कंठागर छबि कंबुछलीरी। बलय चूरि संघटित बिभूषण अंगुलीय कर कंजकलीरी॥ कंकण कड़ा मुद्रिका भुजबलबर अंगद भुजदण्ड बलीरी। श्रवणफूल ताटंक पादिका युगप्रकाश मिलिकेशहलीरी॥ कुण्डल मकर कपोल केश बिच तिलक रेख जस काम गलीरी। नासानथ लटकन बेंदीयुत अर्द्धचन्द्र धृत क्रीट ललीरी॥ कञ्चन रचित समूह मणिनमय मुकुत प्रभा सब जग उजलीरी। पूरणचन्द्र प्रकाश बदन लखि बैजनाथ मन कुमुद कलीरी॥

बिश्वनाथ०पद ॥ मंडप तर सिय रघुबरजोरी। निरखि निरखि अनमिष नयनन ते भै सुर नर मुनि मति गति भोरी॥ बिधि मनते बितान बर निरभित छबि शृँगार सब करि यक ठोरी। तेहि बिच रचि रचि वारत हारत कामा काम करोरि करोरी॥ शिव श्रीपति निज चितको बिरच्यो ऐन अलौकिक प्रभनि भरोरी। तामें प्रीति ब्रह्म मुद मूरति थापित करि सोउ नाहिं रुचोरी॥ कोउ कबि कहहिं कौन बिधि उपमा जिन सुखमा लव विश्व रचोरी। बिश्वनाथ इन सम है यहीरी मंडप सम नहिं बिश्व बियोरी १ दुलहिनि एक जानकीजाई। दूलह एक कुवँर दशरथ को। बिकहिं जोइ रति मनमथ बिन गथ उपमा देन सु कवि

समरथ को । मोतिन मांग बलित बंदन मो मञ्जुल मति गति भई भोरी । न्हाय त्रिबेणी नषत नश्रेणी भई न सम नभ दौरति बौरी ॥ हरि शिर सोहत मौर मणिनको ताकि ताकि अतितासु लुनाई । सम हित भयो मंजरिन सुरद्रुम लहिनहिं समगो स्वर्ग लजाई ॥ राजि रही चुनरी पंच फूली तेहि मधि तन द्युति अति भलि भावै । पंचतत्त्व मधि परम ज्योतिहै असम मानि नहिं बदन देखावै ॥ पीत पोशाक शरीर श्याम में शोभा सरस सोहाय रही है । मरकत गिरि पर परि परि आतप लहत न समता तपत सही है ॥ ग्रन्थि सहित दोउ सम हित बिजुरी छबि शृँगार यकठौर करी है । बिश्वनाथ सम नहिं भे अब यह दुरति फिरति हिय लाज भरी है ॥

श्रीरामरंगदेवस्वामीकृतपद ॥ अवलोकनि भांव मिलावन है । सियारामकी आपुसमें दिव्य पुरुषहै नयन तिलनमों जगजाको फैलावनहै ॥ ताके मिलत साज बाहरको वाहीको अनुधावनहै । बरकेगोत्र मिलत सो कन्या पिता गोत्र बदलावन है ॥ छूटि जात तनहुं से नाता बरसों प्रेम बढ़ावनहै । अगिनि होत दूनों को साखी मिलिके काम करावनहै ॥ सप्तधातु तनसात प्रदक्षिण दूनों लोक बनावनहै ॥ सिया राम संयोग सनातन बिधि तोको दरशावनहै । रामरंगमें देव मगन मन मानहुं बरसत सावनहै ॥

रामसखेजो०पदरा० ॥ दृगलागोरी रामा लाड़िलो बना । भांवरि देत देखि सिय संग ज्यों चुम्बक लोहकना ॥ कहि नहिं जातरूप अद्भुत सखि भय सब चक्रित जना । रामसखे छबि देखि मगन भई ज्यों मृग दीप मना ॥

रघुराज०हरिगीतिकाछंद ॥ क्षिति पर भरत अनगन कनक कन जलज हीरनकी कनी । मनु बर बधू गुरुजानि पुहुमी पुहुम पूजहिं रति घनी ॥ बहु रतन पूरित चारु चौक बिराजती बसुधा मनो । सजि बसन भूषण देन कन्या दान आई ते छनो ॥ यहि भांति सप्त पदी कराय कुमार गौतमके सुखी । बेदी निकट ठाढ़े

करावे राम सीता शशिमुखी॥ लाजा परोसन लाल लक्ष्मीनिधि करायो करन् सों। कीन्हे निछावर सकल जन वर बधू रतनाभरन सों॥ तब जाय रघुपति निकट लक्ष्मीनिधि कह्यो मुसक्याय कै। दीजै हमारो नेग जो हम कहहिं अब चित पायकै॥ दोहा॥ मन्द मन्द रघुनन्दकह जो मांगहु सानन्द। हय गय मणि माणिक बसन भूषण आयुध बृन्द॥ सो तुमको सब थोर हैं जो कछु मेरेहोय। प्रीतिरीति जस तुमकरी तस न कियो जगकोय॥ जनक कुँवर बोलेउ हरषि यहीनेग मोहिं देहु। पद अरबिंद मरंदको मन मलिंद करिलेहु॥ एवमस्तु कहि राम तहँ निजगल की मणिमाल। द्रुतउतारि पहिरायदिय स्यालहि किये निहाल॥ नेग लह्यो मिथिलेश सुत रह्यो मनोरथ जौन। रामचरण बंदन कियो कियो गौन निज भौन॥

केशवदास० दोहा॥ रामचन्द्र सीता सहित शोभितहैं तेहिठौर। सुबरणमय मणिमय खचित शुभ सुंदर शिरमौर॥

देवस्वामी०पदराग॥ सिय भई हरित हरित भयराम। पीत श्याम दोऊ छबि मिलितै झलको तीसर धाम॥ ईश्वर आपुइ पुरुष नारि भा अंग दहिन औ बाम। अस मनु बचन प्रगट मंडपतर पूरत मनको काम॥ गहनन्हसे औ पटपहिरनसे रहा भेदको नाम। यहरस सब जन लूटि रहे हैं बिनु कौड़ी बिनु दाम॥ का जप योग ज्ञान ब्रतकरिकै का पढ़िकै ऋग साम। जौं यह छबि देवन को दुर्लभ न रुची आठोंयाम॥

श्रीतुलसी०चौ०॥ भये मगन सब देखनहारे। जनक समान अपान बिसारे॥ प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी। नेग सहित सब रीति निबेरी॥

संग्रह०॥ सुरतरुसुमन देव बरसावैं। राम ब्याह कल मंगल गावैं॥ अति आनंद सकल नर नारी। राम सिया को रहे निहारी॥

बाबूहरिश्चंद्रकृत सवैया॥ बिधिसों जब ब्याह भयो दोउ को

मणि मंडप मंगल चांवर भे । मिथिलेश कुमारी भई दुलही नवदूलह सुंदर सांवरभे ॥ हरिचंद महान अनंद बढ्यो दोउ मोद भरे जब भांवरभे । तिनसों जगमें कछु नाहिं बनी जे न ऐसी बनीपै निछावरभे १ मौर लसै उत मौरी इतै उपमा इकहू नहिं जासु लहीहै । केसर रंगको बागो लसै अरुचूनरि चारु इतै सु लहीहै ॥ मेहँदी पाणि महावर सो हरिचंद महा सुखमा उलहीहै । लेहु सबै दृगको फल देखहु दूलह राम सिया दुलहीहै २

प्रेमसखीजीकृत ॥ नव अंबुदतें तन ज्योति बढ़ी सगरे अंग व्याहकी साज लसै । मुखकी उपमा कवि कौन कहै मुसकानि सुधारस सों बरसै ॥ पट पीत सों जानकी चूनरिसों शुभगांठि बिलोकत चित्त फँसै । यह दूलह रूप सियावर को नित प्रेम सखी उरमांझबसै ॥

श्रीतुलसीदासजीकृतगीतावलीपद ॥ जानकीबर सुन्दर माई । इंद्र नील मणि श्याम सुभगतन अंगमनोजनि बहु छबिछाई ॥ अरुण चरण अंगुली मनोहर नख द्युति-वंत कछुक अरुणाई । कंजदलनपै मनहुँ भौमदश बैठे अचल सुखदसि बनाई ॥ पीन जानु उर चारु जड़ित मणि नूपुर पद कल मुखर सोहाई । पीत पराग भरे अलिगण जनु युगल जलज लखि रहे लुभाई ॥ किंकिणि कनक कंज अवलीमृदु मरकत शिखरिमध्य जनु जाई । गई न उपर सभीत नमितमुख बिकसि चहूं दिशिरही लोनाई ॥ नाभि गँभीर उदर रेखाबर उर भृगु चरण चिह्न सुखदाई । भुजप्रलंब भूषण अनेकयुत बसन पीत शोभा अधिकाई ॥ यज्ञोपवित बिचित्र हेम मय मुक्तामाल उरसि मोहिं भाई । कंधतडित बिच जनु

सुरपति धनु निकट बलाकपांति चलिआई ॥ कंबुकंठ चिबुकाधर सुंदर क्यों कहौं दशननकी रुचिराई । पदुम कोस महँ बसे बज्र मानो निजसंग तड़ित अरुण रुचि लाई ॥ नासिका चारु ललित लोचन भ्रूकुटिल कचनि अनुपम छबिपाई । रहे घेरि राजीव उभयमानो चंचरीक कछु हृदय डेराई ॥ भाल तिलक कंचन किरीट शिर कुंडल लोल कपोलन झांई । निरखहिं नारि निकर बिदेहपुर निमि नृपकी मरयाद मिटाई ॥ शारद शेष शंभु निशिबासर चितवत रूप न हृदय समाई । तुलसिदास शठ क्योंकरि बरणै यह छबि निगम नेति कहि गाई ॥

सुधामुखीजीकृतपद ॥ बनो सियप्यारीको बनरा । कि बरबस मोहि लेत मनरा ॥ मौरशिर सोने को धारी । महामणि जटित तिमिरहारी । करण छबि मेहँदीकी न्यारी । महावर पगन चित्रकारी ॥ दोहा ॥ कंकणकी कमनीयता कही कौन पै जाय । झलकझलक लखि ललक खलक सब पलक न परत बिहाय ॥ पद ॥ गरे गजमोतिन के गजरा ॥ चलनि चितवनि चितगति चोरी । धाम के काम दाम छोरी । गर्भ तजि बिवस भइ गोरी । लाज कुल मरयादा तोरी ॥ दोहा ॥ हँसनि असी मुख म्यान तें सुधामुखी सित धार । काढ़ि कामिनी कतल करि इनको कौशल राजकुमार ॥ रँगीली अँखियनमें कजरा । बनो सिय प्यारीको बनरा ॥

केशवदासजीकृतदोहा ॥ श्रवण मकर कुण्डल लसत मुख सुखमा एकत्र । शशि समीप सोहत मनो श्रवण मकर नक्षत्र ॥

पंकजबाटिकाछंद ॥ अति बदन शोभ सरसी सुरंग । तहँ कमल नयन नासा तरंग ॥ जनु युवति चित्त बिभ्रम बिलास । तहँ भँवर भवत रसरूप भास ॥ दोहा ॥ ग्रीवा श्री रघुनाथकी लसति कंबु

बर बेष । साधु मनो बचकाय की मानो लिखी त्रिरेख ॥

जनतुलसीदासकृतपद ॥ रामको सब मुख चाहि रही । जाको मन अटको जाहिं अंग रहगयो जहँ को तही ॥ राजत राम कनक मण्डप तर संग सिया दुलही । ज्यों अक्षर मसीका कागजपर टारे टरत नहीं । तुलसी हिय हुलसी पुरनारी मुदित अशीष दई ॥

रसिकअलीजीकृतपद ॥ ऐ हेलि बनि बनो सम गुणरूप । बनरा श्री अवधेश ललन बर बनि लली मिथिला भूप ॥ मोतिनमौर बना शिर सोहै बनि शिर मौरि अनूप । रसिकअली रति मदन बिमोहत सिय रघुबर को रूप ॥

देवस्वामी० पद छंद सोहर ॥ नारि सुभग मंडप तर मंगल गावहीं । सुनि सुनि सीताराम बहुत सुखपावहीं ॥ काल करम गति छेकि इहै छबि नितरहीं । निरखि निरखि सब लोग महा सुखके लहीं ॥ राम केसरिया पट सजे सिया लालको । दुवो प्रीतिके रंग रँगे यहि चालको ॥ राम बसत नित सीयमें राममें सीय हैं । दोउनके पट कहत दोऊ एक जीय हैं ॥ प्रथम चउथ औ बीचके अक्षर जोरिकै । ये दोउ तारक सीम छनत रसघोरिकै ॥ मिथिलाजाउ अवधि कि अवधि इहँ आवऊ । दिनबिछोह कर हम कहँ बिधि न देखावऊ ॥ सरबस राज अरपि नृप राखहिं रामके । नाहिंतहोइ हैं बिदेह यथारथ नामके ॥ नित बिहार सिय रामको दोउ ठाउँ में । देवकरिहि यहिभांति कुशल दोउ गाउँमें ॥

रघुराज० पद ॥ मिथिलेश जुतैं अवधेश लसैं निज पूरबपुण्य प्रभाव लखैं । शिव शक्र धनेश गणेश दिनेश लहेफल जोनहिं तौन चखैं ॥ मिथिलापुर नारि सवाँरि शृंगार खड़ी कल मंगल गानकरैं । मुनि कौशिक और बशिष्ठ सतानँद चार करावत मोद भरैं ॥ सुरदार नचैं गतिगान रचैं बहु बाजन बाजिरहैं कलहे ।

जग बाजिन स्यंदन भीरभरी कढ़ि कौनसकैं करिकै बलहै ॥ सियराम बिवाह उछाह बढ़ो बहुभंडकटाह अनंद मढ़ो । रघुराज तिलोक तेहिंक्षणमें सबके मुखतें जय शोरकढ़ो ॥

संग्रह० चौपाई ॥ बिधिवतसों भांवरी कराई । बोले सतानन्द मुनिराई ॥

रघुराज० ॥ सखी करावहु सब यहिचारा । सेंदुर शीश बहोरन चारा ॥ दोहा ॥ सखी सयानी जाय तब कह्यो बचन रसपूर । करहु लाल निजपाणिसों सियहि शीश सेंदूर ॥ सेंदुर गहत न सकुचबश राम मंजु मुसक्याय । सखी बदन लखिरहिगये नीचे नैन नवाय ॥ करगहि बिमला रामको सेंदुरभाजन दीन । लाल शीश सेंदुर भरहु भगिनि सुरति कसकीन ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ राम सीय शिर सिंदुर देहीं । शोभा कहि न जात बिधि केहीं ॥ अरुण पराग जलज भरिनीके । शशिहि भूषि अहि लोभ अमीके ॥

श्रीकृपानिवासजीकृत ॥ काम करी करकमल नील धरि । राग परागनु राग मनो भरि ॥ भ्रमर पुंज शशिश्याम रुके जनु । तेर्षा बल्लभ इम अरपै मनु ॥

रघुराजसिंहकृतकवितसवैया ॥ श्रीरघुराज सिया शिरमें भरयोसेंदुर भंदहि मंद लजाई । गावन लागीं सखी सिगरी तहँ चारिहु बंधुन गारी सुनाई ॥ दूलहकी छबिमें छकिकै तकिकै जकिकै उपमा कह्यो भाई । सावन सांझकी भानुछटा घनश्यामघटा रही रेख सोहाई ॥ श्यामल पाणि पसारिसिया शिर सेंदुर देनलगे रघुराई । ताक्षण की सुखमा लखिकै सखिसों उपमा सखी एक सुनाई ॥ श्री रघुराज बिलोकु नई मृदुमांग सों देवनदी द्युति पाई । भारती धार लिहे यमुना मिलि सांची शृँगारि त्रिबेणी बनाई ॥सोरठा॥ सप्तपदी करवाय सतानन्द आनंद भरि । करवाये सबचार जौन चार बाकी रह्यो ॥ दोहा ॥ गौतमसुत बर करण सों देव बिसर्जन कर्म । करवाये बिधिवत सकल लोकरीति कुलधर्म ॥

संग्रह० चौपाई ॥ नव नव सुख पावत सबकोई । नर अरु नारि राम सिय जोई ॥ ब्याहसाज सबअंग सुहावै । सुंदरता लखि चित न अघावै ॥ सबही के मन प्रेम विशेखी । मनहुँ चकोर कलानिधि देखी ॥

श्रीतुलसीदासजीकृतचौपाई॥ बहुरिबशिष्ठ दीन्हअनुशासन । बर दुलहिनि बैठे यक आसन ॥ छंदगीतिका ॥ बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये । तन पुलकि पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नये ॥ भरि भुवन रहा उछाह राम बिवाहभा सबही कहा । केहि भांति बरणि सिरात रसना एक यहु मंगल महा ॥

श्रीरघुराजसिंहजूकृतपद ॥ सखि पश्य कोशल कांत सुखद कुमार मति सुकुमाकरम् । मैथिल निवास बिलास बिलसत मदन मनोपहारकम् ॥ मणिमंडये सीतायुतं सुखमाभरं सीताबरम् । सुबिवाह कर्म्म बिधान मति कुर्ब्बाणमद्भुतताकरम् ॥ मणि मुकुट पीताम्बर सुमध्य मुखारबिंद मनिन्दितम् । सेंदुर सुघन मस्तक दिवामणि मिवतडिद्गणवन्दितम् ॥ किञ्चित्कटाक्ष बिकाश बिक्षित जानकी सुखमासुखम् । गुरुजन निकट लज्जा वशंगतमधो भावित शशि मुखम् ॥ जनकात्मजार्पित दृष्टिकंकण कलितकरधृत चन्दनम् । रघुराज सुखित समाज शोभित सानुजं रघुनन्दनम् ॥

देवस्वामी० पदराग ॥ प्रीति अलौकिक राम सियाकी । कहि न जाय मनहीमन भावै जहां नहींगति जंतु जियाकी ॥ यह हिय वा हियसे सब बोलत वह हिय यासे कहत हियाकी । दोउ हियमें पश्यंती प्रगटी चलनिन मध्यम बैषरियाकी ॥ कहेसुने देखेसे जगमें होत भावमति पुरुष तियाकी । गुण धन रूप तीनि से उपजै औ बिनशै रतिसो बिषियाकी ॥ झूठी प्रीति भूमिगं औ

की मिटत अंतमें जीसबनियाकी । परमारथ सियरामदेव की प्रीति एकरस नहिं दुनियाकी ॥

श्रीतुलसीदासजीकृत कवित्त ॥ बाणी विधि गौरी हर शेषहूं गणेश कही सहीभरी लोमश भुशुंडि बहुबारिखो। चारि दश भुवन निहारि नर नारि सब नारदको परदा न नारदसो पारिखो॥ तिन्हकही जगमें जगमगात जोरि एक दूजोको कहैया औ सुनैया चखचारिखो । रमा रमरमण सुजान हनुमान कही सीयसी न तीय न पुरुष राम सारिखो ॥

रघुराजसिंह० दोहा ॥ सबै कह्योतहँ होतभो राम जानकी ब्याह । रह्यो भुवन सुखसिंधुभरि गान तरंग उमाह ॥

श्रीतुलसीदास०छंदहरिगीतिका ॥ तब जनक पाइ बशिष्ठ आयसु ब्याह साज सवाँरिकै । मांडवी श्रुतिकीरति उर्मिला कुंवरि लईं हँकारिकै ॥ कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुख शोभामई । सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई ॥ जानकी लघुभागिनि सकल सुंदरि शिरोमणि जानिकै। सो जनक दीन्हीं ब्याहि लषणहि सकल बिधि सनमानि कै ॥ जेहिनाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सबगुण आगरी । सोइ दई रिपुसूदनहिं भूपतिरूप शील उजागरी ॥ अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हिय हरषहीं । सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुरगण बरषहीं ॥ सुंदरी सुंदर बरण सह सब एकमंडप राजहीं । जनु जीवउर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं ॥

रघुनाथदासकृतकुंडलिया ॥ वपुष बितान बिचित्र मधि जीव

अवध अवधेश । जाग्रत अवस्था श्रुति सुयश बिभु विश्व रिपुदेश ॥ बिभु विश्व रिपुदेश स्वप्न मंडवी बिमल मति । बिभु तेजक सो भरत उर्मिला उदित सुषोपति ॥ उदित सुषोपति केर बिभु प्रागैकं लक्ष्मण अदुष । तुरी सिया बिभु रामजी अंतर्यामी दिवि बपुष ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ मुदित अवधपति सकलसुत बधुन समेत निहारि । जनु पाये महिपालमणि क्रियन सहित फल चारि ॥ अर्थ क्रिया आधीनता धर्म कि सरधा शक्ति । काम क्रिया कर्त्तव्यता मोक्षके केवल भक्ति ॥ श्रुति कीरति रिपुहन अरथ भरत मंडवी काम । धर्म धरणि धर उर्मिला मोक्ष जानकी राम ॥ चौपाई ॥ जस रघुबीर ब्याहबिधि बरणी । सकल कुँवर ब्याहे तेहि करणी ॥ कहि न जाइ कछु दाइज भूरी । रहा कनक मणि मंडप पूरी ॥ कंबल बसन बिचित्र पटोरे । भांति भांति बहु मोलन थोरे ॥ गज रथ तुरँग दास अरु दासी । धेनु अलंकृत काम दुहासी ॥ बस्तु अनेक करिय किमि लेखा । कहि न जाय जानहिं जिन देखा ॥ लोकपाल अवलोकि सिहाने । लीन्ह अवधपति सब सुखमाने ॥ दीन्ह याचकन्ह जो जेहि भावा । उबरा सो जनवासे आवा ॥ तब करजोरि जनक मृदुबानी । बोले सबबरात सनमानी ॥ छंदहरिगीतिका ॥ सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइकै । प्रमुदित महामुनि बृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइकै ॥ शिरनाइ देव मनाइ सबसन कहत कर संपुट किये । सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल अंजलि दिये ॥

संग्रह० चौपाई ॥ असकहि बचन जनक नृपराई। अनुज सहित समधी ढिग आई ॥

रघुराजसिंहजूकृत ॥ कोशलपतिको पूजन कीन्ह्यो। हय गय बसन बिभूषण दीन्ह्यो ॥ स्यंदन शिविका साजि अनेका। भाजन बिबिध भांति सबिबेका ॥ दै यह अंगन अतर लगाये। मोद मूल तांबूल खवाये ॥ दिये अँगूठी रतन प्रधाना। बहुरि बिनय बश बचन बखाना ॥

श्रीतुलसी०छंदहरिगी० ॥ करजोरि जनक बहोरि बंधु समेत कोशलरायसों। बोले मनोहर बयन सानि सनेह शील सुभायसों ॥ सम्बंध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भये। यह राज साज समेत सेवक जानवी बिनु गथलये ॥

रघुराजसिंहजीकृतचौ० ॥ राख्यो सुरति जानि निज दासा। मोहिं सकल बिधि राउर आसा ॥ मिथिलापुर निमिकुल परिवारा। और जहांलगि अहै हमारा ॥ सो बिन संशय भूप तिहारा। कबहुं और नहिं किहेहु बिचारा ॥ असकहि रह्योमौन करजोरी। कह अवधेश गिरा रसबोरी ॥ आप सरिसहौ आप बिदेहू। बसुधा बिदित प्रताप सनेहू ॥ रघुकुल अवधराज सुतचारी। मोरि बिभूति नरेश तुम्हारी ॥ सात द्वीप नवखंड प्रयंता। जहँलगि शासन मोर दिगंता ॥ दोहा ॥ तहँलगि राउर भूपमणि सत्यसत्य मम बैन। नहिं अन्यथा बिचारियो यहमुख वृथा कढ़ैन ॥

संग्रह० ॥ यहि बिधि दशरथ नृप बचन बरणे सहित सनेह। प्रेमसनी बानीसुनी बोले बहुरि बिदेह ॥

श्रीतुलसी०छंद ॥ ये दारिका परिचारिका करिपालवी करुणामयी। अपराध क्षमियो बोलि पठये बहुत हमढीठीदयी ॥ पुनि भानुकुल भूषण सकल सन्मान बिधि समधी किये। कहिजात नहिं बिनती परस्पर प्रेमपरिपूरणहिये ॥

रघुराज० चौपाई ॥ भाग्य विवश तुम्हरे घर जाहीं। तजि खेलन जानै कछु नाहीं ॥ समै सम्हारब क्षमि अपराधा। अबलौं लही न कौनिहु बाधा ॥ इतते उत सुख बिभव महाना। पै शिशु भाव कछू नहिं ज्ञाना॥राजरीति सबदिहेहु सिखाई। करैं न कछु बिनशासनपाई ॥ अबलौं कोउ नहिं आंख देखाई। इनहिंकह्यो कछु माष जनाई ॥ रहीं कुमारी प्राणपियारी। भईं सकलसुत बधू बिहारी ॥ मोर मान इनकर कुशलाई। बहुत कहां लागि कहौं बुझाई॥प्रेममयी मिथिलाधिप बानी। सुनि बोलेउ दशरथ मति खानी ॥ पुत्र बधू पुनि आप कुमारी। को इनते अब मोहिं पियारी ॥ जिमि मिथिला तिमि अवध अगारा। जानहुं सब बिधि सुख उपचारा ॥ नैन पूतरी सरिस कुमारी। बसिहैं सदन सदा सुख भारी ॥ दोहा ॥ राजन देहु रजाय अब जनवासे कहँ जाउँ ॥ निशा अशन कुवँरन सहित करन हेतु ललचाउँ। चौपाई ॥ कह्यो बिदेह आप पगु धारो। बाकी कछु कोहवर कर चारो ॥ चार कराय सुतन पठवैहौं। अब नहिं कछू बिलम्ब लगैहौं ॥ बालक नींद बिवश अलसाने। किमि करिहौं बिलम्ब जिय जाने ॥ सुनि मिथिलेश बचन अवधेशा। उठ्यो प्रमोदित सुमिरि गणेशा ॥

श्रीतुलसी०छंद ॥ बृन्दारका गण सुमन बर्षहिं राउ जनवासहि चले। दुंदुभी जय ध्वनि बेद ध्वनि नभ नगर कौतूहल भले ॥ तब सखिन मंगल गान करत मुनीश आयसु पाइकै। दूलह दुलहिनि सहित सुंदरि चलीं कोहवर ल्याइकै ॥ दोहा ॥ पुनि पुनि रामहिं चितवसिय सकुचति मन सकुचैन। हरति मनोहर मीन छबि प्रेम पियासे नैन ॥

श्रीकृपानिवासजीकृत ॥ सिय दृग पिय छबि बिहरतैं अटके

मृदुल निचोल । जनु युग मीन सिवार फँसि चाहत सलिल किलोल ॥

रघुराजसिंहजीकृतचौपाई ॥ मिलि मिथिलेशहि बारहिंबारा । करि प्रणाम मुनि जनन उदारा ॥ बिश्वामित्र बशिष्ठ समेतू । चलेउ भूप जनवास निकेतू ॥ बिबिध भांति पुनि बजे नगारा । दिग स्यंदन स्यंदन असवारा ॥ भये सुमंत सहित तेहि काला । चली संग चतुरंग बिशाला ॥ छरे छबीले राजकुमारे । रहे राम सँग चलन पियारे ॥ तहां हजारन बिमल मसाला । चलीं प्रकाश करत तेहि काला ॥

संग्रह० ॥ जनवासे आयउ नृपराई । बैठे परमानंद छकाई ॥

रघुराज० ॥ बोली तहां सुनैना रानी । बोलि सखी जनसुखी सयानी ॥ लै दुलहिनि दूलह कहँ जावो । हिलि मिलि कोहवर चार करावो ॥ सो सुनि उमगान्यो अनुरागा । सखिन यूथ जुरि कै बड़भागा । गावहिं गीत मोद सरसानी । दूलहसों अस गिरा बखानी ॥ चलहु लाल कोहवर सुखदाई । चारिहु बन्धु उठे मुसक्याई ॥ आगे आगे चलीं सुवासिनि । अर्घ देत हिय माहँ हुलासिनि ॥ तहँ लक्ष्मीनिधि की बर नारी । सिद्धिनाम तुरतै पगुधारी । राम पाणि गहि चली लेवाई । जोरे गांठिनि चारिहु भाई ॥ आगे दूलहदुलहिनि पीछे। उभय ओर सबसखीतिरीछे ॥

अथ श्री रघुनन्दन की सरहज को गान ॥

प्रियाशरण०छंदसोहरमें ॥ बदन चंद रघुनंद इन्दु बदनीसिया । दूलह मिलि जस दुलहिनि दुलहिनि तसपिया ॥ पुरबासी सब धन्य युगल छबिदेखहीं । प्रियाशरण निज जन्म सुफल करिलेखहीं ॥ गौर बरण छबि अयन सिया दुलहिनि बनी । जेहि निरखत रघुलालहिं परमानँद घनी ॥ श्यामबरण शृंगाररूप बनराबनो । जेहि लखि दुलहिनिके मन आनँद अति सनो ॥ मुदित सकल बरयुवती मंगलगावहीं । प्रियाशरण छबिदेखि युगल सुखपावहीं ॥

रघुराज०चौपाई ॥ जनक नगरकी सखी सयानी । बोलहिं व्यंग भरी बहु बानी ॥ चलहु कुवँर कछु धीरे धीरे । सुनियत घर के अहौ अमीरे ॥ तुमहिं कौन चंचल गति सिखई । जननी भगिनि किधौं कछु बिषई ॥

संग्रह० ॥ बहु बिधि करति रामसों हासा । सकल तियन मन परम हुलासा ॥

रघुराज०दोहा ॥ रघुनन्दन बोले बिहँसि जहँ लक्ष्मीकर बास । तहँ चंचलता होति हठि हठि तहँ बिषय बिलास ॥ चौपाई ॥ लक्ष्मीनिधिठाकुर कहँपाई । काके भवन बिषय अब जाई ॥ जहँ चंचलता तहँ चपलाई । हमतो गहे अचंचलताई ॥ उत्तरसुनत समुझि मुसुक्यानी । राजकुमार चतुर गुणखानी ॥

संग्रह० ॥ पुनिपुनि रामस्वरूप निहारी । प्रेमासक्त भईसबनारी॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ श्याम शरीर सुभाय सुहावन । शोभा कोटि मनोज लजावन ॥ जावक युत पदकमल सुहाये। मुनि मन मधुप रहत जहँ छाये ॥

कृपानिवास० ॥ अरुण चरणतल श्याम पृष्टि बर । रसिक राग पर काम कलाधर ॥ कनक पैंजनी मुखर मनोहर । शारद पदसों भक्ति बिनयकर ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ पीतपुनीत मनोहर धोती । हरतबालरबि दामिनि जोती ॥ कल किंकिणि कटिसूत्र मनोहर। बाहु बिशाल बिभूषण सोहर ॥ पीत जनेउ महाछबि देई । करमुद्रिका चोरि चित लेई ॥ सोहत ब्याह साज सब साजे । उरआयत सबभूषण राजे ॥ पीत उपरना कांखा सोती । दुहुँ आचरन्ह लगे मणि मोती ॥ नयन कमल कुंडल कल काना । बदन सकल सौंदर्य निधाना ॥ सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भालतिलक रुचिरता निवासा ॥

कृपानिवास० ॥ अलकें झलकें मुखपर कारी । मदन दूतिका छुरी शिकारी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सोहत मौर मनोहर माथे । मंगल मय मुक्ता मणि गांथे ॥ छंदगीतिका ॥ गांथे महामणि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं । पुरनारि सुर सुंदरि बरण बिलोकि सब तृण तोरहीं ॥ मणि बसन भूषण बारि आरति करहिं मंगल गावहीं । सुर सुमन बरषहिं सूत मागध बंदि सुयश सुनावहीं ॥

रघुराज चौपाई ॥ लक्ष्मीनारायण कुल देवा । जनक करहिं दिन प्रति जिन सेवा ॥ सोइ कोहवर मंदिर अति सुंदर । बन्यो उतंग कनक जनु मंदर ॥ मोतिन झालर तन्यो बिताना । तहँ बिभूति औरहीं बिधाना ॥ आगे सिद्धि सखी सब पाछे । सुरतिय सम पट भूषण आछे ॥ कुँवरि सहित बर आसन माहीं । बैठाई बर दुलहिनि काहीं । नारायण पूजन करवाई । बिप्र बधू सब चार कराई ॥

श्रीतुलसी०छंदहरिगीतिका ॥ कोहवरहिं आने कुँवर कुँवरि सुआसिनिन सुख पाइके । अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइके ॥ लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन शारद कहैं । रनिवास हास बिलास रस बश जन्मको फल सब लहैं ॥ निज पाणि मणिमहँ देखि प्रति मूरति स्वरूप निधानकी । चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरहबश भइ जानकी ॥

रघुराज०चौपाई ॥ तहां सिद्धि अस गिरा उचारी । नेग देहु हमरो मनहारी । निगिभ बस्तु जो होइ तिहारी । सोइ सवति मम होय सुधारी ॥ तुमसंसार सार रघुराई । मुनि उपकार किये चितलाई ॥ दोहा ॥ सुनि सरहजके युक्तियुत बैन मंजु मुसक्याय । प्रेमसुधा

बरषत श्रवण कहे बचन रघुराय ॥ जिनके कुलमें कन्यका बीरज मोल बिकाय । पुहुमीते प्रगटै सुता तहँको नेग वृथाय ॥ चौपाई ॥ पटुका छोर पकरि सुकुमारी । हँसि बोली लक्ष्मीनिधि प्यारी ॥ लेहु लाह लालन लहकौरै । करहु कुवँर कर कुवँरि सुकौरै ॥ मिसिरी युत दधि देहु खवाई । कुवँरि खवैहै पुनि बरिआई ॥ सुनियत रघुकुलके बलहीना । गुरुते राखत बंश प्रवीना ॥ सुनत राम बोले चितचाये । जूँठ आजलौं हम नहिं खाये ॥ सबको हम निज जूँठ खवावैं । योगी बरबस तुमकहँ पावैं ॥ कही सिद्धि पुनि गहि पटछोरा । मानहुँ लाल कहौं सति मोरा ॥ बढ़ि बढ़ि बातैं जनि बतराहू । कियो मुनिन सँग भगिनि बिवाहू ॥ आये ब्याहन जनककुमारी । भरे चरण महँ तुम बहुनारी ॥ तुम्हरे कुलमहँ सुनियत प्यारे । पुरुषहु उदर गर्भको धारे ॥ तब प्रभु हँसि अस वचन उचारा । नहिं मंथनते बंश हमारा ॥ यदपि योगिजनते तुवनेहू । तदपि बसहु भोगिनके गेहू ॥ दोहा ॥ चलहु अवध पुरको अवशि लै भगिनी नव आठ । निवसि निहंगनके निकट काहे करहु उकाठ ॥

बिश्वनाथसिं०चौपाई ॥ ताते तुमहिं उचित उरधारो । अवशि अवध पुर मुदित सिधारो ॥ राम बचन सुनि कह सब आली । चतुरजेठ दूलह अति ख्याली ॥ देवनारि धरि सखी स्वरूपा । लषण राम को लखन अनूपा ॥ बैठीं सखिन मिलीं तेहि ठाईं । करहिं चार नाइनिकी नाईं ॥ तहँ शारदा राम ढिग जाई । राम पाणि गहि कछु मुसक्याई ॥ दधि मिसिरी प्रभु कर उठवाई । लगी खवावन सियहि तहांई ॥ प्रभुसकुचे नीचेकरि नैना । बोले मंद मंद मृदु बैना ॥ मुखरकरहु जग जग को आजी । बैठोरूप गोपि कहँ लाजी ॥ गिरा सुनत हरिगिरा सोहाई । बैठीजाय दूरि सकुचाई ॥ सखि स्वरूप गौरी सिय नेरे । बैठी ताहिं रामदृगहेरे ॥ करिप्रणाम बोले मुसुक्याई । गिरि गिरिश वृषताजि किमिआई ॥ कह्यो श-चिहि पुनिप्रभु अस बानी । तुमहौ त्रिभुवन की महरानी ॥ सहस

मैन कर संग बिहाई । तजिअमरावति कस तुम आई ॥ दोहा॥ देव नारि सुनि सुनि बचन सकुचि सकुचि उठिजाय। सखिन ओट लै लै सबै बैठीं शीशनवाय॥ चौपाई॥ तहँ कमला शशिकला बिशाषा। बोलीं बचन भरी अभिलाषा॥ हमरे कुलकर जो कछु चारा। हम करवैहैं सहित बिचारा॥ ये अयान जानहिं कछु नाहीं।कहँते आई यह घर माहीं॥ अस कहि राम सीय ढिग जाई। चार करावन लगीं सोहाई ॥ प्रभु कर गहि मिसिरी दधि प्यारी। सिय मुख परस कराय सुखारी॥ पुनि उठाय सिय कर दधि लीन्हे। परस करावन सन्मुख कीन्हे॥ सिय कर युत सखि कर रघुराई। निज कर करि दिय ऊँच उठाई॥ परयो सखिन शिर पर दधि पीछे। हँसन लगीं तिय ताकितिरीछे॥ मधुरअली तब करि चतुराई। दै धोखो दधि दियोछुआई॥ कह्यो रामसों पुनि मुसक्याई। चली न इत राउरि चतुराई॥ जो तुम्हरे कछुमन अभिमानू। हमहीं हैं बड चतुर सुजानू॥ खेलहु लला जुआं यहि ठाऊं। जीते चतुर धरायो नाऊं॥ दोहा॥ अस कहि रतन अनेक धरि कनक थार भरि नीर। लगीं खेलावन यूत सखि सिय को अरु रघुबीर॥

श्रीतुलसीदासजीकृतसवैया॥ दूलह श्री रघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मन्दिर माहीं। गावति गीत सबै मिलि सुंदरि वेद युवा जुरि बिप्र पढ़ाहीं॥ रामको रूप निहारति जानकी कङ्कण के नगकी परछाहीं। याते सबै सुधि भूलिगई करटेकि रही पल टारत नाहीं॥

रघुराजसिंहकृत॥ मुसक्याय सुनैन नचाय तबै कह सिद्धि हरे हँसिकै बतियां। न जुवाँ में लला लली जीत न पावैं लगाये रहे अपनी घतियां॥ सिय आजु न लाज को काज कछू छल छाजि छटे रघुराउ पिया। नतो बात जई मिथिलापुरकी पछितात जई सिगरी रतिया॥ सजनी कोउ सिद्धिकी बोलातहां

अब जानिहैं सत्य सखी सिगरी। यदि हारिगे लाल लली ते इतै रघुबंशिन बात सबै बिगरी॥ सतिभे नहिं कौशलनाथ सुतै यह बिश्वमें कीरतिहू बगरी। रघुराज ये श्यामल गौरनकी नहिं न्याय की नीति अबै निगरी॥ सुनि प्यारीकी प्यारी गिरा हँसि कै लषणे दिय उत्तर मोदमये। मिथिलापुरकी हौ सुआसिनी तूं पै अनंग मवासिनी चित्त चये॥ जिनके घर मातु पिता न जनै सुत भूमि को फोरि कढ़ैं भनये। रघुराज कुलै सरि तेऊ करैं हम तो यह देखि अचर्थ भये॥ दूलह त्यों दुलहीको जुवां सखियान लै सिद्धि खेलावन लागी। लै मुक्ता मणि माणिक हीरन पाणि उछालन लागी सोहागी॥ श्री रघुराज बिदेह लली तहँ दोहुन कीदुगुनी द्युतिजागी। मानों हजारन तारनको रबि चंद सुधारन लागे सुरागी॥ गावतीं गर्व गहे गुणको मृदु गीतन गोरी सुदैबहु गारिन। हारे लला अब हारे लला अस भाषतीं देतीं तिया बहु तारिन॥ जीती हमारी लली रघुराज मँगावो द्रुतै अनुजा मुनि प्यारिन। नातो बिचारि कै नातो बिदेह बोलाइ हैं रावरेकी महतारिन॥

प्रियाशरण॰सीताअयनदोहा॥ सिद्धा लक्ष्मीनिधि प्रिया रघुबरसों बर बयन। बोली रौरे हारिली सियसों राजिव नयन॥ अबतो सबरसरीति में होइहि रोरेहार। चेटक छबि सब कुवँरि सबतुम आसक्तबिहार॥ सवैया॥ रूपछिपाये रहीं गिरिजा गिरा गोरिन गोहन में लगीं गावन। जो बलते मधुकैटभ जीत्यो जिते दिति के द्वै कुमार भयावन॥ सो बल आज कहांगयो लाल बिदेह ललीके समीप सोहावन। आजलों हारे न तूं रघुराज सो हारे गहो सिय पावन पावन॥ आतुरी चातुरी भूलिगई सब मोहनी रूपकी रीति परानी। रावरेको ठगिबो रह्यो आवत बापुरे बावरे को पहिंचानी॥ जानकी जानी हती न सुजान लगे जुवाँ खेलन जीतही जानी। चंचलता न चली रघुराज करी बलिसो जो छटी छल छानी॥ दोहा॥ रघुनंदन बोले बिहँसि होय भमानी जोय।

तेहि धोखो देनो भलो भावत बन बपुगोय ॥ हम सूधे क्षत्री बिमल नहिंजानैं छलछंद। अपनेते बरती बरग यहिपुर सुता स्वछंद ॥ चौपाई ॥ कही नागरी कोउ मिथिलाकी। करहु कला करि लला वलाकी ॥ बाती मेरवनको इतचारा। करहु लाल लागै नहिं वारा ॥ प्रभु मुसक्यात न टारत बाती। गारी देतीं नारि सोहाती ॥ बाती मेरवन मिसि तहँ प्यारी। परसहिं प्रभु कर मृदु मनहारी ॥ बिबिध युक्तिके बैन सुनामैं। उतर न देत बंधु लजिरामैं ॥ बहुरि कह्यो बंधुन रघुराजू। नहिं ससुरारि लाजकर काजू ॥ नट नागरी विदेह नगरकी। आसिनि महैं सुआसिनि बरकी ॥ यह सुनि अपर कह्यो मुसक्याई। भानुबंश की रीति सदाई ॥ तिय तौ तिय पूरुष भे बामा। नारी कवच धरायो नामा ॥

संग्रहकर्त्ता० ॥ तियगण अस बहु बचन सुनावैं। राम बंधु युत सुनि मुसकावैं ॥ पुनि तहँ बोलिउठी यक गोरी। व्यंगभरी बाणी रसबोरी ॥

देवस्वामीकृत पद ॥ हँसि हँसि पूँछति हैं रघुबरसे। कौतुक घरमें नारि ॥ तुमहिं जगतको सार कहहिं मुनि कहि न सकहिं हम डरसे। तुम नहिं पुरुष न नारि कहत श्रुति खेलहु खेल मकरसे ॥ सोइ लखिपरत मकर कुंडलसे और किशोर उमरसे। दशरथ गोर कौशला गोरी तुम सांवर केहि घरसे। दोउनको हरि ध्यान प्रगटभा अस हमरी अटकरसे ॥ व्यंग चतुरता गारी सुनिकै देखा राम नजरसे। भई कृतारथ देव मनावहिं जनि ये जाहिं नगरसे ॥

संग्रह० चौपाई ॥ हँसि बोली कोउ नवल कुमारी। राजकिशोरन रूप निहारी ॥

रघुराजसिंहजीकृत ॥ देखहु सखि इन चारिहु भाई। नारिहुते अति कोमलताई ॥ अवध पुरुष अस तौ कस नारी।

मुनि मानसकी मोहनवारी ॥ बिहँसि राम तहँ गिरा उचारी । पूरब कसनहिं लिह्यो बिचारी ॥

बिश्वनाथ० ॥ अवधनगर महँ नागर नरहैं । यहां बिदग्धा बनिताबरहैं ॥ सो जो गो अब निकट निहारी । अवधहि लाय कतकि इतबारी ॥ दोहा ॥ चारिहु बंधुनको हमें जानि लईती नारि ॥ चारि कुमारिनि ब्याहि पुनि कीन्ह्यो काह बिचारि ॥ चौपाई ॥ अपर कही मिथिलापुर बासिनि । मंद मंद मुसक्याय हुलासिनि ॥ क्षत्री भानु बंशकुल ऊंचो । जगमें सुन्यों न नेसुक नीचो ॥ यही बिचारि कन्यका ब्याही । कहि है कोउ अनु-चित यहनाहीं ॥ पै इक्ष्वाकुबंश प्रभुताई । लालन कौनहेतु बिसराई ॥ ब्याह्यो शृंगीऋषि भगिनीको । शांता नाम कही को नीको ॥ तुमहिं न लाज लगत रघुराजू । बाती मेरवन परिहै आजू ॥ जीते काम बाम नहिं जीते । जानकि जानि न जानहु जीते ॥

संग्रहक० ॥ कोउ नव नागरि बुद्धि उपाई । राजकुमार छलन। चितचाई ॥

प्रियाश० दोहा ॥ सब दुलहिनिकी पदतरी किंकरिते मँगवाइ एक मूर्तिनिर्माण करि बस्तर दियो ओढ़ाइ ॥

संग्रह०चौ० ॥ सिद्धा कलुक मंद मुसकाई । राजकुमारनको दरशाई ॥

रघुराज० ॥ आये रघुबंशिनके देवा । तुमसों लाल करावन सेवा ॥ तिनको शिरनावहु सब भाई । इन्हेंदेवि कौशलापठाई ॥

प्रियाशरण० ॥ ताते शीघ्र नवावहु माथा । लेहु अशीश मु-दित रघुनाथा ॥

रघुराज० ॥ भरत बिहँसि तब बचन बखाने । रंगदेव ताजे

देव न जाने ॥ जिनके घर देवन बहुताई । ज्ञान बिराग योग अधिकाई ॥ ते सेवन देवनको जानै । देवन रीति भवन महँ मानै ॥ दोहा ॥ अपर सखी बोली बिहँसि नट नागर नृपलाल । अहैं बराये चारिहूं नन्दन अवध भुवाल ॥ चौपाई ॥ करि कटाक्ष कोउ कह अस बामा । घर बाहरौ रमै सो रामा ॥ प्रभु कह सत्य कही मनभावनि । निमिकुलकी कीरति अति पावनि ॥ सुत पितु अजहूं अरु परपाजा । जनक कहावत लगति न लाजा ॥ सुनि प्रभु बचन सबै मुसक्यानी । सकल कहैं नृपसुत मतिखानी॥नटनागर नटखटी अनोखे । चञ्चल चारु चतुरता चोखे ॥ कहे बचन पैहौ नहिं पारा । सखी करावहु कोहवर चारा ॥ गाय गाय बर मंगल गाना । चार कराये सहित बिधाना ॥ वेदरीति कुल रीति निवाही । कहैं न बर जनवासे जाही ॥ तहँ रनिवास हासरस मांचा । सबही कर अतिशय मन रांचा ॥ जानि तहां अति काल सुनैना । आय जनक रानी कहबैना ॥ जनवासे अब कुवँर पठावो । काल्हि कलेऊ हेत बोलावो ॥ सासु बचन सुनि सिद्धि सुखारी । कही गिरा रामहिं मनहारी ॥ दोहा ॥ अब जइये जनवास को लालहोत अतिकाल । काल्हि कलेऊ के समय देहौ उतरु रसाल ॥ छंद ॥ सुनि सिद्धिके अस बचन सुंदर रचन पाय हुलास । चारिहु कुवँर प्रमुदित उठे करि बिबिध हास बिलास ॥ दिय छोरि गांठी सिद्धि सुंदरि बधुनकी सकुचाय । चारिहु कुवँर दोउ सासु को सहुलास शीश नवाय ॥ गवने हरत मन दृगन फेरत मनहुँ सखिन हुलास । छलि छीनि चारिउ छैल तेहि क्षण जात हैं जनवास ॥ मणि पट बिभूषण करहिं निवछावरि अलीगण गेरि । प्रभु सहित शील सनेह नैनन देति आनँद हेरि ॥

श्रीकृपानिवासकृतछंदहरिगीतिका ॥ तब धूप दीप सुगन्ध भर कर आरती धनवारती । नव रूपजोरी रंगबोरी तोरितृण सुनिहारती ॥

श्रीतुलसीकृतछंद ॥ कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली। बर कुँवरि सुन्दर सकल सखिन लिवाइ जनवासहिं चली ॥

श्रीरामप्रियाशरणजी कृत छप्पै ॥ महल द्वारतक चलीं सकल रानी पहुँचावन । सुआसिनिनकी भीर लगीं सखियां सबगावन ॥ मधि किशोर चितचोर राम छबि बरणि न जाई । कुँवरिनकी अति छबि निहारि रतिहारि लजाई ॥ महल द्वारलों सब गईं आईं अति छबि नालकी । दुलहिनिचढ़ि वर नालकी षट बसु षोड़श पालकी ॥

श्रीरघुराजसिंहजीकृतछंद ॥ यहि भांति चारिहु बंधु द्वारे आयगे सुख छाय । तेहि काल मिथिला पाल संयुत लाल आयेधाय ॥ मिलि राम बारहिंबार भरतहि लषण अरु रिपु शाल । करजोरि सब मांगे बिदा शिरनाय दशरथ लाल ॥ दिय कोटि आशिषलायउर पुनि नैन अम्बु बहाय । नृप कह्यो का करिये कुवँर सुख जाय नहिं कहिजाय ॥ भेव्यो बहुरि लक्ष्मीनिधिहु प्रभु मिले सहित सनेह । चारिहुकुमार सवारभे उतगये गेह बिदेह ॥ आये सखा सब राम के निवछावरें मणिकीन । बोलेबिहँसि ससुरारि प्रिय अति काल नहिं चित दीन ॥ नहिं दीन उत्तर सकुचिबश चढ़िकै तुरंग उतंग । गवने कुवँर जनवास को सुन्दर सखा सब संग ॥ बाजे नगारे शोर भारे बांसुरी करनाल । बरषे सुमन मुद मगन सुरचढ़ि गगनयान बिशाल ॥ बाजी उछालत नैन चालत चले राजकुमार । ते सखा राजकुमार गमने संग पंचहजार ॥ फहरात बिमल निशान आगे तुंग छ्वै असमान । मनु तासु पवनहि पाय तारा वृन्द नभ बिलगान ॥ महताब और मशाल भातहिं होत दिन इव जात । बाजत अनेकन दुन्दुभी नहिंशोर भुवन समात ॥ पुर नारि नर मोदित खड़े पथ वृन्दवृन्दबजार । रीझत मनहिं खीझत पलक लखि चारु चारि कुमार ॥ यहि

भांति चारिहु कुवँरबर आवतभय जनवास। देखनबराती सबै ठाढ़े नहिंसमात हुलास॥

श्रीरामप्रियाशरणजीकृत दोहा॥ अवधपुरी दासीसकल खड़ीं महलकेद्वार। आवनिलाल निहारहीं नयननिमेष बिसार॥

श्रीतुलसीदासजीकृतछंदहरिगीतिका॥ तेहिसमय सुनिय अशीष जहँतहँ नगरनभ आनंदमहा। चिरजियहु जोरी चारु चारिउ मुदितमन सबहीकहा॥ योगीन्द्र सिद्धमुनीश देव बिलोकिप्रभु दुन्दुभिहनी। चलेहर्षि बर्षिप्रसून निजनिजलोक जयजयजयभनी॥ दो०॥ सहित बधूटिन कुवँरसब तबआये पितुपास। शोभामङ्गल मोदभरि उमँगेउ जनु जनवास॥

संग्रह०चौपाई॥ खड़े बराती मनललचाये। देखिकुमारन अति सुखपाये॥ कुवँरन नृपकहँ शीशनवाये। दै अशीष दशरथ हरषाये॥ निवछावरैं कीन्ह नृपराई। हृदयमोद कछु कह्योनजाई॥ सुमन्तादिसब करहिं निछावर। सकलबराती परम प्रेमभर॥

रामप्रियाशरण०॥ मुनिवर बेदनिऋचा उचारें। नभसुरगण जयजयतिपुकारें॥

संग्रह०॥ दुलहिनिन तिय मुदितउतारी। गांठिजोरि पदपांवड़ेडारी॥

प्रियाशरण॥ लोक वेदविधि मुनिवरकीन्हा। गृहप्रवेशहित आज्ञादीन्हा॥ गये महलभीतर रघुराई। सखियन बहुबिधिमंगलगाई॥

कृपानिवास०दो०॥ करिकुलरीति सुआरती लियेगोद भरिमोद। पधराये छाये सदन नवनित प्रगट विनोद॥

रघुराज०छंद॥ अवधेशबोलेउ बचन जानि बिलंबबाढ़ि तेहिकाल। बैठहुनइत यकक्षणहु अब कीजेबियारीलाल॥ युगयाम बीतिगई निशा कहियो किसा नहिंनेक। करिकै कछुकभोजन त्वरित कीजे

शयन सविवेक ॥ शिरनायचले कुमारसब पितुकी रजायसुपाय। हिलिमिलिकिये भोजनरजनि व्यंजनविशेष निकाय ॥

संग्रह० ॥ अचवनकियो चारिहुकुवँर गवनेसो निजनिजऐन। मणि कनकबरपर्यंकपर कीन्हेसुखित तिनशैन ॥

प्रियाशरण०दो० ॥ वहांजनक निजज्योतिषिन पूंछतभे मृदुबात। कहहुरहीअब रातकेति जोसुख नहिंलखात ॥

संग्रह० ॥ अर्द्धनिशापै चारिघड़ि बीतिगई सुखमूल। कुवँरिन लेहुबुलायअब भयोमुहूर्त अनुकूल ॥ असतुनि नृप लक्ष्मीनिधिहि कहिपठये जनवास। आयनायशिर भूपको कीन्हेबचनप्रकास ॥ लक्ष्मीनिधिके बचनसुनि दशरथ गुरुनबुलाय। आयेलेन दुलहिनिन दीजिय सँगपठवाय ॥

प्रियाशरण०छप्पै ॥ मंगलमोद निधान समयशुभ जानिमुनीशा। दइ आज्ञा तब बिदा कीन्ह दुलहिनि अवनीशा ॥ लक्ष्मीनिधि श्रीनिधि प्रणाम करि राय मोद मन। चले अशीशहि पाय सकल आये पुलकित तन ॥ रानी सब गोतनी सहित द्वार भेटि सुख पायऊ। मंगल गान करति सब मन्दिर आय सुहायऊ ॥ दोहा ॥ जननी सिया सनेहको को अस बर्णै गाय। जानहिं दोऊ अगम अति कवि बर कहत लजाय ॥ करति दुलार अनेक बिधि पूछति भोजन हेत। नहिं चित पाई नयन में अलसानी छबिदेत ॥ अष्ट अष्ट षोड़श सकल तिन्हें रानि समुझाय। अलसानी कुवँरी सबन शयन करावहु जाय ॥ चलीं सिया सब बहिनियुत शयन महलकी ओर। जननी गवन छबि निरखहीं कोटिन रति चित चोर ॥ महल जाय बर सेजपर पौढ़ींसकल कुमारि। चौकी में प्रमुदित रहीं षट बसु षोड़श नारि ॥ पुर युवती मंडप निकट गानकरहिं चहुंओर। नाचत गावत भोर भइ प्रेम प्रमोद न थोर ॥

संग्रह०दोहा ॥ उठी सकारेहि जानकी प्रात कृत्य निरवाय। गई सीय जननी मुदित लई गोद बैठाय ॥ छंद ॥ कीन्ह बिदा

दुलहिनि को लक्ष्मीनिधि के साथ। पुनि निज सदनमें शयन कीन्हो मुदित कोशलनाथ ॥

रघुराज० ॥ कोशल निवासिन सकल आनन्द भयो जो तेहि रैन । सहसहु बदन नहिं कहिसकत यकबदन बदत बनैन ॥ तहँ सकल कोशलनगर बासिन बढ़ी अतिशय प्रीति । नहिं रामब्याह किसाबिती बरणत निशा गै बीति ॥ दोहा ॥ सकल बराती जाग तै लहे प्रमोद प्रभात । बंदीजन बिरदावली गाय उठे अवदात ॥ चौपाई ॥ उठेउ महीपति सुमिरि गोबिन्दा । करि सुरभी दरशन सानन्दा ॥ देखि बदन घृत महँ युत हेमा । सरबस परसि निवाह्यो नेमा ॥ बैष्णव विप्र वेदविद आये । सादर भूप तिन्हैं शिरनाये ॥ छ्वै क्षोणी क्षितिपति पढ़ि मंत्रा । तज्यो सेज जेहि तेज स्वतंत्रा ॥ प्रात कृत्य नृप सकल निबाही । बैठेउ राज सिंहासन जाही ॥ तैसे उठि उठि चारिहु भाई । करिमज्जन पूजन सुखपाई ॥ पहिरि बिभूषण बसन सुहाये । पिता दरशहित सभा सिधाये ॥ पितु बंदन रघुनन्दन कीन्हो । तैसहि त्रैबन्धुन करि लीन्हो ॥ देखि राम युत तीनिहुँ भाई । उठि भूपति उर लिये लगाई ॥ शीश सूँघि दय आशिरबादा । रक्षहु युग युग धर्म मर्यादा ॥ बैठाये बर आसन माहीं । आये सचिव सुमन्त तहांहीं ॥ भूपति सकल सैन सुधि लीनी । सचिव कह्यो सैना सुख भीनी ॥

संग्रहक० दोहा ॥ परिजन पर ममता अती नीति निपुण अवधेश । निरखत चारिहु बंधु के ब्याह शृंगार सुबेश ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रहपरमानन्दत्रैलोक्यमंगलपन्द्रहवांप्रकरणसमाप्तः १५ ॥

——०——

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

सोलहवांप्रकरण ॥

परम प्रमोदसे कुवँर कलेवा रहस्यका होना ॥

रघुराजसिंह०दोहा ॥ उतै जनक सब साजु भरि सतानंदके संग। पठवाये जनवास महँ हित व्यवहार अभंग ॥ चौपाई ॥ सतानन्द लखि उठेउ महीपा। दै आसन बैठाय समीपा ॥ पूंछि कुशल बोले कर जोरी। तुव आगमन भाग बड़ि मोरी ॥ सतानन्द बोले मुसक्याई। तुमब्रह्मण्य धन्य नृपराई ॥ यह व्यवहार बिदेह पठाये। हम बरात हित इत लैआये ॥ तबसुमन्त सों कह्यो भुवाला। यथायोग दीजै यहिकाला ॥ देन लग्यो सुमंत तब साजू। गई लूटि मिति मोद दराजू ॥ जाको जेतनो जस मन भावा। सो तेतनो अधिकौ बहु पावा ॥ उबरा सो मंगनगण पाये। ते जग जगत जनकयश गाये ॥ तृप्तभये सबभांति बराती। जात न जाने दिन अरु राती ॥ उतै सुनैना सखी पठाई। लक्ष्मीनिधि कहँ निकट बोलाई ॥ जनवासे अब लाल सिधारौ। लै आवहु लेवाय बरचारौ ॥ इतहि कलेऊकरहिं कुमारा। भवन बिभूषित होय हमारा ॥ दोहा ॥ सुनि बिदेह नंदन चलेउ राम लेवावन काज। चढ़ि तुरंग मढ़ि मोद रस संग सखानिसमाज ॥ चौपाई ॥ गयउ जहां राजत रघुराजा। सभा सभायुत राजसमाजा ॥ लक्ष्मीनिधि आवतलखि राजा। उठेउ अनंदित सहितसमाजा ॥

लक्ष्मीनिधि तहँ कियो प्रणामा। आशिष दई भूपमतिधामा॥ शीश सूंघि अंकहि बैठाये। चिबुक परसि बोलेउ कहँ आये॥ लक्ष्मीनिधि कह हेमहराजा। भेजहु कुँवर कलेऊकाजा॥ भूप कह्यो लैजाहु कुमारे। का पूंछहु मिथिलेश दुलारे॥ सुनत सुखित लक्ष्मीनिधि भयऊ। राम निकट आशुहि चलिगयऊ॥ बिहँसि कह्यो चलिये रनिवासा। मातु बुलाये दरशन आसा॥ करन कलेवा बंधु समेतू। आशु पधारिय रघुकुल केतू॥ उठि रघुनन्दन चारिहु भाई। पिता चरणपंकज शिरनाई॥ चढ़ेकुँवर सब तरल तुरंगा। चलेसखा सब सोहत संगा॥ डगर डगर तेहि नगरमँझारी। फैली सुधि आवत बरचारी॥ दोहा॥ पुर नर नारी लखन हित बैठअटा अरु द्वार। कहहिं कलेऊ करनहित आवहिं राजकुमार॥ चौपाई॥ इततुरंग झमकावत भावत। चारिहु कुँवर महा छबिछावत॥ जगरमगर मचिरह्यो नगरमहँ। अगर तगर भर डगर डगर पहँ॥ झमकत झझकि बाजि मग डहरैं। छोरन छुटी मुक्त क्षिति छहरैं॥ तुरँग उड़ावत पेंच पाग की। छूटिजात सुधिरहत बागकी। दरशावैं बहुगति तुरंगकी। छबि छावैं क्षिति पट सुरंगकी॥ सखा चपल कोउ खेलत नेजे। मनहुँ पठाय पवन इन भेजे॥ आवत जात न ते देखातहैं। यकयक तेड़ बढ़ बढ़ातहैं॥ छैल छबीले शक्र सानके। राम सखा सम पंचबानके॥ चलत बरोबर प्रभुसमानके। सनमाने करुणानिधानके॥ जेहिबाजी रघुपति सवारहैं। कहि न सकत छबि मुख हजारहैं॥ शील सुधानिधि बेग बायुको। मनहुँ लह्यो मन अवधि आयुको॥ झनकत पैंजन परत पाउके। परतचरण चौगुने चाउके॥ दोहा॥ सजेसजीले बांकुरे दशरथ राजकुमार। हेरत ही हठि हियहरत हलकत हीरनहार॥ चौपाई॥ पहुँचे सब जब मधिबजारमें। नारी चढ़ि ऊंचेअगारमें॥ निरखि निरखि पलकानि निवारहीं। राई लोनहिं करउतारहीं॥ वोढ़ि वोढ़ि अंचल मनावहीं। मिथिलापुरते कुँवर न जावहीं॥

संग्रह० ॥ बतरावति तिय आपुस माहीं। निरखतिराज कुमारनकाहीं ॥

श्रीतुलसी०दोहा॥ ललित चरण कर कटि ललित लसत ललित बनमाल। ललित चिबुक द्विज अधरसह लोचन ललित बिशाल॥ मृदुमेचक शिर रुह रुचिर शीशतिलक भ्रू बंक। धनु शर गहि जनुतड़ित युत तुलसी लसत मयंक॥

युगलानन्यछन्द॥ सियबल्लभ मुसक्यान सान शर अमितमस मशरमोहन। ऐसोकौन जौन बरबस बशहोयन जोहतसोहन॥ बालयुवा बरवृद्ध बिके बिन मोलफिरैं लगि गोहन। युगलानन्य शरण आशककी संपति सुखसंदोहन॥ जुल्फैं चिलकदार रसमय मुख मधुर माहमें छूटी। उपमा कौनकहै मनमतिगति ज्ञानपलकमेंलूटी॥ अद्भुतछटा छैल छबिमिलि मनमथन मान मदकूटी। युगलानन्य शरण आशककी असल सजीवनबूटी॥

मधुरअली०पद०दादरा॥ होललन तोरेनैना शिकारी। अरुणकंज कारे अनियारे चितवनि मनो कटारी॥ कतलकरत मनहरतसबनको बचतनहीं नरनारी। मधुरअली कछु कहतबनै ना राज कुवँर बलिहारी॥

कृष्णरंगसखी०पद० ॥ रघुबरबना सलोना वै। बरबस चोरिलेत चितको चितवनिमें टोनावै॥ मिथिलापुर नरनारि सबनकेपलकनगोनावै। कृष्णरंग ऐसोसुंदरबर हुआ न होनावै॥

देवस्वामी०पद० ॥ छबीले तेरीछबिपर गईमैं वारी। छबि समुद्र मथि यामूरतिपर आपादियो जनुढारी॥ छलकतछबि बिंदुनहीसे जनु रवि शशिगये सँवारी। आनदेव छायासे जगमग अस श्रुति कहतपुकारी॥

सियासखी०पद० ॥रंगभीना रघुनाथबनाको इन्हगलियनहोयलावोरी। अटाचढ़ि सबछटानिहारैं तनकीतपनि बुझावोरी॥ अति

आनंद मगनपुरबासी घरीयक इन्हें बिलमावोरी। सियासखी गोखनमें लगिलगि रसभर गारी गावोरी॥

कृपानिवास०पद० ॥ बनाजी थारीअंखियूंदेबिच टोना। रूपठगोरी डारिनगरमें सुंदरश्याम सलोना॥ बीनतफूल फिरे बागन में लिये बामकरदोना॥कृपानिवास सियानैनोंमेंमानोंकामखिलौना॥

सियासखी०पद० ॥ जाग्योभाग तिहारो। राघोजी बनाजी। जादिनतेथे मुनिसँगआये सुधरोसकल जुथारो॥ ऐसीदुलहिनि तुम कहांपाईहो एतो जियमें बिचारो। सूरजबंश उदेहोइआयो भाल कपाटउघारो॥ गिनतेरहियो श्वास सियाके मन जिन कीज्यो न्यारो। सियासखी सियजूकेब्याहत धोयोकुलरोकारो॥

सुधामुखी०पद० ॥ यह दशरथराज दुलारोरी। दूलह दिलदार प्यारोरी॥ जिन चोरयो चित्तहमारोरी॥ जुलफैंछबि मारडारोरी॥ यह ऋर्षाश्रृंगीको सारोरी। नहिं बिनुअनुहार कारोरी॥ यह सुधामुखी दृगतारोरी। माधव जगसार न्यारोरी॥

बैजनाथ०पद ॥ राम बना जस अजब सलोना। तस नहिं सुना दीखनहिं नैनन भयो न है नहिं आगेहु होना॥ श्याम अनूप भूप लालनको रूप समान बिरञ्चि रचोना। भूलि निरखि मुखचंद माधुरी कामिनि देह गेह सुधि होना॥ अवसर आजु राजमन्दिर में लेवै लाभ लाज धरि कोना। सो पछिताइ खाइ बिष मरिहै खोलि नयन लखिलेवै रिजोना। मैं भरिअंक सफलतन करिहौं उमँगो मैन लाज उरभोना। बैजनाथ सीता बल्लभ पै निश्चय आजु पतिव्रत खोना॥

संग्रह०दोहा ॥ रघुनन्दन को रूप लखि मिथिलापुरकी नारि। मोहि सयानी कुलबधू गुरुजन लाज बिसारि॥ चौपाई ॥ जनक नगरकी सुंदरताई। सुर मुनि देखत मन ललचाई॥

रघुराज० ॥ द्वार द्वार बहु हेमखम्भहैं। पुरटकलश युतयूपरम्भहैं॥ जनक नगरकी अति विचित्रता। भय प्रभु आगमपर पवित्रता॥ द्वार द्वार जन जन जोहारहीं। यकटक चारिहु कुँवर निहारहीं।

कहहिं प्रजा सब मोद भोकमें । असमुन्दर नहिंकहुँ त्रिलोकमें ॥
विप्र बेद पढ़ि पढ़ि अशीशहीं । लहैं अनंद निहोरि ईशहीं ॥
नारि उतारहिं मुदित आरती । चिरजीवहु मुखकढ़त भारती ॥

संग्रह० ॥ करहिं निछावरि बहु बिधि नारी । हरषति चारिउ कुवँर निहारी ॥

रघुराज० ॥ राम जाय मिथिलेश द्वारमें । तजे तुरंगन सुख अगारमें ॥ जानि सुनैना राम आमिनी । पठये कलशन कलित कामिनी ॥ मिलेउ आय मिथिलाधिराज है । प्रभु प्रणाम किय सहित लाज है ॥ दोहा ॥ मिलि विदेह आशिष दई लैगे भवन लेवाय । यथा योग भ्रातन सखन सहित राम बैठाय ॥ करत भये सत्कार बहु अंगन अतर लगाय । देबीरी पूँछी कुशल प्रेम अम्बुदृग छाय ॥ प्रभुबोले कर जोरिकै आप कृपा कुशलात । जैसे लक्ष्मीनिधि अहैं तैसे हम सब भ्रात ॥ अति अमोल भूषणबसन तहां बिदेह मँगाय । गज तुरंग रथ पालकी दीन्हे चारिहुभाय ॥ सनमाने सिगरे सखन पट भूषण बहुदीन । मनु व्यवहारहिं व्याजते मोद मोल लै लीन ॥ छंद ॥ तहां सुनैना की यक आई सहचरी । कुवँर बोलावन हेत महामुद उरभरी ॥ लक्ष्मीनिधि तहँ आशुहि कुवँर लेवाय कै । गये तुरत रनिवास पिता रुखपायकै ॥ सखा सचिव सरदार रहे दरबार में । भयो मोद महँ गमन जनक व्यवहार में ॥ रामहिं आवत देखि सुनैना धायकै । लै बलिहारी चूमिबदन सुख पायकै ॥ मणि मंदिरमहँ आशुहिराम लेवाय कै ॥ तीनिहुँ अनुजसमेत सुखी बैठायकै ॥ तोरयो तृण पुनिराई लोन उतारिकै । कियो आरती मंगल मंत्र उचारिकै ॥

संग्रह०छंद ॥ जानि समय रानी लइ कुँवरिन बोलिकै । बांधि मौर बर दुलहिनिपट गँठ जोरिकै ॥ चली लिवाइ कोहबर घर मंगल गावती । बिबिध भेष धरि मानहु सोहति भारती ॥ चहुँकित अंतःपुरकी राजति बालहैं । पीछे दुलहिनि आगे चलत रघुलालहैं ॥ दोहा ॥ पद पांवड़े डारत बहु बाजाबजें अनेक ।

मोहि सयानी नारि सबलखि सियबरको भेक ॥ चौपाई ॥ यहि बिधि सकल समाज सोहाई । लक्ष्मीनरायण मंदिर आई ॥ बर दुलहिनि बैठे यक ओरा । तियगण करहिं सुमंगल शोरा ॥ बिप्र बधून रीति कहि जैसे । कुवँर कुवँरि पूजन करि तैसे ॥ तब सिद्धा रघुबरढिग आई । बोलीबचन मंद मुसक्याई ॥

श्रीकिशोरी जी के कंकण खोलते समय सिद्धा आदि सरहज अरु निमिबंश कुमारिन का गारी गाना चारों भाइनको ॥

प्रियाशरण०सुगंधाछंदसोहर॥सुनहुकुवँर कुवँरिनके कंकणखोलिये । कछु भावै सोइ बात परस्पर बोलिये ॥ कंकणकी बर गांठको खोलहुलालजू । प्यारीबदन बिलोकत होउनिहालजू ॥ सरहज के बरबयन सुनत पुलकित भये । कंकण खोलन के दिशि मन अरु दृगदये ॥ प्रथम दृष्टि परि नयनन नयनालगे । कंकणपर दिय हाथ हाथ रसउरपगे ॥ कंकण खोलै कौन सुधी नहिं देह है । पिय प्यारी मन मगन सबन मन हरनहै ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ कंपित करकंकण क्योंछोरैं । कठिन होति सोगांठि मलेदन लजत लजत दूनोंगहि तोरैं ॥ देखिदेखि दुलहिनिछबि छकि छकि नारि निछावरि करहिं करोरैं । बिश्वनाथ धक धकि दुलहिनि उर दूलह सुख अति सिंधु हिलोरैं ॥

कविनन्द०कबित्त ॥ बीर बिरदैत बांके वेदन बिदित सुने शोभा सुखसिंधु सींव बानक बनकको । कैसे तुम ताड़ुकासँहारी सुत सेनयुत छूटत न डोरा गांठि कंकण कनकको ॥ नन्दभनै रावल के भीतर नवेली अली करतीं बिनोद अंग धरिकै जनकको । छोरो कै निहोरो कर जोरि कहौ हारे हम यहतो न होय लाल तोरिबो धनुषको ॥

प्रियाशरण०छंदसोहर ॥ कंकण डोरी छोरहु चित करि धीरकै । नहिंतो लेहु बोलाइ बहिनि कहँ बीरकै ॥ सरहज हँसि हँसि कहहिं सुनत खोलन लगे । पुनि कर भूषणदृष्टिपरीं तहँई पगे ॥ कंकण गांठि कठिन छुटत नहिं प्रेमबश । मनसकुचत गणपतिहिं

निहोरत्त बारदश ॥ करकंपित बिलोचन चंचल लाल के । छबि निहारि मनमोद सकल रनिवास के ॥ रति रतिनायक देखत चमर ढुरावहीं । शोभा सुखमा सागर कवि किमि गावहीं ॥ कर पर कर कहँ धरे बिवश मन ह्वैरहैं । कंपितकर शंकित उर जब छोरन चहैं ॥ कंकण में अँगुरी अरुझे सुरझे न सो । मानहु व्याल लरत शशि छाहँ मराल सो ॥ करजोरहु तुम लाल कि खोलहु कंकना । धीरज धरि खोलेउ सकुची सबअंगना ॥ यहि बिधि सकल कुवँर कंकण खोलतभये । तेहि अवसर सब के उर आनँद अतिछये ॥ पुनि रघुबर कर बांध्यो सियको कंकना । राम को कंकण सियकर बांध्यो अंगना ॥ महरानी मन मोद महासुख को कहै । बर दुलहिनि कहँ देखि जन्मको फललहै ॥ राईलोन उतारहीं मंगल गावहीं । आरतीसबहिं उतारती छबि मनभावहीं॥

संग्रहक०दोहा ॥करहिं निछावरि तीयसब मोद न हृदयसमाय । लखि माधुरी सिय रामकी बार बार बलिजाय ॥ चौपाई ॥ जनक राजकी रानि सुनैना । सिद्धासों बोली बरबैना ॥ लै कुवँरन अब बेगि सिधावो । देरीभई अब अशन करावो ॥ सुनि लैकुवँरन चली समाजा । मंगल गान बजत बहुबाजा ॥ कहत हास्यरस की बहु बानी । सुनि मुसक्यात राम गुणखानी ॥ दोहा ॥ सभा भवन दुलहान को सिंहासन बैठाय । लखतमाधुरी तीयगण नेकनचित्तअघाय ॥

रघुराज०छंद ॥ तहँ लक्ष्मीनिधि नारिसिद्धि आवतभई । करन कलेऊहेत विनय गावतभई ॥ उठेराम लैबंधु कलेऊकरनको । बैठेउ आसनमाहिं महामुदभरनको ॥ व्यंजन बिबिधप्रकार थार भरि ल्याइकै । सूपकार सुखपाय परोसेआइकै ॥ मणि माणिक अरु हेमकटोरे सोहहीं । व्यंजनभरे अनेक मदनमन मोहहीं॥ चौपाई ॥ मनरंजन विरंज दुखभंजन । अरुचिबिभंजन रसनामंजन ॥ रबरी खुरचनि मिष्टमलाई । महामधुर मोहनी मिठाई ॥ निमि बतासफेनी बासौंधी ॥ बिबिधबटी बट माडवऔंधी । वि-

बिधफलनके मंजुलसीरा। बोदनभलक मनहुं बहुहीरा ॥ दधि प्रकार अरु क्षीरप्रकारा। कराहिं सराहिं कुमारअहारा ॥

श्रीरामचन्द्रजीकी सरहज सिद्धा और निमिबंशकुमारी कुलबधूनका गारीगाना चारोंभाइनको ॥

छंद ॥ सनमुखबैठीं सिद्धिसहित सखियानके। गारी गावन हेत स्वरूपगुमानके ॥ रबिकुल कैसेभयो छत्रकुल जगतहै। कश्यपद्विजको पुत्र भानु जसजगतहै ॥ छायाको पुनि भयोसुवन मनुकाकही। बिनारूपकी भानुसंगमहँ क्योंरही ॥ मूल अशुद्ध बिचारहोत यह बंसको। महिमाहेतहि कहत बंश यह हंसको ॥ मूलपुरुषभय इलानारि पुनि नरभई। आवत सोईरीति चली यह नहिं नई ॥ भेयुवनाश्व महीप गर्भ उदरहि धरयो। मान्धाता तेहिभये भूप नहिंसोमरयो ॥ मान्धाता महाराज बड़ेदाता भये। सौभरिमुनिको बोलि सकल दुहितादये ॥ जुरयो न क्षत्री जगतमाहिं जिनको कहूं। ब्राह्मणको दिय सुता सुकीरति दिशि चहूं ॥ भेअसमक महराज सजै संसारहे ॥ गुरुवशिष्ठकृत विदित सकल उपकारहै। विप्रनारि दियशाप सुकलमषपादको ॥ दमयंतीकोतज्यो जोपाय बिषादको ॥ रानीमें गुरुकियो सुगरभाधान को। अजहुँ करत रघुबंश सुबंश गुमान को ॥ नदी कहावति सुता जासु कुल भूपकी। जाको पानी लेत कीर्ति अनुरूपकी ॥ जो रघुकुल महँहोइ कछू अनरीतिहै। तौ रघुबंशी गनत हमारी रीतिहै ॥ बड़े यशी रघुभये कहा कहिये सखी। साठि सहस दिय रानि द्विजै है हयमखी ॥ दोहा ॥ पुरुष शक्ति ते हीन लखि द्विज कहँ रघुमहराज। लै कुबेर ते युगल फल दियो पुंसता काज ॥ छंद ॥ भयो मातु पितुते न जन्म अजताहिते। पायो नाम नरेश रहे द्विज चाहिते ॥ करनलगे अज व्याह कोउ नृपबोलिकै। कन्यादानहिं करत समै चित खोलिकै ॥ बिश्वावसु गंधर्व धारि द्विजरूप को। मांगत भयउ कुमारि वचन कहि भूपको ॥

संकट धरमहि जानि योगबल भजतहां । निरमी द्वितिय कुमारि सुंदरि सो महां ॥ सो दीन्हों तेहि नृपै जाहि मानत भये । बिश्वाबसुहिं सत्य बिप्र मानत भये ॥ भगिनि सहोदर दियो ताहि गुन धर्मको । कीरति प्रगटपुराण किये जो कर्मको ॥ कोउबोली तहँ सखी सुनी यह कानमें । दशरथभूप चरित्र लखी सुजहान में ॥ दशरथ नृपकी रानि लजोरी हैं सबै । समर सुरासुरमाहिं कन्त त्याग्यो कबै ॥ जिन नारिन के लाज न होत शरीर में । तिनको कौन प्रमाण रहहिं जनभीर में ॥ दक्षिण कोशल भूप स्वयम्बर करतभे । सुता कौशला हेत भूपसब जुरतभे ॥ राक्षस रावण नाम कुमारी हरतभे । दशरथ नृप तहँ जाय बड़ो बल करतभे ॥ ताकी हरी कुमारि कौशला लायकै । घरमें कियो पटरानि बड़ो सुख छायकै ॥ गाय उठी कोउ सखी सुमित्रा जस सुनो । कीन्हो सुन्दर मीतनाम ताते भनो ॥ भरत मातु केकयी कहावत सनु सखी । नामलेतहैं प्रश्न लाज अतिशय लखी ॥ रघुपति भगिनी नाम जौन शांताकहीं । श्यामा सुन्दर अंग भुवन जेहि सम नहीं ॥ बिषय बिलास बिलोकि न राख्यो निज घरै । अंग भूपके भौन पठै दिय अवसरै ॥ तहँ यकमुनि पै मोहिगई मनभामिनी । मुनिको भयो बिवाह भई बड़िकामिनी ॥ भरत रामहैंश्याम लषण रिपुशालहू । गोरबदन नहिंजानिपरै कछुहालहू ॥ जो एकहि पितुहोत बरणयुग किमिभये । वर्षसहस्रहिसाठि बीति नृपकेगये ॥ तबबोली कोउसखी न शंकाकीजिये । दशरथ रानी युवाहेत गुनिलीजिये ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा सामरी । किय अपनकिरतूति नामकी भामरी ॥ लाल भगिनि निज देहु ब्याहि लक्ष्मीनिधे । लेहु जगतयश लूटि कौनचाहीबिधे ॥ जस सुंदर तुमलाल भगिनितस होयगी । सरहज सिधिकी सवति महामुद मोयगी ॥ रघुबंशिनकीहोइँ औरजे कन्यका । निमिबंशिनको ब्याहि करौतिनधन्यका ॥ दोहा ॥ यहिबिधि मिथिलापुर युवति गारी गावतजाहिं । मंदमंद भोजनकरत सकलबंधु मुस-

क्याहिं ॥ चौपाई ॥ मंजु सुरनंभरि रागसहाना । लेती तरलतान बिधिनाना ॥ माच्यो महामनोहर शोरा । मोहींसखि लखिराज-किशोरा ॥ तहँमेवनके बिबिधप्रकारा । औरहुअन्न प्रकारअपारा । तिक्त अम्ल कटु लवण कषाये । मिष्ठ निष्ठ बहुस्वाद बनाये ॥ भक्ष्य भोज्य अरु लेह्य चोख्यवर । पानपियूष समानस्वादकर ॥ सुरपुर नरपुर नागपियारे । जेदुर्लभ महि अहहिंअहारे ॥ दोहा ॥ ते बिदेहके सूदबर बिरचे बिबिधउछाहि । सकलबंधु भोजनकरत स्वादसराहि सराहि ॥ चौपाई ॥ यहिबिधि भोजनकरि अभिरामा । कियआचमन बंधुयुत रामा ॥ उठि चामीकर चौकिन जाई । बैठि धोयकरपद सबभाई ॥ मुकुटन शिरनसुथरितमाहीं । आय सुनैना कह्यो तहांहीं ॥ कोशलमुकुट उतारहुलाला । मिथिलामुकुट देहु यहिकाला ॥ असकहि मणिमंडित धरिथारन-मुकुटचारिवरप्रभापसारन ॥ पहिरायउ चारिहु बरमाथे । पद्मराग मरकतमणि गाथे । अति अमोल लालनकीमाला । लाल नगल पहिराय बिशाला ॥ पुनि लेवायलाईमहरानी । बैठायउ आसन छबिखानी ॥ बदीबिदेह बाम बरबानी । नेगकलेवा कर सुखदानी ॥ मांगहुऔनरहे अभिलाषे । तब प्रभु जोरिकञ्जकर भाषे ॥ यहीनेग जननी अबदीजै । लक्ष्मीनिधिसम मोहिं करिलीजै ॥ मैं सुत सेवक तू महतारी । देहु देवि रुचि यही हमारी ॥ दोहा ॥ शीलविनय रसके भर मधुर रामके बैन । सुनत जनक रानी युगल भरि आये जल नैन ॥ चौपाई ॥ पुनि पुनि लेती करन बलैया । भरयो कंठकहि सकत न मैया ॥ जस तसकै पुनि बचन उचारा । पूरेहु मोर मनोरथ सारा ॥ कर्म बिबश पावहुं कहुं योनी । बिधिगति होइ हानि अनहोनी ॥ लालन नात हमार तुम्हारा । यही रहै सर्बदा बिचारा । एवमस्तु बोले रघुनन्दन । सदा प्रणत जन पन अभिनन्दन ॥ सरबस पाय सुनैना रानी । गईं अनत सिधि आगम जानी ॥ सखिन सहित तहँ सिद्धि सिधारी । बिहँसत मृदु बीरी

करधारी ॥ दीन्हेउ चारिहुबन्धुन बीरा । कही रामसों पुनि निज पीरा ॥

बिश्वनाथसिंह० ॥ थकिथकि रहति सुजकि छबि भारी । हँसि हँसि कहति सुरुचि अनुसारी ॥ लालन दीजै नेग हमारो । जो सरहज को नात बिचारो ॥ देहौ नहिं तो सिय न पठैहौं । तुमहिं स्वबश करि इतहि बसैहौं ॥ प्रभु कहहै अदेय कछु नाहीं । तुम सम कौन पात्र जगमाहीं ॥ नर्म गिरा तब सिद्धि उचारी । लाल अनोखी प्रीति पसारी ॥ लली लेवाय अवधपुर जाई । देहौमोरि सुरति बिसराई ॥ दोहा ॥ तुम्हैं कौन बिधि देखिहैं ह्वैहैं बिनजल मीन । देहु नेगबर मोहिं यह जो जिय चहहु प्रवीन ॥ चौपाई ॥ ताते ननँदि और ननदोई । इन नैननते बिलग न होई ॥ प्रीतिप्रतीति पेखि रघुराई । बोले मन्द मन्द मुसक्याई । सदाभावना में हम दोऊ । प्रगट होब जानी नहिं कोऊ ॥ सिद्धि सिद्धि होई अभिलाषा । मृषा बचन मैं कबहुं न भाषा ॥ जानी सिद्धिसिद्धि निजकरनी । धन्यभाग बरनी बरबरनी ॥ पुनि निमिबंशिनसुता सुहाईं । दूलह देखन हित जुरि आईं ॥

संग्रह० ॥ लखतहि मुदित भईं सब बामा । राजकुमार महाछबि धामा ॥ ब्रीड़ा कुल मरयाद बिसारी । बोली नागरि सखिहि निहारी ॥

श्रीतुलसी०बरवा ॥ कुंकुम तिलक भाल श्रुति कुण्डल लोल । काक पक्ष मिलि सखिकस लसत कपोल ॥ भाल तिलक शर सोहत भौंह कमान । मुख अनुहरिया केवल चंद समान ॥ तुलसी बंक बिलोकनि मृदु मुसकानि । कस प्रभु नैन कमल अस कहौ बखानि ॥

पं०हरिहरप्रसाद०दोहा ॥ बिन बिछुआ छूराछुरी बिनबरछी बंदूक । नैन बाण रघुचन्दकर करत करेजाटूक ॥ सीखि लाखि आये गरुड़ हरिहूते अति गाजि । खायो कारो अलक को बिष न गयो

गे लाजि ॥ राजकुवँरकी निठुरता कहिय कहारी हाय। बेधे सारी मैथिलिन नैनन बाण चलाय ॥ भीति लाज दोऊ भजीं लखि रघुबरको रूप। मिथिलापुरकी नागरी भई आप अनुरूप ॥ कानन श्रीरघुनाथके कुंडल अति सुखदान। मिथिलापुर नारिन भयो मनहुँ सोहागा पान ॥

रामसखे०पद ॥ राघौजू के नैना उरझोहैं। तन मन बिवश करत सुन सजनी चितवत तब तिरछोहैं ॥ मनहु मैनके जाल किधौं शर सोहत ललित ललोहैं। रामसखे मदछके भरे छबि तीषे अति गुमरोहैं ॥ चंचल दृग रतनारे तेरे चोट लगी सोइ जाने। सुनु दशरथके कुँवर लाड़िले कासों कहौं कोमाने ॥ चितवतही घायल करिडारत राखत नहिं तन प्राने। रामलला यह पीर अलौकिक रामसखे पहिंचाने ॥

बैजनाथ० पद ॥ अद्भुतगति रघुनन्दन केरीरी। सखिसमाज तजि लाज अवश ह्वै अवलोकत नहिं पलक परीरी ॥ मृदु मुसकानि कृपान म्यान मुख द्विजप्रकाश खरशान धरीरी। घायल गात दिखात घावनहिं काटि हियो दुइटूक करीरी। नेह नवाइ कुटिल भृकुटी धनु सजि कटाक्ष बिष प्रेम भरीरी ॥ नैन बाण उर लाग सखी जेहि तरफरातबिनहोश परीरी ॥ शील रसील प्रकाश निशित अति तारि सहित गहि चाह करीरी। लागत बचन कटार सखी उर बिरह पीर बुधि ज्ञान हरीरी ॥ बिन अपराध व्याध कोशलसुत सखिसमाज कुलि कतल करीरी। बैजनाथ परि क्यों उबरैं तिय प्रेम गांठि गरफांसि परीरी ॥

कृपानि०दोहा॥ ब्याही अनब्याही नई गौनेआई बाल। ललचाई परबश मनो टोनाई हँसि लाल ॥

रघुनाथ०चौपाई॥ रघुपति छबि अवलोकि जुड़ानी। बोली बिहँसि हासकीबानी ॥

रघुराजसिंह० ॥ जिनसारी सरहजसनबंधू। गारीदेन बाँधि पर बंधू ॥ फटिकपूतरी धरि हरिआगे। बचन रचनकरि कहअनुरा-

गे ॥ यह कोशलपुरकेरि कुमारी । मिथिलामहँ आईसुकुमारी ॥ तुमहिंदेखि कशलाज नबोलति । नहिंआशय उरकीकछु खोल- ति ॥ भगिनिमनाय लेवायजाहुघर । करहुसमोध चूक सांवर बर । बिहँसिबचन बोले रघुराजू । हमजानी मिथिला नहिंला- जू ॥ दोहा ॥ रघुकुलमें नहिं रीति यह बरहिं जोबरन कुमारि । देवदारके तुल्यतुम यहछवि तुवमनुहारि ॥ चौपाई ॥ व्यंगबचन सुनि सबमनभाई । चितै परसपर दिय मुसक्याई ॥ होय जो देवन पति जगमाहीं । सो देवन गति चलैसदाहीं ॥ हममानव मानवगति जानैं । देवी देव देवगति ठानैं ॥ लाल एक अति शोच हमारे । सुधरत राउर कृपासुधारे ॥ दियो मोद मिथिला पुर आई ॥ जो अलभ्य अमरन श्रुति गाई ॥

रघुनाथदास० ॥ जेहिते नेह करैं अनुरागी । सर्वस जाहु सकैं नहिं त्यागी ॥ तिमि तुमते ठानी हम प्रीती । करहुनिबाह समु- झि निजरीती ॥ रहहु सदा नगरी यहि प्यारे । जीवनरहिहै तु- महिं निहारे ॥ पद ॥ लला तुम होउ न आंखिन ओट । एक पलक बिन दरश कल्पसम लगत कुलिशसी चोट ॥ पीर पराई जानतहो नहिं यहस्वभाव है खोट । श्रीरघुराज बिदेह लली पिय तजहु निठुरता कोट ॥

रामसखे०पद ॥ प्यारेतेरी छबिपर वारियां । छूटी बदन कुवँरदशरथ के मारत जुल्फें कारियां ॥ तीषी सजल लाल अंजनयुत लागत आंखैंप्यारियां । रामसखेदृगओटनहमकोकरोनक्षणभरन्यारियां ॥

बैजनाथ०पद ॥ तेरीछबिने हमारो मनलीन्हो सुनियेजी राज- कुमार । सहजलाज कुलवंतीबाला गुरुजनलाज अपार ॥ नि- रखत तवमुख चन्द्रमाधुरी तनगति रहिनसंभार । चन्द्रचकोर मोरघन चातक स्वातिबूंदअधार ॥ यहिगतिमें नरनारि जनक पुर मनकरिलेव बिचार । परतनचैन रैनदिन हमरे नयनबह- तजलधार । बैजनाथ रघुनंदनतुमहीं जीवनप्राण अधार ॥

रघुराजसिं०चौपाई ॥ तुम बिछोह रहिहैं किमि प्राना । देहु बताय

उपाय सुजाना ॥ सखि उर आलबाल अति भारी। प्रेम बीज को बोय सुखारी ॥ दल अनुराग शाख सुखकेरी। फूल उछाह दरश फल ढेरी ॥ अस तरु मिथिला पुरहि लगाई। उचित न अवध पयान जनाई ॥ नेह पाश मन बिहँग फँसाई। दरश अशन बिन दुख न देखाई ॥ दोहा ॥ सुनत सखिन के बचन प्रभु कह्यो मंजु मुसक्याय। जो जाको जानत यथा सो तेहि तस दरशाय ॥ चौपाई ॥ अवधहु ते मिथिलापुर प्यारी। सदा बिलास निवास हमारी ॥ जबहिं सुरति करिहौ मनभाई। तबहिं मिलब तुमको हम आई ॥ मिथिला अवध दूरनहिं प्यारी। जो जेहिंजिय सो निकटबिचारी ॥ दूररहे जसबाढ़त प्रीती। तसनहिं निकट रहे असरीती॥यहि बिधि करत परस्परबाता॥राम बचन सुनि सुख न समाता ॥ कही सिद्धि सों पुनि प्रभु बानी। होती बड़ि बिलंब जिय जानी ॥ सांझ समय पितु दरशन हेतू। जैहैं मिथिलाधिप मति सेतू ॥ ताते हमको देहु रजाई। पेखहिं पितु जनवासे जाई ॥ सिद्धिकही मुखते निकसै किमि। मीन दीन जलहीन होव तिमि॥प्रभुकहहम आउब पुनि काली। ह्वैहैं सकल भांति खुशि आली॥ रामहिंजात जानि तेहिजूना। सुन्योसुनैना भोदुखदूना॥ जनकपट्टमहिषी तहँआई। भ्रातनसहित राम शिरनाई ॥ दो०॥ जनवासेकहँ जानको मांगीबिदा बिनीत। रामबचनसुनि सासु तहँ भैअनन्दतेरीत ॥ चौपाई॥ कहिनसकति कछुबचन बिचारी। रहहु लालकी जाहु सिधारी ॥ दुबिधजानि जानकिजननीको। प्रभुकह काल्हिमिलन अतिनीको ॥ हमरे पितुके देखनकाजू। जैहैं सांझ जनकमहराजू ॥ ताते मातु बिदा अब दीजै। बालक जानि छोहअति कीजै ॥ भरेसुनैना नीरसुनैना। गदगदकंठ कढ़त नहिं बैना ॥ जस तस कै बोली महरानी। करहु लाल लल जो मनमानी ॥ चारिहु बंधु बन्दि पद ताके। बाहर आये अति सुख छाके ॥ लक्ष्मीनिधि तहँ सहित बिदेहू। राम गवन लखि भये बिदेहू ॥ रघुनन्दन बंदन करि भूपै। चढ़ि तुरंग महँ

चले अनूपे ॥ राम सखासब आय जोहारे । हास बिलासहि करत सिधारे ॥ निज निज बास आय रघुराई । आनँदहू के आनँद दाई ॥ पितुहि प्रणाम कीन शिरनाई । दै आशिष बोलेउ नृपराई ॥ दोहा ॥ सुनहुराम अभिराम अब करहुजाय आराम । सांझ समय मिथिला नृपति ऐहैं हमरे धाम ॥ सुनि पितुशासन बंधुयुत करि पुनि पितुहि प्रणाम । गये राम आराम हित जहँ अभिराम अराम ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामविवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलसोलहवांप्रकरणसमाप्तः १६ ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

सत्रहवांप्रकरण ॥

जिउनार का आनंद और चौथीचार आदि नियोगका होना ॥

संग्रह०दोहा ॥ दिवसयाम बाकी रह्यो सुंदर समय निहारि । गौतम सुत निजधामते गवने काज बिचारि ॥

रघुराजसिंह०चौपाई ॥ सतानंद उत जनक समीपा । जायकह्यो सुनिये कुलदीपा ॥ शिष्टाचार हेत जनवासे । चलहु अवधपति पहँ सजि खासे ॥ भली कही असकहि मिथिलेशा । बोलि सुधा बन दियो निदेशा ॥ मंत्री सुहृद सुभट सरदारा । गज रथ पैदर अनुग सवारा ॥ सपदि सयुग सजिआवहिं द्वारा । जनवासे को गवन हमारा ॥ सुनत सचिव शासन सुखपाई । लीन्हों बोलि सैन समुदाई ॥ लक्ष्मीनिधि संयुत मिथिलेशा । बंधुबर्गसब और सुबेशा ॥ बिप्र बेद बिद मुनि सँग लीन्हे । चले रामदरशन मन दीन्हे ॥ द्वैधावन तहँआशुहि धाये । अवधनाथपहँ खबरिजनाये ॥ दरशहेत मिथिलापति आवत । सुनि दशरथ अतिशय सुखपावत ॥ कियउ सकल दरबार तयारी । लिये बंधु सरदार हँकारी ॥ राम बंधुयुत लिये बोलाई । नर भूषण आये सुखदाई ॥ दोहा ॥ महाराज नवखंडपति बैठेउ सहित समाज । राजमंडली नखत सम चन्द सरिस रघुराज ॥ छंद ॥ उत जनक राज समाजसंयुत लसत

बीरन मंडली। आयेमिलन अवधेशको नवखंड कीर्ति अखंडली॥ प्रतिहार जय जय करत आगे शोर सरस सुहावनो । हल्ला परयो दशरत्थके ज्योंही सुबीर हटावनो ॥ मिथिलेश आवत जानि कोशलनाथ चारि कुमारलै । कछुलेन आगे चलेउ सकल उदार भट सरदारलै ॥ चलिद्वार देशहि मिलेउ मुदित महीपसों मंडित महां । मिथिलाधिराज प्रणामकीन्हो भुजन भरि मोदित तहां ॥ सुर मुनि समान बिलोकि समधी हर्षि फूलन बर्षहीं । नभपथ बिमानन ठट्ट सोहहिं लखन अति उत कर्षहीं ॥ तहँ राम चारिहु बंधु कीनप्रणाम जनक महीशको । मिलि मुदित मिथिला नाथ हाथ पसारि दीन अशीशको ॥ अवधेशको अभिबन्दि कुश ध्वज मिलेउ कुँवरन जायकै ।तेहि राज कुँवर प्रणामकीन सलाज शीश नवायकै ॥ पुनि आय लक्ष्मीनिधि गह्यो पद कौशलेश न· रेश को । अभिमतहि आशिषपाय मिलेउ दिनेश वंश दिनेशको ॥ यहि बिधि परस्पर मिलि सकल पुनि पूंछि कुशल अनंद सो । अवधेश चले लेवाइ जनकहि पकरि कर अरबिन्द सो ॥ दोउ राज बैठे एकआसन दहिन दिशि मिथिलेश हैं । बायें सु कौशल राज राजत और बीर अशेष हैं ॥ आगे बिराजत राम चारिहुबंधु लक्ष्मीनिधि युतै । दहिने कुशध्वज और निमिकुल बीर यक एकन उतै ॥ यहिभांति युगल समाज सोहति मनहुँ स्वर्ग सुरा- वली । रघुकुल सु निमिकुल बीर बैठे बदहिं कवि बिरदावली ॥ बहुभांति शिष्टाचार बचन उचारि अवधभुवार को। करजोरि बोलेउ जनक आपुसमान यह संसार को ॥ निमिवंश पावन कियो दीन्हों सुयश मोहिं दराजहै । किमि करों प्रति उपकार गुनि उपकार आवति लाजहै॥ अवधेश बोलेउ सुनहु तुम मिथि- लेश राज ऋषीश हो । बर योग ज्ञान बिराग भक्ति बिबेक धर्म धुरीशहो ॥ तुम्हरे दरश हम भये कुशल पुनीत सकलप्रकारसों। महिमा तिहारी भूरि महिमा कौन करै उचार सों ॥ हम दियउ तुमको सौंपि चारिहु कुँवर तजि छल छन्दको । लालन करन

पालन करन तुम पिता देन अनंद को ॥ कौशल नगर मिथिला नगरके आप एक अधीश हो । यामें न दूसरिबातकछु तुम वि-षय कर्म अनीशहौ ॥ दशरथ बचन सुनि सब सभासद साधु साधु उचारहीं । दशरथ सनेह बिदेह लखि दृग बारि धारहि ढारहीं ॥ बोलेउ बहुरि निमिबंश भूषण काल्हि महल प-धारिये । करिकै कृपा निजकुवँरयुत ममभवन जूठनडारिये ॥ कहि एवमस्तु भुआल आशुहि अतरपान मँगायकै । निजपाणि पंकजसों मुदित मिथिलेश अंगलगायकै ॥ वीरीदियउ निजहाथ सों एलालवंग समेतही । तैसेहिकियो सतकार अवधभुवार पुनि कुशकेतही ॥ पुनि राम निजकरकियो लक्ष्मीनिधि परम सत-कार है । मांगी बिदा निजभवन गवन विदेहलहि सुखसारहै ॥ पहुंचाय द्वारहिदेशलौं अवधेशचलि मिथिलेशको । करिसबिधि बन्दन सहितनन्दन पायमोद अशेशको ॥ दोहा ॥ सिंहासन बै-ठेउबहुरि संयुत चारिकुमार । बरणतनेह विदेहको देहनरह्यो संभार ॥ उतबरणत दशरथसुयश गमनतगेहविदेह । रामशील शोभानिरखि भयेविदेह विदेह ॥ पुनि रामहि बंधुनसहित बोले उ कोशलराय । करिब्यारी कीजै शयन रैन बहुत नहिंजाय ॥ कोशलपति नन्दनहरषि अभिबंदन पितुकीन । सानंदन उठि अशनकरि नयननींद रसभीन ॥ सामंतन करिकै बिदा तज्यो राउदरबार । शयनकिये निजऐनमें आनि अनंदअपार ॥ चौपाई ॥ रोज रैन दिन सबजनवासा । माच्यो हास विलास हुलासा ॥ नृत्य गीत बादन सबठोरा । माचिरह्यो मंडित चहुंओरा ॥ जात राति दिन जानिनपरहीं । महामोद मंगल जनभरहीं ॥ निशा सिरानि भयो भिनुसारा । पूरब दिनकर किरणिपसारा ॥ बंदी जनगण द्वारहिआई । गावनलगे विरदसुरलाई ॥ नौबतिझर-नलगी सबठोरा । भये दुन्दुभी के कलशोरा ॥ उठेउ चक्रवरती महराजा । सुमिरि गरुडगामी छबिछाजा ॥ प्रातकृत्यसब भूप निबाहीं । दिन्हेदान समानउछाहीं ॥ रघुकुलतिलक उठे युत

भाई । पूजन मज्जनकरि सुखछाई ॥ सहितबंधु पितुकेदरबारा । आये चारिहु राजकुमारा ॥ लक्ष्मीनिधि उत जनकपठाये । देन निमंत्रणके हितआये ॥ दशरथ निजगोदहि बैठाये । कह्यो लाल केहिकाज सिधाये ॥ दोहा ॥ जनककुवँर बोलेउ बिहँसि पितुपठयो मुदमोय । भूपतिभोजन रावरो आजु महलमहँहोय ॥ चौ० ॥ प्रेममगन नृप गिराउचारी । कहियो पितहि प्रणाम हमारी ॥ पुनि कहियो अस सोइ सुखदाई । जोमोहिं राउर होयरजाई ॥

संग्र० ॥ इमि दशरथनृप कहि सुखमानी । बहुरि जनकसुत कह मृदुबानी ॥ पठवहु कुवँरन करनकलेऊ । अवधनरेन्द्र रजायसु देऊ ॥ उठे कुवँर पितु आयसु पाई । लक्ष्मीनिधि युत पदशिरनाई ॥

विश्वनाथसिंहजूकृतपद ।। भोरहिं सजिसजि कुवँर कलेऊकरन चले । लक्ष्मीनिधिके संग हँसत कहि बचनभले ॥ भूपहि करि परणामगयेपुनिभीतरको॥विश्वनाथ बहुछकीकुमारीतकिबरको॥

संग्र०दोहा ॥ लक्ष्मीनिधि पितुसोंकह्यो जैसेकहि अवधेश । सुनिकै मनआनंदअति पायउ जनकनरेश ॥

रघुरा०चौ० ॥ सुघर सूपकारन तेहिबारा । कीन्होजनक तुरत हंकारा ॥ सिगरे सूपकार सुनि शासन । लगे रचन ज्योंनार हुलासन ॥

संग्रह०दोहा ॥ इत अंतहपुरमाहिंसब नवयौबन सुकुमारि । निरखि राम अभिरामछबि भईप्रेम मतवारि ॥

विश्व०पद ॥ रघुनंदन सुंदरतकत कुमारी मोहिगई । कोउ व्यजन पवन अंचलनिडारि उरमूंदलई ॥कोउ करिकटाक्ष हरि बदनताकि पुनि लजतभई । कोउ नखिकमलले उरलगाय तन मोदछई ॥ कोउलगीं आरसीलखन रामदिशि पीठिदई । प्रतिबिंब कुवँरकोदेखि कहैं कछु सैननई ॥ कोउ बिरिनदेत हरिअंगुलिमीडि मुदबोलिबई । कोउ जायधाम धरिध्यान लागि अंग दिन बितई ॥ सुनि कुवँरको आगमन सिद्धिआई तवँई १ जो

ऐसे गुणनभरे हैं यहतन मोहिंलेत तकतै । गुनियतु बचीन हैहै मुनितिय बन यकंतबसतै ॥ मुनिनमाहँ असशक्ति रूपजोइ चहहि लेहिधारी । विश्वनाथते भये होहिंगे इनहिंतकतै नारी ॥ कह्योपुनि लषण मंदमुसक्याय । येतिय सब हैं अहल्याके सम जानति अहैंसुभाय ॥ कोउ तियकह्यो बचन बढ़िबोलहु मनिहौ भलेकपोल । लषणकही कत कछुलुभायकै बोलतिहौ येबोल॥ जौन मनोरथ करियतुरानी सोजान्यों मैं बाम । हैंहरि तुव-हिय मंगलकलसनि सजि समारिहैंकाम ॥ सखिनकह्यो तुम जीत्यो बातनएक बतावहुबात । झूठकह्यो तो ब्याहो भगिनी करहु तातकोनात ॥ तुमतो कबतेरहे अवधहिमें की कानन गुरु संग । कामिनिकौने सिखायदईहै तुमको ऐसेढंग ॥ रामकह्यो सति कहहुन हांसीकरि भाषैयेबैन । तुम सुवासिनि सेवतिमम संग बसति हमारेऐन ॥ मोहिंमुनि छैलगई कब इतते कहौसो तुमहीं जानि । विश्वनाथसुनि सिद्धि छकितभे मनहींमन मुस क्यानि । दोहा ॥ कोउकह इनमहँचातुरी कहांलही यहलाल । हरिहँसिकहिकछु लषणतन बोलेबचनरसाल॥विल्व१त्रतूरतयक दिव्य सिरीफलपाइ । छुवतचढ़ी चितचतुरई पैह्यांकहाबसाइ॥

संग्रह०॥ रामबचन रसभरि मृदु सुनि तियगण मुसक्याय । राजकुमारनसों पुनि बोलीं युक्तिबनाय ॥ पद॥ कोउसखि कह येकुवँर बालते बनबासी संगठाने । हमकहँलाखिय चकितरहेहैं जगतरीति नहिंजाने ॥ कानलागि मैं इन्हैंसिखाऊं असकहिकै नियरानी । कोउकहै यहतुम भगिनिबसी इत मुनिकहँ नीरस जानी ॥ हँसि हरिकहे हैं सांच असांची बाततुम्हारि जलासी । ममभगिनीतो झूठअहै यह क्रियाविदग्धा खासी॥ ऋधि सिधि प्रद मुनि सुबरणसंपुट द्वैचोरायलैआई । छातीलाय छपायेहैं ते दैहौंछोरि पठाई ॥ सुधासरिस बाणीसुनि बिहँसतभौंह कमान हितानी । तीछे तकत कामशरबरषत सो उलटी सकुचानी ॥ कोउ हँसिकह नारिनके लक्षण अबलों येनहिंजानैं । यौंभगिनी

इनकीहै जैसी तिमि सबहीअनुमानैं ॥ अंगहीन ह्वैउनकेलखिकै शृंगीके ह्वैअधिकै। बिश्वनाथ निजमनहिं बिचारिकै दियसंयोग यहबिधिकै ॥

बिश्व०पद ॥ कही कोउ कुवँर जान नहिं पावैं। अपनोदूत पठाय उतैते भगिनी इतै बुलावैं ॥ ते इतआय सभामधि सब को अपने अंग दिखावैं। अधिक अंग जो होय हिये तौ भगिनी हारि ये जावैं ॥ कोउ कह सुनहु बात बिसराई कहा कहसि ये ठावैं। शृंगीब्याह ऋषिसंग कुलहु कि गईते अब किमि आवैं ॥ ये बालक निज बात न जानत हँसि हमसों कहवावैं। मृदुमुसक्याय लषण सुनिबोले ये बहुबात बनावैं ॥ असकहुं सुनी न देखी ये जस बचन बिदग्धाभावैं। बिश्वनाथ कहि बाल परीक्षा बिनहु उछाह बढ़ावैं १ कोउ कहे राम सुमित्रा मित्रहि तुम तो जानत ह्वैहो। बिना बताये लाल इतैते अबतो जान न पैहो॥ रिपुहन हँसिबोले कलभनके कुंभचोरि हियलाये। जात कबैं बिन अब इनमहँ हरि तीक्षण नखन लगाये॥ भरत भन्यो इनकी अछूट अति भुजनपासहै भाई। करिय कहां जो फाँसि ताहि मैं राखहिं उरहि लगाई ॥ अपनैगो नहिं धाय मिली संग लगिहैं गवन जो कीनै। हेरि हँसी कह विश्वनाथ मनमोहन मंत्रैदीनै२॥

श्रीतुलसी०बरवै ॥ गरबकरहु रघुनन्दन जनि मनमाँह। देखहु आपनि मूरति सियकै छाँह ॥

प्रियाशरणकृतछप्पै ॥ चली हासकी बयन लाल तुमकाकेजाये। कौशल्याहैं गौर राय पुनि गौर सुहाये ॥ तुमको देखत श्याम ताहिते शंका आई। लक्ष्मण काहे गौर श्याम तुम देहु बुझाई॥ मातु पिता अनुरूप जग पुत्री पुत्र सोहातहै। मातु पिता तव गौर हैं यह परपंच देखातहै ॥ यहां उरमिला श्याम राम कहि मृदुमुसकाने। सुनहु कुवँरि अब श्याम हेतु हमसत्य बखाने॥ है शृंगारको श्याम रंग शिंगाररूप हम। ताते मेरो अंग श्याम छबिधाम काम सम॥निध्या तबबोलतभई है पररव पुनि गौरको

श्याम जहां मोहिरहे तुम आये इत दौरको ॥ दोहा ॥ सुनहु सुमन मकरंद हित मधुपहि कौन बोलाई। भ्रमर आपुते आवहिं जहँ सुगंधरसछाई ॥ सुनि सरहज हँसि मर्मको हियमें भयो अनंद। सबके मन अति मोद भइ ताकति मुख रघुनंद ॥

बिश्व०पद ॥ पुनि सब कुवँर कलेऊ कीन्हे। स्वाद सराहि बिबिध पकवानन अचय अचय मुख बीरिन दीन्हे ॥ पाय सासुको भूरिभाँतिधन तुरंग नचावत डेरहि आये। बिश्वनाथ बैठे भूपति ढिग बनरा सकल गायकन गाये ॥ जीवैं चारयो राजदुलारे बनरा राज। सदारहत बकशत बकशिशन पुरवत गुनियन काज ॥ पीत पोशाक करकंकण शोभित शोभ समाज। बिश्वनाथ सबके मनमोहत मदनहुके शिरताज ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुनि जेंवनार भयउ बहुभांती। पठये जनक बुलाय बराती ॥

संग्रह० ॥ रहेउ दिवस बाकी यकयामा। सुंदर समय परम अभिरामा ॥

रघुराज० ॥ इतैकरी अवधेश तयारी। महल पधारन हेतु सुखारी ॥ सजे सकल सुंदररघुबंसी। जे त्रिभुवन महँ बिदितप्रशंसी ॥ चारि कुमारन भूप बोलाये। चारि उतंग मतंग चढ़ाये ॥ नाम जासु शत्रुंजय नागा। जेहि बिलोकि दिग्गज मदभागा ॥ तापर भयउ भुआल सवारा। जिमि ऐरावत शक्र उदारा ॥ दोहा ॥ राम लषण दक्षिण दिशा बाम भरत रिपुशाल। चारि चारु चामर चलत सोहत छत्र बिशाल ॥ चौपाई ॥ सजी सैन सब बजे नगारे। फहरन लगे निशान अपारे ॥ प्रतीहार बोलहिं यकओरा। मंजुल करहिं जांगरे शोरा ॥ धूरि पूरि नभ भूरि उड़ानी। चली सैन नहिं जाय बखानी ॥ पुरबासी देखन सब धाये। देखि देखि धनि धनि मुख गाये ॥ मनहुं आज आवत मुखचारी। सहित चारि लोकप सुखकारी ॥ देव समाज बिनिंदक सैना। जोहत जन जकि कढ़त न बैना। जहँ तहँ कहहिं

जनकपुरवासी । धन्य धन्य नृप अवध मवासी ॥ भई खबर महलन महँ जाई । आवत अवधनाथ नृपराई ॥ राज समाज साजि सब साजा । बैठ रहेउ बिदेह महराजा ॥ समधी आगम मनहिं बिचारी । आगूलेन चलेउ पगुधारी ॥ द्वार देश अवधेश निहारी । करगहि गजते लियेउ उतारी ॥ किये प्रणाम परस्पर दोऊ । बंदे यथा योग सब कोऊ ॥ दोहा ॥ दीनबंधु बंदे जनक सहित बंधु युत बंधु । शीलसिंधु को राम सम नागर नेह प्रबंधु ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ परत पांवड़े बसन अनूपा । सुतन समेत गवन किय भूपा ॥

तथा श्रीरीवांमहाराज श्रीरघुराजसिंहजी कृत रामस्वयंबर ॥

चौपाई ॥ सभा सदन दशरथ पगु धारे । सिंहासन यक अमल निहारे ॥ बैठेतापर भूपति दोई । दहिनेदिशि दशरथ मुदमोई ॥ कनकासन बिस्तर यक आगे । लघु राजासन ते नग लागे । तापर राम बैठ लैभाई । लक्ष्मीनिधिहि लियो बैठाई ॥ दहिने दिशि रघुबंश बिराजा । बायें दिशि निमिकुल छबि छाजा ॥ लाग्योहोन तहां नटसारा । नचनलगीं अप्सरा अपारा ॥ लागे गानकरन गंधर्वा । बाजबजाय प्रमोदित सर्वा ॥ मिथिलापुर के नरतक नाना । नचैं डगैं नहिं तालबँधाना ॥ यद्यपि किन्नर अरु गंधर्वा । परमप्रबीण अप्सरा सर्वा ॥ लेहिं तीनिग्रामनकीताना । नाच गानमहँ परमसुजाना ॥ तदपि विदेह गुणीजनदेखी । लेहिं आपनेते बरलेखी ॥ तिनहिं सराहैं बारहिंबारा । अस नहिं शक्रसदन नटसारा ॥ दोहा ॥ रामदरश हित स्वर्ग तजि चारण सिध गंधर्व । विद्याधर अरु अप्सरा आये मिथिला सर्व ॥ चौ० ॥ जनक गुणीजन कला निहारी । तजि गुणगर्ब रहे हियहारी ॥ अवधनरेशहु करी प्रशंसा । दियो भूरिधन नृपअवतंसा ॥ पै न विदेह गुणीजन लीन्हे । अनुचितजानि विनयबढ़ि कीन्हे ॥ पुनि मिथिलापति परम सुजाना । आन्योअतरदान अरु पाना ॥ नि-

जकर कंजन अतरलगायो। पुनि तांबूल सप्रेमखवायो॥ पुनि उठि रामसमीप सिधारी। अतरलगायो बदननिहारी॥ कियो रामकर जस सतकारा। तैसहि भ्रातन कियो उदारा॥ निज करपंकज पानखवायो। मरकतमणि माला पहिरायो॥ पद्मरागमणि माल बिशालै। दियो जनकनृप कोशलपालै॥ पितु सुखजानि विदेहकुमारा। किय सब रघुबंशिनव्यवहारा॥ अतर पान भूषण पटनाना। यथायोग सबही सनमाना॥ दशरथसरिस बरातिनपूजे। सबके सकलमनोरथपूजे॥ दोहा॥ शतशत गज स्यन्दन सहस दशदशसहस्र तुरंग। दियो चारिहूं कुवँरको तदपिन पूरि उमंग॥ अयुत अश्व यकसहसगज कनक सवाँरे साज। रतनजालकी पालकी दियदशरथ निमिराज॥ चौ०॥ तेहि अवसर आयो कुशकेतू। उठीसभा युगभूप समेतू॥ करि बंदन भूपतिशिरताजै। कह्योबचन पुनि भोजनकाजै॥ रघुकुल तिलक बिनयसुनिलीजै। भोजनहेत गवन अब कीजै॥ सुनि कुशकेतुबचन अवधेशा। चल्यो कुवँरयुत लै मिथिलेशा॥ चले संगसब रघुकुलबारे। भोजनकरन भवन ज्यौंनारे॥ चारि चारु चामीकर चौकी। बैठेकुवँर सुहाय समौकी॥

श्रीतुलसीदास० ॥ सादर सबके पांवपखारे। यथायोग्य पीढ़न बैठारे॥ धोये जनक अवधपति चरना। शील सनेह जाय नहिं बरना॥

रघुराज० ॥ सो जल सींचि शीश महराजा। मान्यो अपनेको कृतकाजा॥ प्रभु समीप पुनि गयउ बिदेहू। सजल नयन रोमांचित देहू॥ भरि जल भाजन सुरभित नीरा। कनकथार आगे धरि धीरा॥

श्रीतुलसी० ॥ बहुरि राम पद पंकज धोये। जे हर हृदय कमल महँ गोये॥

रघुराजसिंह० दोहा॥ जे पदपद्म पखारि बिधि भरघो कमंडलु

नीर । सोइशंकर निज शिरधरयो मेटेउ भवभयपीर ॥ चौपाई ॥ जोजलपरश करत यकबारा । तरे सगरसुत साठिहजारा ॥ कलिकल्मष बनबिटपदवारी । दुरितदवानल सावनबारी ॥ अधमउधारण कारणसोई । जेहिप्रभावलखि कलिदिय रोई ॥ सो पदकञ्ज सलिल मिथिलेशू । धरेउ शीशमहँ मिटेउकलेशू ॥ यहिबिधि प्रभुपदकंज पखारी । भरत लषण रिपुहनहुं हँकारी ॥

श्रीतुलसी० ॥ तीनोंभाइ रामसमजानी । धोये चरणजनक निजपानी ॥

रघुराजसिंह० ॥ धोयेचरण चारु सबहीके । सींच्यो सलिलसदनसब नीके ॥ तहँ लक्ष्मीनिधि अरु कुशकेतू । रघुबंशिन पद धोवनहेतू ॥ लै चामीकरभाजन पानी । रामसमान बरातिनजानी ॥ दोहा ॥ धोये रघुबंशिनचरण प्रेमप्रभावपसारि । पुनि कोशलपतिसोंकह्यो चलहुनाथ पगुधारि ॥ चौपाई ॥ अवधनाथकहँ सहित कुमारा । रघुबंशिन तिमि और अपारा ॥ भोजनमंदिर गयेलेवाई । यथायोग सबकहँ बैठाई ॥ मृदुलपटे पन्ननकेप्यारे । बैठाये तिनराजकुमारे ॥ जड़ितचंद्रमणि चौकीचारू । बैठायउ कोशलभरतारू ॥ तेहिबिधि रतनासनयकरूरो । बैठ बिदेहप्रेम परिपूरो ॥ लक्ष्मीनिधि बैठेउ ढिगरामा । कुशध्वज बैठ जनक के बामा ॥ एकओर सब बैठबराती । एकओर सब लसैं घराती ॥

श्रीतुलसी० ॥ आसन उचित सबहि नृप दीन्हे । बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥

रघुराज० ॥ रहे जिते तहँ रघुकुल बारे । दीन्हे भाजन कनक अपारे ॥ थार कटोरे कनककरोले । चिमचा प्याले परमअमोले ॥ बिबिध रतन भाजन छबिजालै । आगेधरे सु कोशलपालै ॥ तिमि मणिभाजन परम अनूपा । चारिहु बरन दिये अनुरूपा ॥

श्रीतुलसी० ॥ सादर लगे परन पनवारे । कनक कील मणि परण सवाँरे ॥

रघुराज० ॥ परुस्यो ओदन विविध प्रकारा । मोती भात सु नाम उचारा ॥ केसरि भात नाम शशिभातू । कनकभात पुनि बिमल बिभातू ॥ रजत भात पुनि ओदन कुंदा । सुघर भात प्रद अमित अनंदा ॥ अरुण पीत अरु हरितहु वरणै । ओदन बिबिध कौन कवि बरणै ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत । क्षणमहँ सबके परुसिगे चतुरसुआर बिनीत ॥ चौपाई ॥ पंच कवल करि जेंवन लागे । गारिगान सुनि अति अनुरागे ॥

रघुराज० ॥ राम बंधु युत अति अनुरागे । भोजन करन लगे सुखपागे ॥ दधि चिउरा बिदेह करलीन्हे । कोशलपति आगे धरि दीन्हे ॥ कह्यो जोरिकर तिरहुत माहीं । यातें और पदारथनाहीं ॥ और सकल रावरी बिभूती । हमरे तो यतनी करतूती ॥ हम नहिं तुमहिं जेंवावन लायक । लेहु कृपा करि रविकुल नायक ॥ कह्यो अवधपति सुनिय बिदेहू । जो करि कृपा आज तुम देहू ॥ सो सादर हम शिर धरि लेहीं । अस दाता पैहैं पुनि केहीं ॥

श्रीतुलसी० ॥ भांति अनेक परे पकवाना । सुधासरिस नहिं जायँ बखाना ॥ परुसन लगे सुआर सुजाना । व्यंजन बिबिध नाम को जाना ॥

रघुराज० ॥ मधुर तिक्त कटु अम्लकषाई । लवण सहित बहु बस्तु बनाई ॥ जे व्यंजन सुरपुर में होवैं । नाग नगर जे व्यंजन जोवैं ॥

श्रीतुलसी० ॥ चारिभांति भोजन बिधि गाई । एकएक बिधि बरणि न जाई ॥ छरस रुचिर व्यंजन बहुजाती । एक एक रस अगणित भांती ॥

रघुराजसिंह० ॥ जगस्वामिनि सिय जेहिवर राजै । बैठे जगपति

भोजन काजै ॥ तहँ व्यंजन के बिबिध बिधाना । को अस कवि जो करै बखाना ॥ जेहि बिधि परुसे दशरथ काहीं । तेहिते न्यून बरातिन नाहीं ॥ सूपकार मिथिलापति केरे । परुसि पदारथ आतुर मेरे ॥ रामरूप अवलोकन लागे । कोटिन जन्म दुरितदुख भागे ॥ इतै राम संयुत सबभाई । लक्ष्मीनिधि सों करतहँसाई ॥ कहि न सकत गुरुजनके आगे । सैनहिं हँसी करत रसपागे ॥ लक्ष्मीनिधि सों सैन चलाई । कहहिं देहु मोदक युग ल्याई ॥ देत रमानिधि उत्तरहेरे । ये मोदक कोशलपुर केरे ॥ यहि बिधि रचत अनेकन हांसी । भोजन करत कुँवर सुखरासी ॥

कृपानिवास० ॥ ॥ अनु समधी सज्जन सबसंगा । भोजन करत होत बहुरंगा ॥ कपट पाक रानी बहु करिये । दशरथ सहित सबनिको धरिये ॥ ऊपरि सुभग माहिं चतुराई । पावत कला सकल उघराई ॥ हँसत सतानँद कहि रुचिपइये । समधिनिकी मिजमानी लहिये ॥ दोहा ॥ मगन उघारत हरषबश करन परख मुख डारि । गृहयुवतिन की सीख बिन आये कहि हँसि नारि ॥

रघुराज० ॥ तहँ गारी गावनलगीं मिथिलापुरकी नारि । बाजन बिबिध बजायकै सातहु सुरन सुधारि (श्रीदशरथ महाराजको मिथिलापुर नारिन का गारीगाना) सुनिये कोशलपति भूपा । तिहरो यश जगत अनूपा ॥ धरनी महँ रही सुधन्या । अजभूपति की यककन्या ॥ तेहि भूप स्वयंबर कीन्हा । यकमुनिकहँ सो बरि लीन्हा ॥ मुनि भवन गई चलि प्यारी । जननी पितु लाज बिसारी ॥ कोउकही गाय पुनि गारी । तुव भाम होत तपधारी ॥ रघुकुल चलिआई रीती । तियलेहिं पुरुषकहँ जीती ॥ हम सुने कान बहुबारा । तुव महिषिन मीत अपारा ॥ निशिचरकी हरी कुमारी । तुमब्याहे काह बिचारी ॥ केकयी तुम्हारीरानी । तेहि नाम तासुगति जानी ॥ तुमबूढ़े अवधभुआला । किमि जनमे चारिहुलाला ॥ हम तुमघरकी गतिजानी । नहिं कौनहुलोककुकानी ॥ तिय खीरखाय सुतजनतीं । अपनोकरतब सब करतीं॥

दुइलाल श्याम दुइ गोरे। यह होत महाभ्रम मोरे॥ ऐसी हम सुनी कहानी। जब पुरुषशक्ति भैहानी॥ तब मुनितेराखतबंशा। यह रघुकुलकेरि प्रशंशा॥ अब सुनहुविनय अवधेशा। अतिलजत कहत मिथिलेशा॥ जोहोइभगिनि घरमाहीं। तौदेहुबिदेह बिबाहीं॥ हमसुनियत दशरथराऊ। तुम्हरेकुल परम प्रभाऊ॥ करिपान यज्ञको नीरा। सुतजनै पुरुष मतिधीरा॥ यहिबिधि बहुगारगिामैं। मिथिलापुरबाम ललामैं॥ तहँकहैं नारिसमुदाई। यहदीजै नेगमँगाई॥ निमिकुलके कुवँर कुवांरे॥ सब किये भरोस तिहारे॥ यकयककन्या नृपदीजै। यहअनुपम यश जग लीजै॥ अससुनत मृदुल नृपगारी। मुसक्यात लहत सुखभारी॥

रघुनाथ०चौपाई॥ सुनियत अजके सुत दशस्यंदन। दशस्यंदनके भे अजनन्दन॥ यह अवरेव परी केहिभांती। समुझिपरत अस सकल बराती॥

श्रीतुलसी०॥ जेंवत देहिं मधुरधुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी॥ समय सुहावनि गारिविराजा। हँसत राउसुनि सहित समाजा॥

रघुराज०दोहा॥ मंद मंद भोजनकरत सुनि सुनि गारीराय। कुवँर उतर कछु देतनहिं दोउ नृपनिकट लजाय॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ इहिविधि सबही भोजन कीन्हा। आदरसहित आचमन लीन्हा॥

रघुराज०॥ उठे सकल निमि रघुकुलबारे। उठि कुमारकर चरणपखारे॥ निजकर बीरी नृपहिंखवाये। लक्ष्मीनिधि रामहि पुनि ल्याये॥अतरलगाय खवाये बीरा। यथायोग पाये सब बीरा॥

संग्रह०॥ पुनि मंडपतरगे दोउराजा। निमिकुल रघुकुल जुरी समाजा॥ सतानंद जनकहि कहि बानी। पलिकाचार करहु सुखखानी॥ कह्योजनक मंत्रिनसों जावो। दायजसाज बेगि इतलावो॥ गये सपदि लाये स लिवाई। पृथक् पृथक् सब

धरी बनाई ॥ मिथिलापुरकी नारि हजारन । आई सीताराम निहारन ॥ अटनि झरोखनि खिरकिन नारी । बैठी बहुगावहिं मृदुगारी ॥ सुनि रानीपहँ खबरि जनाई । कुवँरिमयुत आईहरषाई ॥ संग सकल अंतहपुरबाला । गावति मंगलगति रसाला ॥ दोहा ॥ गुरुवशिष्ठ आज्ञादई पलिका बैठेउराम । तीनिबंधुबैठत भये अपने अपने ठाम ॥ सखीलाय सिय रामढिग बैठारी गँठजोरि । ऐसेहिं त्रयभ्रातानके कियो चतुरबर गोरि ॥

केशवविजयाछंद ॥ बैठेजरायजरे पलिकापर राम सिया सबको मनमोहैं । ज्योति समूहरहे मिलिकै सुरभूलिरहे बपुरा नरको हैं ॥ केशवतीनहू लोकनकी अवलोकिवृथा उपमा कबिटोहैं । शोभन सूरज मंडलमांझ मनो कमला कमलापति सोहैं ॥

संग्रह०दोहा ॥ जनक कीन्हव्यवहार सब जस आयसु मुनि दीन । दायजदीन्ह्यो अमितबिधि विनय जोरिकर कीन ॥

रघुराज०चौपाई ॥ मांगीबिदा जान जनवासे । कह्यो बचन तब जनक हुलासे ॥ केहिबिधिकहौं जानअवधेशा । जानकहत जिय होत कलेशा ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ देइपान पूजेजनक दशरथसहित समाज । जनवासे गवने मुदित सकल भूप शिरताज ॥

कबिराधाबल्लभ ॥ जनवासेमहँ आयऊ भूपति सकलबरात । बरणत दोऊनृपनकी प्रीति न लोग अघात ॥ चौपाई ॥ उततै रानी साज सजाई । जनवासेकहँ सियै पठाई ॥ महाडोलमहँ बैठि कुमारी । चढ़ि अलियां आनन छबिभारी ॥ गान निशान बजत सुखदाई । यहिबिधि सिय जनवासे आई ॥ दोहा ॥ सखियांआई अवधकी सियालेन अगवान । करि आरति लैबधुन को लाई निजअस्थान ॥ चौपाई ॥ मंगल गानकरैं बरनारी । बजत मृदंग बीन मनहारी ॥ सोये बराती सब सुखसाने । जागे प्रमुदित होतबिहाने ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ नितनूतन मंगल पुरमाहीं । निमिष सरिस दिन यामिनि जाहीं॥ बड़ेभोर भूपतिमणि जागे। याचक गुणगण गावनलागे ॥ देखि कुवँरवर बधुन समेता । किमि कहिजात मोदमन जेता ॥

संग्रह० ॥ वहां सकारे जनक नरेशा । लक्ष्मीनिधिको दीन निदेशा ॥ लाल अबै जनवास सिधावो । चारिहु कुवँरिनको लै आवो ॥ चले कुवँर दशरथपहँ आये । भगिनिनलै पुनि सदन सिधाये ॥ कुवँरिनदेखि रानि हरषाई । बलीहारिलै हृदय लगाई ॥ रानीकरती बहुतपियारा । इतैअवधपतिमनहिबिचारा ॥

श्रीतुलसी० चौपाई॥प्रातक्रियाकरिगे गुरुपाहीं। महाप्रमोद प्रेम मनमाहीं ॥ करिप्रणाम पूजाकरजोरी । बोले गिरा अमिय जनु बोरी ॥ तुम्हरीकृपा सुनिय मुनिराजा।भयउ आजु मम पूरणकाजा ॥ अब सबविप्र बुलाइ गुसांई। देहुधेनु सबभांति बनाई ॥ सुनि गुरुकरि महिपाल बड़ाई । पुनि पठये मुनिवृन्द बुलाई ॥ दोहा ॥ बामदेव अरु देवऋषि बालमीकि जाबालि । आये मुनिवर निकर तब कौशिकादि तपशालि ॥ चौपाई ॥ दण्ड प्रणाम सबहि नृप कीन्हा । पूजिसप्रेम बरासनदीन्हा ॥ चारि लक्ष बर धेनु मँगाई । काम सुरभिसम शील सुहाई ॥ सबविधि सकल अलंकृत कीन्ही । मुदित महीप ऋषिनकहँ दीन्ही ॥ करत बिनय बहुबिधि नरनाहू । लहेउ आजु जगजीवनलाहू ॥ पाइअशीश महीश अनन्दा । लियेबोलि पुनि याचक बृन्दा ॥ कनक बसनमणि हय गय स्यंदन । दियेबूझिरुचि रबिकुलनंदन ॥ चले

पढ़त गावत गुणगाथा । जय जय जय दिनकर कुल नाथा ॥ इहिविधि रामबिवाह उछाहू । सकैंनवरणि सहस मुख जाहू ॥ दोहा ॥ बारबार कौशिक चरण शीशनाइ कह राउ । यहसबसुख मुनिराजतव कृपाकटाक्षप्रभाउ ॥

संग्रहक० चौपाई ॥ जनकराज गुरु सचिव बुलाये । आयउ तब नृप हुकुम सुनाये ॥

रघुराज० ॥ आजु चतुर्थी कर्मविधाना । ताकर सब साजहु सामाना ॥ सतानंद कहँ जनक हुलासे । बर आनन पठयहु जनवासे ॥ गौतमसुत चलि अवध भुवालै । कहेउ चतुर्थीकर्महि हालै ॥ राउकह्यो ममगुरुपहँ जाहू । तिनयुत कुवँरनकहँ लैजाहू ॥ गौतमसुत बशिष्ठपहँ गयऊ । विश्वामित्रहि आनत भयऊ ॥ समाचार सब दिये सुनाई । सम्मतकीन्ह्यो दोउ मुनिराई ॥ दोहा ॥ तहँ बशिष्ठ चारिहु कुवँर लीन्हेउ आशु बोलाय । रतन जालकी पालकी दूलह लिये चढ़ाय ॥ चौपाई ॥ गाधिसुवन अरु आपहु आसु । चढ़े एकरथ सहित हुलासु ॥ पंचसहससँगराजकुमारा । छटे छबीले तुरंग सवारा ॥ अगणित परिकर विविध नकीवा । चलेसंग बोलत जयजीवा ॥ चारि चारि चामर अति चारू । करैं कुवँर शीशन संचारू ॥ राकाचन्द्र छत्र छबिछाजे । मुरछल विविध विशाल बिराजे ॥ यहिविधि चारिहु कुवँर सोहाये । जनकभूप रनिवासहि आये ॥ दूलह आवनि सुनत सुनैना । कलश साजि कामिनी सुनैना ॥ पठई मंगलहित अगुवानी । गावत चलीं सुमंगल बानी ॥ द्वारदेशमहँ दूलहलीनी । देखि महाछबि आनँदभीनी ॥ मुकुट जड़ाउ रतनके खासे । मुकत झालरैं झलक बिलासे ॥ छहरतिसुछबि छोरछ्वैछोनी । मुकतामणि माणिक ततिलोनी ॥ दोहा ॥ परे परतले कंध में जगति जवाहिर ज्योति । हीरनकी हारावली हिमकर किरणि उद्योति ॥ चौपाई ॥ लसतकंठ पन्नतके कंठे । मनुबुध बहुतरूप

धरि बैठे ॥ युगल युगल श्रुति जलज सोहाहीं । मनु उड़ श्वेत श्याम घनमाहीं ॥ भुज अंगदकरकड़े बिराजैं । मणिमंजीर कमल पद भ्राजैं ॥ चारिहुबरण अनूपम शोभा । देखि सकल नारिन मनलोभा ॥ लेहिं सकल दूलह बलिहारी । तृणका तोरहिं पलक नेवारी ॥ तहँ बशिष्ठ कौशिकमुनि आये । सतानन्दहू संग सिधाये ॥ औरहु विप्रवृन्द जुरिआये । पढ़नलगे स्वस्तैन सोहाये ॥ उतरि पालकीते बर चारी । अन्तहपुरकहँ चले सिधारी ॥ तिहि अवसर लक्ष्मीनिधिआये । मिलि कुवँरन तिनसंग सिधाये ॥ मंगलगान करत कल कामिनि । अघेदेत गवनी गजगामिनि ॥ कौशिक सतानन्द गुरुतीने । मंगलपढ़त प्रवेशहि कीने ॥ मंडपतर दूलहसब आये । मिलि सिद्धासखि मंडल भाये ॥ दोहा ॥ चारि चारु आसन अमल बैठे दूलह चार । सतानन्द कौशिकहु गुरु लगे करावन चार ॥ चौपाई ॥ गौरि गणप पूजनकरवाये । पुनि चारिहुबर बधुन बोलाये ॥ बरन बधुन मज्जन करवाये । पट भूषण नवीन पहिराये ॥ पुनि बैठाये आसन माहीं । सविधि कराये होम तहांहीं ॥ सकलचार चौथीकर कीन्हे । अन्तहपुरबासिन सुखदीन्हे ॥ तेहिअवसर आई महरानी । अपर दया वपु मनु निरमानी ॥ कह्यो मुनिनसों बचन रवराई । भयउ अशन अति काल महाई ॥ चौथीकृत्य शीघ्रकरवाई । भोजन करैं अवशि इतआई ॥ सूखिगये कुवँरनमुख कैसे । शरदा तप लहि सरसिज जैसे ॥ मुनिकह कृत्यभई विधिलाई । अशनकरावहु कुवँरन जाई ॥ लैरानी सब कुवँरनकाहीं । अशन करायो भौनहिमाहीं ॥ करि भोजन रघुकुलकर चंदा । बैठेउआय सभा सानंदा ॥ तहां सिद्धिलै सखिन सिधारी । दीन्हेउ अतर पान सतकारी ॥ दोहा ॥ जोरि कह्योकर रामसों सुनहु प्राणपतिलाल । हमरेकुलकी रीतियह चलिआई सबकाल ॥ चौपाई ॥ चौथी छूटिजाति जेहिबारा । तेहिदिन आनँदहोत अपारा ॥ दुलहिन दूलह सरहज सारी । होरीखेलहिं रँगनडारी ॥

रामप्रियाशरण० ॥ रसमें सब लज्जा मिटिजाई । विरहहिमम संग तुमहिं दिखाई ॥

रघुराज० ॥ ताते सजहु आपहितहोरी । यह सुखदेखनकी रुचि मोरी ॥ सिद्धिबचन सुनिके सुखदाई । बोले मंजुबचन रघुराई ॥ अब जो जो तुम्हरे मनभावै । सो सो करिय न कछु रहिजावै ॥ हमहिं कहौतो बाहरजाई । होरी बसन पहिरि सबभाई ॥ नर्म सखनलै अपने संगा । आवैं करन फागुरसरंगा ॥ कही सिद्धि यह भली बिचारी । सजिआवहु करि फागुतयारी ॥ हम देखब बल सकल तिहारे । जैहौ जनवासे हठिहारे ॥ उठे राम सबबंधु समेतू । बाहरआयउ रघुकुलकेतू ॥ भवनजाय सबसखनबोलाये। होरीहोनहाल सबगाये ॥ नर्मसखासुनि भरे उमंगा । सजेश्वेत अंबर सबअंगा ॥ दोहा ॥ जनक पठाये बिबिधबिधि भूषण बसन सपेत । यथायोग बकसतभये सबकहँ रघुकुलकेत ॥ सवैया ॥ मंडित हीरनतेबरकीट झलाझल झालरैं मोतिनकेरी । त्योंझलकैं हलकैं हियहीरन हार हिमाचलकी छबिफेरी ॥ राजतके जरतारिबने बरबागे चमाचम चारुता ढेरी । श्रीरघुराजकी माधुरी मूरति कोकोहियो हरिजातन हेरी ॥ फेंटेंकसे कटि में चटकीले मजीले महीपललाहैं अनोखे । चौलड़ेत्यों मुकताहल माल सुतारावली छबिछीने अदोखे ॥ खेलनफागु सजे रघुराज सुराजकुमार महा चितचोखे । अंगनअंग उमंगभरे जिनजोहत होत अनंगकेधोखे ॥ दोहा ॥ होरी मंदिरमेंउतै सिद्धिसजाई साज । लै सीता संगगवनकिय संयुत सखिनसमाज ॥

रामप्रियाश० ॥ पुरनारीसब महलकी चढ़ीअटारिन जाय । चतुरदिशा बैठतिभई खिरकीदई खोलाय ॥

रघुराजसिंह०सवैया ॥ परिचारिनी चारि कही चलिकै सबखेलनहोरी तयारीभई । पगधारिये फागु निवास लला दरशाइये तौ निपुणाई नई ॥ सुनती नटनागरी रावरेकी नटनागरीठाढ़ी उछाहछई । रघुराजजू ठाढ़ेइतै चकितै बिनहारही हारक्यों मानि

लई ॥ सो सहचारिनीकी सुनि बानिदियो हरिहेरि हरेमुसक्या-ई । कोई सुजान सखाकह्यो नर्म कहूं रघुबंशिन हारनपाई ॥ तूं कहैकैसे वृथा अरीबैन इतै पिचकारिनकी झरिलाई । हैंरघुराज सखाबिजयी विजयपायकै जैहैंनिशानबजाई ॥ दोहा ॥ सोसुनिकै सियसहचरी चली चतुर मुसक्याय । खबरि जनाई सिद्धि को आवतराम सभाय ॥ सवैया ॥ नर्मसखान समाजसमेत चलेरघु-नन्दन बंधुनलीने । फागुकोमंदिर चंदिरचारु चितै अतिचौंड़ोसो चौकप्रवीने ॥ ठाढ़ेभये यकओर सखानलै श्रीरघुराज महामुदभी-ने । शारद बारिदमंडलमें मनुद्वैरवि द्वैशशि भासहिकीने ॥ देखी सखीसब राजकिशोरन चित्तकेचोरनसों अनुरागी । बाजबजावन लागी अनेकन गावनलागीं धमारि सुरागी ॥ आये लला अब आयलला अब जाननपावैं सखानलैभागी । श्रीरघुराजको धाय धरौ झुँकिझारिकै झोरिन संगहिलागी ॥ तहँ गोरीकही कढ़िकै नरुकौंगी जबैलगि आपको पाइहौंना । मोहिंआनि किशोरी की कै बरजोरी बनाइहौंछोरी बचाइहौंना ॥ तुम चोरीकरी चितकी रघुराज ललाजो कहूं भगिजाइहौना । झिलिझारिकै झोरी जु-मोरौंमुखै तोसियासखी फेरि कहाइहौंना ॥ श्रीरघुराज सखानि समाजते कोई सखा कढ़ि बैनउचारो । देख्यो नहीं रघुबंशिनके अबै होरीकेहल्ले नगल्लेपसारो ॥ कोशलनाथकी सौंहकिये कहौं कोअस जो हमसे नहिंहारो । गाय बजायकै आईबजाय मचाय कै फागुन पाइहौ पारो ॥ यतनो सुनिकै सिगरी सखियां भरेकं-चनकी पिचकारिनको । सुगुलालनकी उठी मूठि चहूंकित गाय धमारिन गारिनको ॥ धनधाई धरोधरो भाषत यों रघुराज पै दै करनारिनको । हरदीकीकरी जरदी ललकारि लख्यो मिथिलापुर नारिनको ॥ घनाक्षरी ॥ आई सजि सीता सेत भूषण बसन सेत संगकी सहेली सेत सेत सुखमाछई । श्वेत पागे श्वेतबागे सेत कटिफेंटे लागे रघुराजप्यारे आये फागुकेउमंगई ॥ होरीहोरीकरि ललकारि हल्लाकियो हेरि चलीपिचकारी त्यों अबीरकी अंधयार

ई । लाललाल ललीलाल सखालाल सखीलाल अंगलाल रंग लाल लालमयी ह्वैगई ॥

बिश्वनाथ० पद होरी ॥ कोउ सखी कही हास मृदु कीन्हे । कोउ नहिं जीतिहैं इनतैं यहतौ लाजहि तीहि तिलांजुलि कीन्हे ॥ राम कह्यो जिन संग चतुरई मूलहि कहि कहि कविगण गावैं । पुनि हौं सहन शील अति कामिनि हम बालक जयकिमि करि पावैं ॥ इमि करि हास बिलास परसपर लालन लली गुलालन मेलैं । अरुण अकाश भयो तेहि अवसर प्रगटि मनहु अनुरागहि खेलैं ॥ परम सुछबिछाई चहुंओरन बरषत सुमन सहस मुख दरसैं । रसनायक बिशुनाथ कहैं किमि रसनायक जैसोहत हरसैं ॥

रघुराज० कबित्तरूप घनाक्षरी ॥ मणि अंगनाई मध्य मंडितमढ़ी है फागु राजती रंगीली रही लीला रस लूटि लूटि । कुंकुमानि कुंकुम गुलाल घनसार मेले कंचन कलशनवामैं रंगजूटि जूटि ॥ रघुराज माणिक प्रवाल हीर मोती मंजु छहरैं छमामें छायछोरनसे छूटि छूटि । सुंदरी सुकिन्नरीसी उर्वसी परीसी हेमबल्लरी सी व्योमते परी हैं मनो टूटि टूटि ॥ मुरज मृदंग ढोल बांसुरी सुरीली बाजैं गाय रहीं गानवारी तानके तरेरी में । ह्वैगईझिलाझिली मिला मिलीं सखी सखान चमक चहूंधाभई बादलेकी ढेरी में ॥ सहजा सहज सहजोरी करि रघुराज देख्यो जोन बनत बनावत चितेरी में । धोखे धोखे धसि धसि धायकै सुरोरी धुरि धरे रघुबीरको अबीरकी अँधेरी में ॥ वारिकै अनेकन अनंग छबि रघुराज आनँद उमंगनसों अंगन जमकिगै । एक करकंज सों करषि कटिफेंटो चट दूजे करकंज कर करिकै तमकिगै ॥ कौशलेश कुवँर कहूं न जानपैहौ भागि भागमानि बानि बोलि दर्पसों दमकिगै । छायकै छटाको श्याम घनकी घटामें मनो चरचि चरित्र चारु चपला चमकिगै ॥ दोहा ॥ सहजा सहजोरी करी होरी में ललकारि । बरजोरी रोरीमलत राम छुटे झिझ-

कारि ॥ चलत भनत मस मुख भनत एहो राजकिशोर। करसों छूटे का भयो छुटे न चित चितचोर ॥ कवित्त ॥ छूटे सहजासे राम देखिकैं सिधारी सिद्धि सियते सहित लैके सखिन समाज है। इतै धाये चारों बंधु सखनके वृन्द लीन्हे छायगो गुलाल नभ मंडल दराज है ॥ बादलेकी ह्वैगई बसुंधरा बिराजमान आसमान भरी गान बाजन अवाज है। सखा गहिलेवैं सखी सखी गहिलेवैं सखा भ्रातन समेत फूले फिरैं रघुराज है ॥ राच्यो महा फागुरंग केसरिको कीच माच्यो अगर तगर धूरि पूरी चहुंओरी है। छहरैं सुछोनी सुम मल्लिका धमल्लिनते चमकैं सुचामीकर बल्लरीसी गोरी है ॥ चलैं पिचकारी त्यों सुगंधभरी बारी बैस सखन सखीन बराबर बरजोरी है। फटिक फरश खेलैं फागु अनुराग भरे कौशल किशोर मिथिलेशकी किशोरी है ॥ सहित गुलाल रोरी बादलेकी मूठि मारि लालकै सखनमुख कहूं भिलि आवैंहैं। काशमीर रंगन चलाय पिचकारी चारुराजदुलहेटे कसिफेंटे वै हटावैं हैं ॥ चातुरी चमकि चपलासी करि चातुरीको आतुरीसों पकरि सखान लैजावैंहैं। नारीको बनायवेष बेंदीदैके छोरिकेश रघुराज कौशलेश कुवँरै देखावैं हैं ॥

रसरंगसखी० पद ॥ रसरंग उमंग रँगी सिगरी अगरी गुण रूप उजागरियां। झपटैं लपटैं पियको डपटैं मिथिलाकी बांकी नागरियां ॥ दृगबान चले पियमान दले न हलें छबि प्यासी सागरियां। मुख चूमि भगे सिय संग लगे टपके रँग चूनरि चादरियां ॥ प्यारी दृग सैनदई हँसिकै दौरी लैलै रंग गागरियां। ज्ञानाअलि अंसन बांह धरे रँगबोरि दिये पिय पागरियां ॥

बिश्वनाथसिंह० पदहोरी ॥ नव किशोर औ नवलकिशोरी ॥ खेलत झुरमुट करि तेहि अवसर। छीनि एक पिचकार राम चहुं ओर चलाय चंदन धारवर ॥ पट लपटाने कुचदरशाने मनहुं फटिक मंदिरन बिपुल हर। कह्यो लषण बिनपट सीव बिचरहि निजहि ढिठाई किय अपलतर ॥ कोउ कह परम चतुर

ये ढोटा नृप कुँवरनके सार मंजुतर । हरि कह सरहज तुमकहँ पावहु बात बनावहु लगन हेतगर ॥ कोउ कह तुमते बातको जितिहै अवध बामबश किये यों सुघर । बिश्वनाथ कह लषण चतुर तुम हरहु चित्त परपुरुषहुकर १ खेलहिं कुँवरन सँग सुकुमारी । गाय गाय गारी नारी सब रंग भरी छोडैं पिचकारी ॥ लालनकी गुलालकी मूठिन ओढ़ि ओढ़ि मुखसारी । बिश्वनाथ हरि लपटि लगावत मुखगुलाल पावहिं मुदभारी २ ॥

रघुराजसिंह० कवित्त ॥ अवध किशोर चितचोर चारों ओर धाय रोरी झोरी झोर मोरि सखिन समाजको । घेरि घेरि गोरिनको गेरि गेरि कुंडनमें बोरि बोरि रंगन बजाय बेस बाजको ॥ हँसि हँसि हुलसि हुलसि होरी होरी कहि हेलिन हराय हेरि हरषि दराजको । मसलि गुलाल करि लाल मुखमाल छीनि बालन को छोडते देखाय रघुराजको ॥ सियते समेतसिद्धि हरि हार हेलिनकी होरी होरी कहि कियो हल्ल चहुंओरते । मारि पिचकारिन उड़ायकै गुलालछलाल घेरि लीन्हें चारों लाल बालमाल जोरते ॥ सिद्धिजू सहर्षकरि बर्ष कुसुमावलिको अतिउतकर्षकह्यो कौशलकिशोरते । रघुराज लाल आज बालको बनाय वेष हाहाको खवाय छोडिहौंजू यहि ठोरते ॥ सिद्धि पाणिपंकज पकरि कर रघुराज लषग ललाको गह्योसीय बरजोरीसों । मांडवी त्यों उर्मिलागहे हैं शत्रुशालजूको खडी श्रुतिकीरति बिचारि नहिं जोरीसों ॥ सहजा बिशाखा चन्द्रकला चटकीली चट भरतभुजान गहिलीन्हें नहिं चोरीसों । चमकिचलीं ते चारिकुँवर लेवायगाय बानक बनाइहैं बिषेबिबर गोरीसों ॥ एक एकसखनको द्वैद्वैसखी गहैंधाय लैचलीं सुचाय भरी गारीसुख गायगाय । राम चारोंभाइनको सखन सहाइनको करन लोगाइनको वेष मनमाहैंल्याय ॥ चामिकर चौकिनमेंचारयो चितचोरनको सिद्धिबैठाइ नैनकज्जल दियेलगाय । फबित प्रफुल्लित सुशारद सरोजनमें बैठी रघुराज मनो अलिअवलीहै

भाय ॥ रघुलाल भालमें दियेहैं टिकुली बिशाल मानो किये पं-
कमें मयंकलै भवनिजात । घेरदार घांघरो नवीन जरतारी सारी
रची रुचि कंचुकीदेखाय मुखमुसक्यात ॥ दामिनीसी दामिनी
सुभामिनी सवांरिशीश कहतीं कुवँरहोत कामिनीके क्योंलजात।
तबलोंन छूटोगे छबीलेछैल रघुराज जबलों गहौगेनहिं सीयपद
जलजात ॥ सोरठा ॥ प्रभुबोले मुसकाय जानिपरी यहरीतिइत ।
सुताब्याहि सुखछाय बहुरि पुरुषको तियरचहु ॥ चौपाई ॥ यहि
बिधि फागुसरस सुखभयऊ । हास बिलास हुलासहि छयऊ ॥
मांगि बिदा प्रभु सिविर सिधाये । सखन बंधुयुत राम नहाये ॥
बदलिबसन पितुसभा सिधारे । सुखीभये नृपकुवँर निहारे ॥पि-
तुहिबंदि बैठे सबभाई । अस्ताचलहि गये दिनराई ॥ कह्यो भूप
तब अतिसुखछाई । संध्याकरहुजाय सबभाई ॥ परयो परिश्रम
खेलतहरदी । मुखपर देखिपरतहै जरदी ॥ करहुअशन करि शैन
सकारे । बहुतनिशा बीतैनहिंप्यारे ॥ पितुशासनसुनि उठेकुमारे।
संध्याकर्म सकल निरधारे ॥ सखन बंधुलै किये बियारी । किये
शयन निजअयन सिधारी॥ जानिसमय तजिसभा नरेशा । किये
शयन शुचि सुमिरिरमेशा ॥ कियेशयन सब सुखीबराती। बरणि
जनककीरति न सिराती ॥ नहिं बिसंचकर खोजहु खोजे । मते
महामोदहि जनमोजे ॥ दोहा ॥ रघुपति ब्याहउछाहमें बीते बहु
दिनरैन । जानिपरे क्षणएकसम पाय महा चितचैन ॥ चौपाई ॥
नितप्रति कुवँरजाहिं रनिवासा । होत महासुख हास बिलासा ॥
नितप्रति मिथिलानगर भुआरा । करहिं नवीन राजसतकारा ॥
भूलेउअवध बरातिनकाहीं । कहहिं जाब मिथिलातेनाहीं ॥ यहि
बिधि बीतिगये बहुकाला । नितनित नवनव मोदबिशाला ॥

कृपानिवास० ॥ दशरथ दानपुण्य नितकरई । राम सिया सुख
हित आचरई ॥ भोजन अनु नृप धेनुदानकर । पूजि महामुनि
पाय मानबर ॥ हय गय स्यंदन साजसमेता । नट भाटनको देत
सहेता ॥ गणिका गुणी रीझ नितपावैं । सुरपति धनपति देखि

लजावैं ॥ तथा जनक नित दान मानकरि । राम जानकी हेत हृदयभरि ॥

रघुराज० ॥ कोकहिसकै समय उछाहू । इतैजनक उत कोशल नाहू ॥ जहँ त्रिभुवनपति दूलह भयऊ । दुलहिनि रमा महा सुखछयऊ ॥

संग्रहकर०दोहा ॥ सीतारामबिवाहको मंगल मोदअपार । गिरा गणप नहिंकहिसकैं कोकविपावैपार ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारविरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलसत्रहवांप्रकरणसमाप्तः १७ ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामविवाहसंग्रह ॥

अठारहवांप्रकरण ॥

श्रीजनक महाराज का श्रीजानकीजूको तीनों भगिनिन सहित बिदाकरना जनकपुरसे अवधको ॥

रघुराजसिंह०दोहा ॥ बर्णत नेकहु करुणरस मोहिंन होत उछाह । पै प्रसंगबश कहत कछु सीय बिदा दुखमाह ॥

संग्रहक०चौपाई ॥ बिश्वामित्र अवधपुर आये । राम लषण को गये लिवाये ॥ तबते रामकि अतिअवसेरी । करति राति दिन तीय घनेरी ॥

कृपानिवास० ॥ अवध नारिका प्रीति बिशाला । कछु मिथिलाते अधिक रसाला ॥ यत्र अधिक प्रभु प्रीति बिचारैं । तत्रखिंचैं मन शीघ्र पधारैं ॥ जबते राम पधारे मिथिला । तबते अवध सखी चित शिथिला ॥ निशिबासर प्रभु बिरह बढ़ावैं । अनल ताप तनतूल जरावैं ॥ श्वासानल बल हाय लपटउठ । लोचन द्रवत सुभीग सलिलपट ॥ सुधकें निपट जरन नहिं पावैं । हाहा करि दिन रैन बिहावैं ॥ बदति परस्पर बचन रसाला । राम प्रेममूरति सबबाला ॥ भो सखिनो मन प्राण चुराये । रसिक चोर सत फेरनआये ॥ मिथिलाबासि बिद्या बर नारी । चतुरी टोना परबशकारी ॥ भोरे लाल भुराये बाला । परे पिंजरे करे